पंद्रह रुपए

वर्ष : 2 अंक : 20
बृहस्पतिवार, 07 जुलाई, 2022

RNI-UPHIN/2021/79954

खुले दिमाग़ के खुले विचार

ओपन डोर

राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार–पत्र

राष्ट्रभक्ति गीत विशेषांक

आजादी का 75 अमृत महोत्सव

हम गाएंगे तराने आज़ादी के

आवरण : अक्षि त्यागी

प्रकाशनाधीन

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क

9897742814

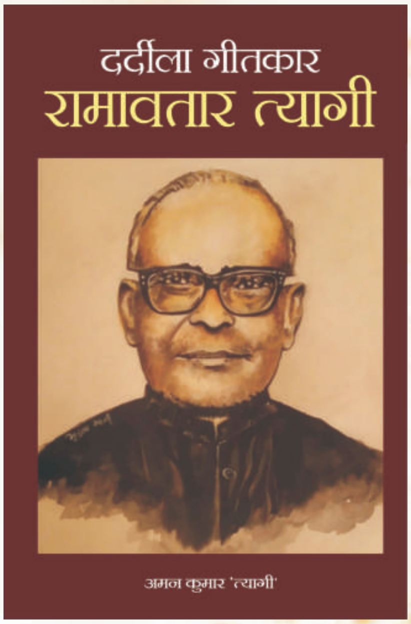

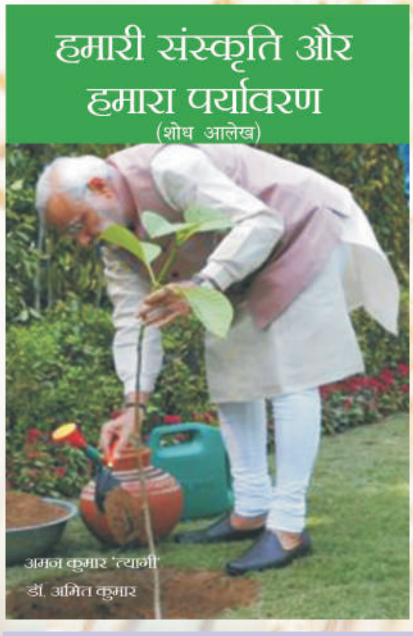

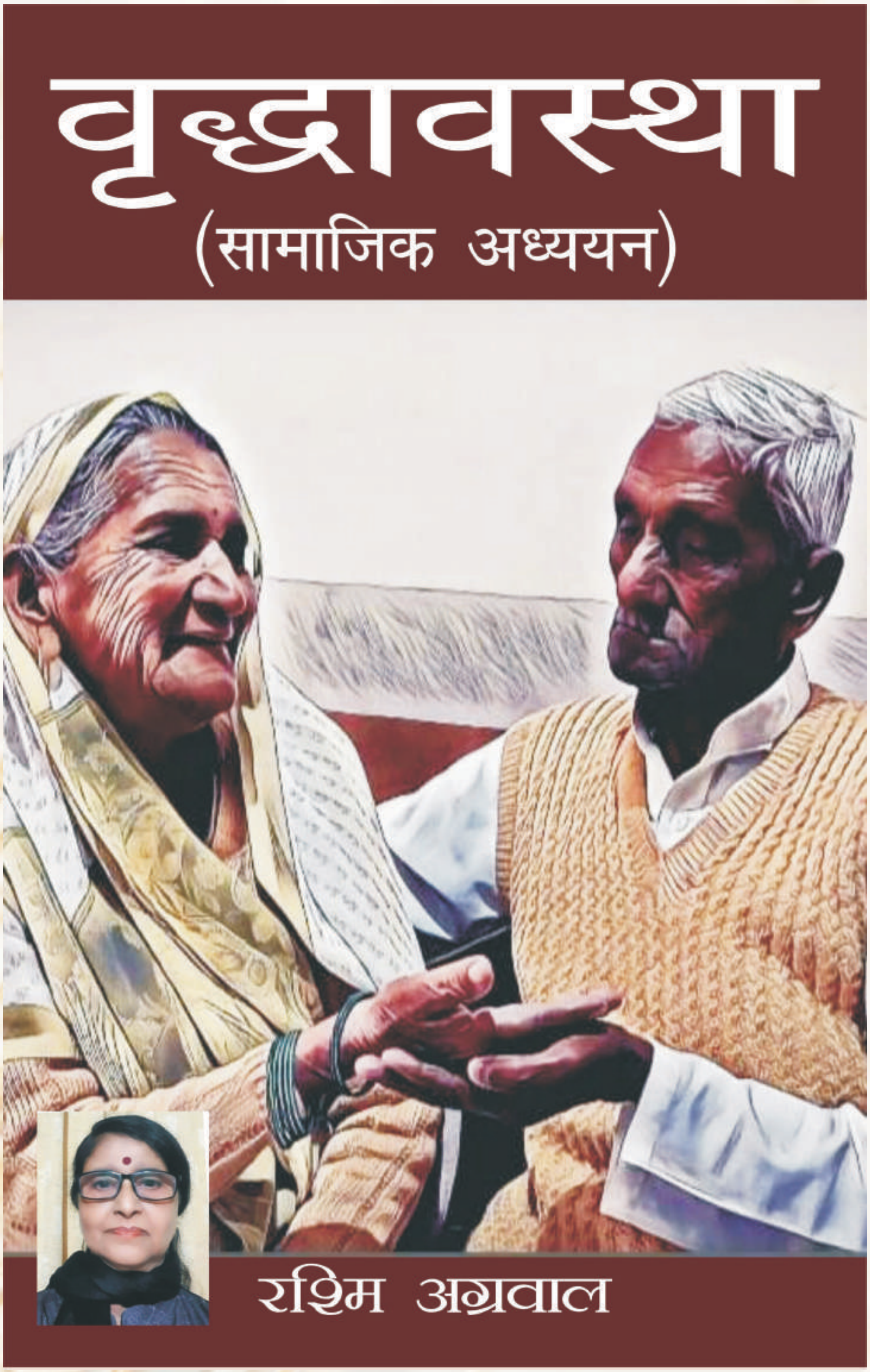

स्थापना 14 फरवरी, 2021 Title-Code-UPHIN49431/RNI-UPHIN/2021/79954/MSME-UDYAM-UP-17-0002703

रजिस्टर्ड 08 जुलाई, 2021

YouTube OPEN DOOR NEWS ओपन डोर Blog-opendoorweekly.blogspot.com

आपकी किताब आपके द्वार...

प्रकाशन ओपन डोर नजीबाबाद

समाचारपत्र भी पुस्तकें भी

खुले दिमाग के खुले विचार ओपन डोर राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

रजि. पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र

Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD AC- 368602000000245/ IFSC- IOBA0003686 PAN- AABAO7251R

Email- opendoornbd@gmail.com / Mob.- 9897742814

पंद्रह रुपए
RNI-UPHIN/2021/79954
खुले दिमाग़ के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र
वर्ष : २ अंक : २० बृहस्पतिवार, ०७ जुलाई,२०२२

संपादक
अमन कुमार 'त्यागी'
9897742814
amankumarnbd@gmail.com

प्रबंध संपादक
सौरभ भारद्वाज

प्रतिनिधि
डॉ. सुशील कुमार त्यागी 'अमित' (हरिद्वार)
उपेन्द्र सिंह (दिल्ली)
अर्चना राज चौबे (नागपुर)
निधि मिथिल (सतारा)
अतुल शर्मा (मेरठ)

कार्यालय प्रमुख
तन्मय त्यागी

सदस्यता प्राप्त करें
एक साल १००० रुपए, दो साल १६०० रुपए
पांच साल ४८०० रुपए
अंक प्रकाशित न होने की दशा में पीडीएफ मिलेगी

भुगतान करें
Ac- Name - OPEN DOOR, Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch-NAJIBABAD, AC- 368602000000245, IFSC-IOBA0003686 PAN-AABAO7251R

संपादकीय कार्यालय- साई एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद- २४६७६३ बिजनौर (उप्र)

वैधानिक- समाचार-पत्र में प्रकाशित किसी भी सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी लेख/समाचार/कविता/कहानी/विज्ञापन आदि के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र नजीबाबाद होगा।

सभी पद अवैतनिक हैं
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अमन कुमार द्वारा आशीष प्रिंटर्स, मोहल्ला मकबरा, नजीबाबाद, बिजनौर से मुद्रित तथा ए-7, आदर्श नगर (तातारपुर लालू), नजीबाबाद-246763 जिला बिजनौर (उ.प्र.) से प्रकाशित।
संपादक-अमन कुमार
मोबाईल नं. 9897742814
Email-opendoornbd@gmail.com
RNI-UPHIN/2021/79954

MSME-UDYAM-UP-17-0002703

संपादकीय

नई ऊर्जा देते हैं राष्ट्रगीत

प्रिय पाठकगण एवं लेखकगण,
'ओपन डोर' का लघुकथा विशेषांक (०७ जून, २०२२) अंक प्रकाशित किया गया था। जिसके परिणाम कहानीकारों के निर्णय के आधार पर इस प्रकार घोषित कर दिए गए हैं। जिनमें प्रथम स्थान पर रही डॉ. रंजना जायसवाल जिनकी 'बुलडोजर' कहानी को सर्वाधिक पसंद किया गया। द्वितीय स्थान पर रहे डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा तथा तृतीय स्थान पर डॉ. जया आनंद एवं विनोद कुमार 'विक्की' रहे। 'ओपन डोर' (साप्ताहिक समाचार पत्र) ने सभी विजेताओं एवं प्रतिभागियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ आशा व्यक्त की कि आगामी आयोजन में भी लेखकगण सहयोग करते रहेंगे। सभी विजेताओं को नियमानुसार धनराशि का चैक, सम्मान पत्र तथा सभी प्रतिभागियों को प्रतिभाग सम्मान पत्र समयानुसार प्रेषित कर दिया जाएगा। इसी के साथ हमारा प्रस्तुत अंक 'राष्ट्रभक्ति गीत' विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। यह भी एक प्रतियोगी अंक है जिसके परिणाम की घोषणा आगामी ०७ अगस्त, २०२२ के 'वृद्धावस्था की लघुकथाएं' विशेषांक में कर दी जाएगी। 'ओपन डोर' प्रत्येक माह के ०७ तारीख़ को प्रकाशित होने वाले अंक को प्रतियोगी अंक बनाने की दिशा में क़दम उठा रहा है। जो उत्कृष्ट साहित्य के लिए एक आवश्यक क़दम माना जा रहा है। पारदर्शिता बनाए रखने के लिए प्रतियोगिताओं के परिणाम भी लेखक के निर्णय के आधार पर रखा गया है। जिसमें लेखक अपनी रचनाओं को छोड़कर अन्य रचनाओं में से श्रेष्ठता के आधार पर तीन रचनाओं का चयन कर संपादक मंडल को अवगत कराते हैं। लेखक का निर्णय आ जाने के बाद ही संपादक मंडल विजेताओं की घोषणा करता है। हालांकि कई विद्वानों का मत है कि विशेषज्ञों से इस प्रतियोगिता का निर्णय कराया जाए मगर ऐसा करने से कहीं न कहीं पक्षपात होने की संभावना बनी रहेगी। और सही निर्णय लेने में परेशानी खड़ी हो जाएगी जबकि लेखक स्वयं के द्वारा सभी रचनाओं को पढ़कर निर्णय देने से यह लाभ होता है कि एक तो वह अन्य लेखक की रचनाओं को पढ़ लेते हैं दूसरे उन्हें निर्णय लेने में अधिक कठिनाई भी नहीं होती है। बहरहाल यह रचनाकारों के प्रोत्साहन के लिए एक आयोजन मात्र है। ताकि सोशल मीडिया के इस आधुनिक युग में अच्छे साहित्य के दर्शन भी उपलब्ध हो सकें।
हमारे इस आयोजन में यदि कोई संस्था या व्यक्ति सहयोग करना चाहता है तो 'ओपन डोर' उनका स्वागत करेगा।
यह अंक आप सुधी पाठकों को कैसा लगा? अपनी राय से अवश्य अवगत कराएंगे।
धन्यवाद

संपादक
अमन कुमार
९८९७७४२८१४

अंदर के पन्नों पर

17 प्रो. ऋषभदेव शर्मा की तपस्या का फल है 'धूप के अक्षर' : रमेश पौखरियाल निशंक

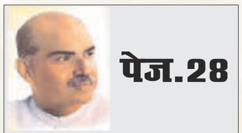

ओपन डोर (लघुकथा विशेषांक) के विजेताओं की घोषणा पेज.33

लोकतंत्र की न्यायसंगत चिंता

भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति एन वी रमणा ने न्याय व्यवस्था की पीड़ा को प्रकट करते हुए, राजनैतिक दलों पर सही ही कटाक्ष किया है। संविधान की आत्मा को बचाए रखने की जिम्मेदारी जिस संस्था पर है, ये दल चाहते हैं कि वह इनके एजेंडे पर चले। तनिक सी प्रतिकूल टिप्पणी होते ही कोई एक पार्टी इसे इशारों इशारों में अनधिकार चेष्टा साबित करते हुए लक्ष्मण रेखा का पाठ पढ़ाने लगती है, तो कभी कोई दूसरी पार्टी संस्था की स्वतंत्रता पर ही संदेह करने लगती है। यदि लोकतंत्र है, तो न्याय का शासन जरूरी है और इसके लिए उसका दबाव से मुक्त रहना अनिवार्य। इसीलिए तो भारत के संविधान निर्माताओं ने विधान को बदलने की ताकत संसद को देने के बावजूद, उसकी विवेचना और व्याख्या का अधिकार न्यायपालिका को दे रखा है। लेकिन जैसा कि मुख्य न्यायाधीश ने कहा है, एक तरफ सत्ता में बैठे राजनीतिक दल मानते हैं कि न्यायपालिका को उनके हर सरकारी फैसले का समर्थन करना चाहिए और दूसरी तरफ विपक्षी दल चाहते हैं कि न्यायपालिका उनके राजनीतिक एजेंडे को आगे बढ़ाने का काम करे। कहना न होगा कि ये दोनों ही स्थितियाँ काम्य नहीं हैं। और अगर ऐसा होता है, तो उसे लोकतंत्र की सेहत के लिए अच्छा नहीं कहा जा सकता। सत्ता पक्ष और प्रतिपक्ष दोनों ही के लिए इसे एक कड़े संदेश के रूप में लिया जा सकता है कि न्यायपालिका एकदम स्वतंत्र है और वह केवल संविधान के प्रति जवाबदेह है!

गौरतलब है कि न्यायमूर्ति रमणा ने अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को में 'एसोसिएशन आफ इंडियन अमेरिकन्स' द्वारा आयोजित एक सम्मान समारोह में इस बात पर अफसोस प्रकट किया कि आजादी के ७५ वर्ष बाद भी हमने अभी तक संविधान द्वारा प्रत्येक संस्थान को मिली भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को पूरा करना नहीं सीखा है। उम्मीद की जानी चाहिए कि इस आलोचना को सकारात्मक रूप में लेते हुए विभिन्न राजनैतिक दल संवैधानिक संस्थाओं को अपनी सियासत चमकाने या अपना पिछलग्गू बनाने की मानसिकता से छुटकारा पाने के बारे में सोचेंगे। उन्हें संविधान की साधारण प्रतिज्ञाओं के मर्म को आत्मसात करने की जरूरत है, क्योंकि संविधान के बारे में लोगों के बीच उचित समझ के अभाव में ही यह गलत सोच पनपती है। राजनैतिक दलों की गलत सोच का परिणाम है कि लोग न्यायपालिका की निष्पक्षता पर शक करने लगे हैं! इस स्थिति के लिए वे ताकतें जिम्मेदार हैं, जिनका एकमात्र उद्देश्य स्वतंत्र तंत्र यानी न्यायपालिका को नीचे गिराना है। इस संदर्भ में मुख्य न्यायाधीश महोदय की इस बात से असहमत नहीं हुआ जा सकता कि संविधान में परिकल्पित नियंत्रण और संतुलन को लागू करने के लिए, हमें भारत में संवैधानिक संस्कृति को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इसके लिए जरूरी है कि लोकतंत्र में व्यक्तियों और संस्थानों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के बारे में जागरूकता बढ़ाई जाए। आजादी के अमृत वर्ष में अगर इस जागरूकता का भी अभियान छेड़ा जाए, तो कितना अच्छा हो! कहना न होगा कि इस आलोचना का कोई न कोई सिरा देश में अलग अलग समुदायों या संप्रदायों के बीच चल रही खींचतान से भी जुड़ता है। इन समुदायों को यह समझने की जरूरत है कि लोकतंत्र में संविधान सर्वोपरि होता है और वह सब नागरिकों को प्रतिष्ठा से लेकर आस्था तक की एक समान आजादी देता है। स्वतंत्रता और समानता के साथ साथ भाईचारा भी उसका एक आधार है। इस भाईचारे को खंडित होते देखना किसी के लिए भी कष्टकर है। शायद इसीलिए न्यायमूर्ति रमणा ने यह याद दिलाना भी जरूरी समझा कि दुनिया में हर जगह विविधता को सम्मानित और पोषित करने की आवश्यकता है। उनके इस संदेश की तो प्रासंगिकता स्वयंसिद्ध ही है कि–

'हमें उन मुद्दों पर ध्यान देने की जरूरत है, जो हमें एकजुट करते हैं, न कि उन पर जो हमें बाँटते हैं।'

प्रो. ऋषभ देव शर्मा

प्रकाशन
आपकी किताब आपके द्वार...
ओपन डोर
नजीबाबाद
पुस्तक प्रकाशित कराएं

योगी के दूसरे कार्यकाल के बेहतर रहे सौ दिन

सौरभ भारद्वाज

उत्तर प्रदेश में दूसरी बार मुखिया बने योगी आदित्यनाथ के लगभग सो दिन की बात करें तो, उनकी कार्यशैली में समर्पण और ईमानदारी वैसी ही बनी हुई है जैसी कि पहली सरकार में बनी हुई थी। सरकार अच्छे परिणाम दे रही है। यह दूसरा कार्यकाल पहले कार्यकाल से बेहतर करने की दिशा में कदम बढ़ा रहा है। चुनौतियों के बावजूद सेवा, सुरक्षा और सुशासन में यह सरकार सफल रही है।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपनी दूसरी सरकार के काम को अधिक गंभीरता से संपन्न करने का प्रयास किया है। सभी मंत्रालय, विभाग, समितियां व आयोग पर मुख्यमंत्री का ध्यान रहा है। सौ दिनों का जो लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है, वह कार्यशैली की दृष्टि से श्रेणी में बेहतर की श्रेणी में ही रखा जाएगा। इन सौ दिनों सरकार ने १४०० से अधिक निवेश परियोजनाओं के लिए ८०२०४ करोड़ रुपये का रिकॉर्ड निवेश प्रदेश में करना बड़ी बात है। पहली बार बड़ी मात्रा में निवेशक उत्तर प्रदेश पहुंचे हैं। दूसरे कार्यकाल में समग्र विकास के लिए मुख्यमंत्री अथक परिश्रम कर रहे हैं। सभी महत्वाकांक्षी योजनाएं बिना किसी भेदभाव के विभिन्न वर्गों को लाभान्वित कर रही हैं। मेगा ऋण मेले के दौरान १.६० लाख हस्तशिल्पियों, कारीगरों व अन्य मझोले उद्यमियों को १६ हजार करोड़ रुपये का ऋण वितरण किया गया है। सरकार पश्चिमी उत्तर प्रदेश, पूर्वांचल, मध्य यूपी, बुंदेलखंड सभी के विकास के लिए प्रतिबद्ध नजर आ रही है। इन सभी क्षेत्रों में कई प्रस्तावित उद्योग सेक्टर निर्धारित किए हैं। जिनमें डेटा सेंटर, कृषि, सूचना एवं प्रौद्योगिकी, इन्फ्रास्ट्रक्चर, टैक्सटाइल एवं हैंडलूम, नवीनीकृत ऊर्जा, रिन्यूएबल एनर्जी, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग हाउसिंग, हेल्थकेयर, हॉस्पिटैलिटी, फूड प्रोसेसिंग, डिफेंस एयर स्पेस, शिक्षा, पशुधन, फिल्म एंड मीडिया आदि शामिल हैं। यदि ये सभी योजनाएं एक-दो सालों में लागू हो जाएं तो इन क्षेत्रों में विकास की नदियां बहने लगेंगी। स्थानीय स्तर पर अधिक लोगों को रोजगार मिलने लगेगा।

निवेशकों में दिग्गज उद्यमी अडानी ग्रुप ने सत्तर हजार करोड़ रुपए, आदित्य बिड़ला ग्रुप ने चालीस हजार करोड़ और हीरानन्दानी ग्रुप ने अगले पांच साल में हर साल १००० करोड़ रुपये के निवेश करने का वादा किया है। इन बड़े औद्योगिक घरानों का उत्तर प्रदेश में निवेश के लिए सबसे पसंदीदा स्थान बन गया है। सरकार की सुरक्षा नीतियां इन उद्योगपतियों को लुभाने में कामयाब रही है। विगत वित्तीय वर्ष में वैश्विक महामारी कोरोना के बावजूद प्रदेश के निर्यात में तीस फीसद वृद्धि दर्ज हुई थी। एमएसएमई विभाग और अमेजन के बीच हाल ही में एक मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग पर दस्तखत किए गये हैं। अमेजन के कानपुर में एक डिजिटल केंद्र का शुभारंभ हुआ है। इससे एमएसएमई और ओडीओपी इकाइयों को अपना उत्पाद बेचने में सरलता होगी। कृषि क्षेत्र में भी बेहतरीन प्रयास किए गए हैं।

मुख्यमंत्री अफसरों पर भी अधिक ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। विगत कार्यकाल में अफसरों ने खूब लापरवाही और मनमानी की थी। जिससे बहुत सी योजनाएं धरातल पर नहीं उतर पाई थीं। अब ऐसे अधिकारियों-कर्मचारियों पर नकेल कसी गई है। रणनीति के तहत सालों से अंगद का पांव बने बैठे अधिकारियों के जमावड़े को तोड़ने के लिए भी सरकार ने नियम बनाए हैं। इन नियमों से तीन साल से अधिक समय से टिके अधिकारियों को हटना ही होगा। सरकार का यह फैसला निश्चित रूप आवश्यक कदम के रूप में देखा जा रहा है। सरकार का यह कदम भ्रष्टाचार पर नकेल कसने की दिशा में उठाया गया कदम के रूप में देखा जा रहा है। पीडब्ल्यू विभाग में वर्षों से इंजीनियर अपने चहेतों को ठेके देकर रकम वसूलने के लिए टिके रहते थे।

साक्षात्कार और खबरों के चैनल को सबस्क्राइब करें

सर्च करें : ओपन डोर न्यूज

Subscribe

खुले दिमाग़ के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

ओपन डोर न्यूज यूट्यूब चैनल हेतु आवश्यकता है प्रतिनिधियों की

लाभकारी होगी बुजुर्गों के लिए रोजगार योजना उन्हें खालीपन और तनाव से बचायेगी

अशोक मधुप

बड़ी संख्या में ऐसे बुजुर्ग भी आगे आए हैं जो अपने अनुभव के आधार पर नौकरी या फिर ऐसा कोई सम्मानजनक काम चाहते हैं। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के मुताबिक देश में बुजुर्गों की बढ़ती संख्या को देखते हुए यह पूरी योजना शुरू की गई है। इन उद्योगों की ओर से दो सौ से ज्यादा नौकरियां भी निकाल दी गई हैं।

केंद्र सरकार ने देश के बुजुर्ग होते लोगों के लिए उद्योगों में रोजगार देने की दिशा में अच्छा काम किया है। इससे सेवानिवृत्ति के बाद या फिर इस उम्र को पार कर चुके देश के बुजुर्गों के हौसले को अब नई ताकत मिलेगी। ढलती उम्र में उनके व्यस्त रहने और अतिरिक्त आय होने से जीवन जीना सरल होगा। जरूरी यह भी है कि उम्र के अंतिम पड़ाव की ओर बढ़ते इन लोगों के लिए सरल और निःशुल्क उपचार की भी व्यवस्था हो।

प्रायः सेवानिवृत्त होने वाला अपने को बेकार समझने लगता है। कई व्यक्ति सेवानिवृत्त होने के बाद डिप्रेशन में आ जाते हैं। वे यह नहीं समझ पाते कि उन्होंने नौकरी को रिटायर किया है। वे रिटायर नहीं हुए। नौकरी के लिए एक आयु सीमा निर्धारित है। उस सीमा को पूरी करने पर सबको आने वाले युवाओं को नई पीढ़ी को मार्ग देना होता है। अब उनके लिए जीवन के और बहुत रास्ते हैं। सेवा के बहुत सारे क्षेत्र मौजूद हैं।

केंद्र सरकार ने सेवानिवृत्त होने वालों की परेशानी को समझा। यह माना कि सेवानिवृत्ति के बाद उनमें निराशा न आए, जीवन यापन में परेशानी न हो। इसके लिए उसने देश के उद्योगपतियों के बात की। कहा कि वह सेवानिवृत्त होने वालों के अनुभव का लाभ उठाएं। उन्हें अपने यहां सेवा में लें। उन्हें रोजगार के अवसर उपलब्ध कराएं। केंद्र सरकार की पहल के बाद दो हजार से ज्यादा उद्योगों ने बुजुर्गों को नौकरी देने के लिए ऑनलाइन रोजगार पोर्टल 'सेक्रेड' (सीनियर एबल सिटीजन्स री-एम्प्लायमेंट इन डिगनिटी) बनाया। इसका रजिस्ट्रेशन भी कराया है। बड़ी संख्या में ऐसे बुजुर्ग भी आगे आए हैं जो अपने अनुभव के आधार पर नौकरी या फिर ऐसा कोई सम्मानजनक काम चाहते हैं। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के मुताबिक देश में बुजुर्गों की बढ़ती संख्या को देखते हुए यह पूरी योजना शुरू की गई है। इन उद्योगों की ओर से दो सौ से ज्यादा नौकरियां भी निकाल दी गई हैं। ४१०० से ज्यादा बुजुर्गों ने इस पोर्टल पर जाकर नौकरियों के लिए रजिस्ट्रेशन भी कराया है। मंत्रालय की मानना है कि अभी तो शुरुआत है, जल्द ही और भी उद्योग इस ओर पहल करेंगे। उद्योग वैसे भी अनुभवी लोगों को नौकरी में प्राथमिकता देते हैं। बुजुर्गों का लंबा अनुभव उद्योगों और देश के विकास दोनों को ही गति देगा। सेवानिवृत्त व्यक्ति भी इस कार्य को वरदान मान पूरी क्षमता से कार्य करेंगे।

केंद्र का यह बहुत अच्छा कार्य है किंतु इस बढ़ती उम्र में सीनियर सिटीजन के सामने बड़ी समस्या उपचार की आती है। उनकी उम्र देखते हुए मेडिक्लेम करने वाली कुछ कंपनी उनका बीमा करना गंवारा नहीं करती। करती हैं तो बहुत मोटा प्रीमियम लेती हैं। बाद में इलाज में व्यय हुई राशि के भुगतान के लिए उन्हें तरह-तरह से परेशान करती हैं। उपचार में ज्यादा व्यय होता है। इन्होंने प्रत्येक बीमारी का अपने आप पैकेज निर्धारित कर लिया। यह पैकेज वास्तविक खर्च से बहुत कम होता है। ऐसे में उपचार पर हुआ अतिरिक्त व्यय बीमार को देना होता है। कोरोना काल के बाद तो स्वास्थ्य बीमा करने वाली कंपनियों ने अपनी प्रीमियम राशि में चार गुना तक वृद्धि कर दी। सेवानिवृत्ति के बाद जहां उनकी आय कम हो जाती है, वहीं दवा का खर्च बढ़ जाता है। गंभीर बीमारी हो जाने पर तो संकट और भीच बढ़ जाता है। इन पर हो रहे मोटे व्यय को देख इनके बच्चे भी कतराने लगते हैं। ऐसे में जरूरी है कि सरकार इन सीनियर सिटीजन के सस्ते इलाज की व्यवस्था करे। ७० से अधिक आयु के जरूरतमंद सीनियर सिटीजन को प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना में लाकर दस लाख तक के उनके निःशुल्क उपचार की व्यवस्था हो सकती है। जो जन आरोग्य योजना में नहीं आते उनके लिए कम प्रीमियम पर स्वास्थ्य बीमा किया जाए। इसके लिए सरकार सीनियर सिटीजनच के हित के लिए उनके प्रीमियम की राशि में अपना भी योगदान कर सकती है। अगर ऐसा होता है तो इनके जीवन के अंतिम पड़ाव का समय आराम और सरलता से बीत जाएगा।

नवागत एसपी बिजनौर को एमआर पाशा व वसीम ने दी गुलदस्ता देकर बधाई

जनपद के सभी थानों में दिव्यांगों को दिया जाएगा सम्मान : डॉ. दिनेश सिंह

बिजनौर। राष्ट्रीय विकलांग एसोसिएशन के संस्थापक धु राष्ट्रीय अध्यक्ष व २०२२ विधानसभा चुनाव के रहे ब्रांड एम्बेसडर एमआर पाशा व वाइस प्रेसिडेंट मौहम्मद वसीम ने बुधवार को पुलिस अधीक्षक बिजनौर कार्यालय में पहुंच कर नवागत लोकप्रिय पुलिस अधीक्षक डह दिनेश सिंह को राष्ट्रीय विकलांग एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष व २०२२ विधानसभा चुनाव के रहे ब्रांड एम्बेसडर एमआर पाशा व वाइस प्रेसिडेंट मौहम्मद वसीम ने गुलदस्ता देकर बधाई दी। लोकप्रिय पुलिस अधीक्षक दिनेश सिंह ने बधाई देने के बाद एमआर पाशा की पीठ थपथपाई और कार्य की सराहना की। राष्ट्रीय विकलांग एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष एमआर पाशा व २०२२ विधानसभा चुनाव के रहे ब्रांड एम्बेसडर ने लोकप्रिय पुलिस अधीक्षक दिनेश सिंह को दिव्यांगों की समस्याओं से अवगत कराया। पाशा ने कहा है कि दिव्यांगों का बिजनौर के हर थानों कार्यालयों में शोषण किया जाता है। तथा दिव्यांगों के साथ अभद्र व्यवहार किया जाता है। दिव्यांगों की मदद करने की बजाय उन्हें कार्यालयों से भगा दिया जाता है। नवागत लोकप्रिय पुलिस अधीक्षक दिनेश सिंह ने आश्वासन दिया है। कि जल्द ही आपकी सभी समस्याओं का निस्तारण कराया जाएगा। और मैं अपने स्तर से बिजनौर के सभी जनपद के थाना प्रभारियों व पुलिस क्षेत्रीय अधिकारियों को अवगत कराऊंगा। मैं आपसे आशा करता हूं। कि किसी भी दिव्यांग का शोषण नहीं किया जाएगा। अगर पुलिस द्वारा किसी दिव्यांग का शोषण किया जाता है। तो पुलिस अधिकारियों पर कार्यवाही की जाएगी।

गंगा घाट पर बनेगी हाट

बिजनौर। बिजनौर जल्द पर्यटन का बड़ा केंद्र बनेगा। यहां गंगा के बैराज पर घाट का विस्तार करके सौंदर्यीकरण होगा। लैंड स्केपिंग करके यहां दार्शनिक बनाया जाएगा। घाट पर हाट विकसित करेंगे। जहां स्थानीय उत्पाद उपलब्ध होंगे। घाट पर मोटर बोट से गंगा की गोद में सैर कराई जाएगी। हर शाम भव्य गंगा आरती होगी। आधा घंटे का लाइट एंड साउंड कार्यक्रम पर्यटकों को बिजनौर के स्वर्णिम इतिहास से अवगत कराएगा। हर शाम गंगा घाट पर उत्सव का माहौल होगा। बैराज से मालन नदी तक ६ किमी. लंबा साईकिल ट्रेक बनाकर बर्ड साइटिंग की जा सकेगी। विदुर कुटी पर विशाल योग केंद्र और बायोडायवर्सिटी पार्क बनेगा। बिजनौर के पर्यटन के विकास के लिए भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय के नमामि गंगा कार्यक्रम के उप सचिव धीरज जोशी के नेतृत्व में एक टीम बिजनौर पहुंची थी। जिसे महानिदेशक द्वारा विशेष रूप से भेजा गया था। इस टीम ने जिलाधिकारी और अन्य विभागों के अफसरों के साथ संयुक्त रूप से बिजनौर जनपद के प्रमुख सीलों का निरीक्षण करके वहां पर्यटक के विकास के लिए योजना तैयार की। निरीक्षण के बाद उप सचिव ने बताया कि यहां पौराणिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक और प्राकृतिक सौंदर्य की कोई कमी नहीं है। गंगा और पीली बांध की धारा में जल क्रीड़ा की अपार संभावनाएं हैं। जिलाधिकारी उमेश मिश्रा ने टीम को बताया कि विदुर कुटी का अपना ऐतिहासिक महत्व है। जिसके मुताबिक वहां काफी काम किया जा सकता है। यहां धार्मिक, सांस्कृतिक आदि विषयों की पुस्तकों से युक्त पुस्तकालय भी है। बताया कि अमानगढ़ वन क्षेत्र को पर्यटकों के विचरण के लिए जल्दी ही खोला जाएगा। यहां प्राकृतिक वन सौंदर्य के साथ-साथ वन्य जीव-जंतुओं के दर्शन की संभावनाएं भी मौजूद हैं। जिला प्रशासन तैयार करेगा प्रस्ताव जिलाधिकारी उमेश मिश्रा और नमामि गंगे की टीम ने भ्रमण के बाद बैठक की। जिसमें निर्धारित किया गया कि गंगा बैराज घाट, विदुर कुटी और कण्व आश्रम पर पर्यटन विकास के लिए संभावित कार्यों का प्रस्ताव तैयार करके जिला प्रशासन द्वारा उपलब्ध कराया जाएगा। जिसे नमामि गंगे के तहत स्वीकृत करके धनराशि जारी की जाएगी। जिलाधिकारी ने बताया कि यह प्रस्ताव जल्द भेज दिए जाएंगे। ये बनी योजना गंगा बैराज घाट-विस्तार होगा लेकिन प्राकृतिक रूप से कच्चा। सौंदर्यीकरण के साथ हाट विकसित होगी। -नौकायान, बैलूनिंग के साथ हर शाम गंगा आरती और लाइट एंड साउंड शो। किसी भी परिवार के लिए हर शाम होगा पूरी मस्ती और पिकनिक का इंतजाम। विदुर कुटी-विशाल योग केंद्र की स्थापना। बायोडायवर्सिटी पार्क की स्थापना कण्व आश्रम-गंगा बैराज से मालन नदी तक ६ किमी० लंबी साइकिल ट्रैक। वहीं पर जोन, इलैक्ट्रिक साइकिल से बर्ड साइटिंग भी होंगी।

राष्ट्रभक्ति गीत प्रतियोगिता

प्रो.शरद नारायण खरे
प्राचार्य
शासकीय जेएमसी महिला
महाविद्यालय, मंडला,
मप्र-४८१६६१
सचलभाष-९४२५४८४३८२

जलता है देश हमारा

धधक रहा है देश, आज हम भय में सारे।
नौजवान को समझाकर के, सब ही हारे।।
नीति,नियति की बातें होतीं, हिंसा फैली।
देखो तो सबकी ही चादर दिखती मैली।।
शासक दोषी, नौजवान भी, कुछ तो देख तमाशे।
दूर बैठकर चुप हो खाते, शक्कर पगे बताशे।।
देशभक्ति की बातें करते, पर लाते अँधियारे।
जलता मेरा देश, मूक हैं देखो सारे।।

आग बुझेगी कैसे अब यह, कोई तो बतलाये।
नीतिनियंता,पालनकर्ता, कोई राह सुझाये।।
आँखों से आँसू बहते हैं, लखकर यह बर्बादी।
फूँक रही है निज सम्पत्ती, नौजवान आबादी।।
अंधकार में दीप बंधुवर, कौन जलाएगा।
कौन भारती के बेटे का फर्ज निभाएगा।।
देशविरोधी लोगों के तो, देखो वारे-न्यारे।
जलता मेरा देश, मूक हैं देखो सारे।।

मारकाट है, हिंसा, मातम, अवसादों ने घेरा।
उजियारा तो दूर हो गया, छाया घोर अँधेरा।।
विध्वंसक सबके मन हैं अब, भटक रहे सब।
अपने ही सारे नित हमको, खटक रहे अब।।
सबको अपना हित बस दिखता, पत्थर सारे।
आज सिसकती महफिल में बस, हैं अँधियारे।।
मंगलगान नहीं होता अब, गम बस द्वारे।
जलता मेरा देश, मूक हैं देखो सारे।।

रंगनाथ द्विवेदी
जज कालोनी, मियाँपुर,
जौनपुर-२२२००२ (यूपी)
सचलभाष-७८००८२४७५८
rangnathdubey90@gmail.com

पिंजड़े से आजादी

यूं ही नहीं मिली है ए दोस्त
गुलाम भारत के--
पिंजड़े की चिड़ियाँ को आजादी।

यूं ही नही इसके पर फड़फड़ाये
खुले आकाश----
बहुत तड़पी रोई पिंजड़े मे
इसके उड़ने की आजादी।

इसने देखा है-----
गोली सिने मे लगी
घिसटता रहा खोलने पिंजड़े को,
लेकिन खोलने से पहले दम तोड़ गया,
इस आस मे कि
मै तो न खोल सका,
पर कोई और खोलेगा
एकदिन और दुनिया देखेगी----
इस बंद पिंजड़े के
चिड़ियाँ की आजादी।

जश्न मे डुबी सुबह होगी
तिरंगे फहरेंगे,
जलिया, काकोरी, आजाद, विस्मिल की
गाथाएं होंगी,
हाँ! आँख भिगोये देखेगी
वही पिंजड़े की चिड़ियाँ,
क्योंकि
बड़ी मुश्किलो से पाई है ए 'रंग'---
इस चिड़ियाँ ने
उस पिंजड़े से आजादी।

पूजा राणा
राम गंगा विहार, फेज २,
मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश २४४००१
सचलभाष- ७३०२६००८८७

ये मेरा वतन

ये मेरा वतन
ये मेरा वतनए ये मेरा चमन
भारत को नमन, भारत को नमन।
हम प्राण न्योछावर कर देंगे,
इसकी शान नही मिटने देंगे
लहराकर तिरंगा सब बोलेंगे
भारत को नमन, भारत को नमन।

यहाँ कृष्ण जन्मभूमि मथुरा में,
और रामलला हैं अयोध्या में।
थ्हंदू मुस्लिम सब एक यहाँ
भाईचारा हैं दिलों में यहाँ।
हम रिश्ते निभाते मिलजुलकर और करतें हैं,
मिलके, बन्दन
भारत को नमन, भारत को नमन।

मेरे देश के वीर जवान यहाँ
खेतों पर खड़े किसान यहाँ ।
खेलों का तो भंडार भरा
हॉकी, क्रिकेट, फुटबॉल यहाँ
बॉर्डर पर खड़ा सैनिक देखो
कर दे क्षण भर में प्राण अर्पण ।
भारत को नमन, भारत को नमन।

मीरा के भजन, सुहाने यहाँ
ग़ालिब की ग़ज़ल के दीवाने यहाँ ।
वो सुबह बनारस, क्या खूब लगे
वो शाम अवध, अल्हा, अल्हा यहाँ ।
टैगोर की धरती, ये कहलाये
मुझे गर्व, जो मैंने यहाँ लिया हैं जन्म ।
भारत को नमन, भारत को नमन

पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग
विश्वविद्यालय, चित्रकूट उत्तर प्रदेश
सचलभाष-६३९२१६७६१३

गीत

भूलना संभव नहीं है, वीरता अशफाक की।
याद आएगी हमेशा, धीरता अशफाक की।।

देख भारत की दशा को, खून उनका खौलता।
मुक्त माता को कराना, दिल सदा यह बोलता।।
शायरी में झिलमिलाए, पीरता अशफाक की।
भूलना संभव नहीं है, वीरता अशफाक की।।

निज शपथ भूले नहीं वो, अरु न बिखरे टूटकर।
कांड काकोरी किया था, रेल से धन लूटकर।।
ज्ञात किसको है नहीं गंभीरता अशफाक की।
भूलना संभव नहीं है, वीरता अशफाक की।।

दंड फाँसी का मिला था, किंतु वो बिखरे नहीं।
साथ बिस्मिल का निभाया, फर्ज को बिसरे नहीं।।
नित्य नव बढ़ती गई फिर, यश लता अशफाक की।
भूलना संभव नहीं है, वीरता अशफाक की।।

डाल फंदा निज करो से, झूल फाँसी पर गए।
पूर्ण वो अपनी तमन्ना, सरफरोशी कर गए।।
थी रहेगी और है, अनिवार्यता अशफाक की।
भूलना संभव नहीं है, वीरता अशफाक की।।

था दिसम्बर का महीना, और तिथि उन्नीस थी।
शौक से जन्नत सिधारे, तीन कम वय तीस थी।।
गा रहे गाथा सुहानी, देवता अशफाक की।
भूलना संभव नहीं है, वीरता अशफाक की।।

निरुपमा मेहरोत्रा
MMB 1/174 sector B,
Sitapur road yojna,
Jankipuram,
Lucknow- 226021
Mob 9559513756

जय भारती

तेरी माटी में मां हम सब,
खेल कूद कर बड़े हुए,
तेरा पौष्टिक अन्न ग्रहण कर,
हष्ट पुष्ट बलवान हुए,
अब मेरी बारी मां तेरा,
कर्ज चुकाना बाकी है,
कुछ कर्ज चुकाना बाकी है,
कुछ फर्ज निभाना बाकी है।
स्वच्छ गगन हो शुद्ध वायु हो,
निर्मल जल की धारा हो,
धानी आंचल लहराता हो,
सोंधी सुगंध माटी की हो,
इन विभूतियों को सहेजकर,
रखने की मेरी बारी है,
कुछ कर्ज चुकाना बाकी है,
कुछ फर्ज निभाना बाकी है।
शुद्ध आचरण का स्वामी,
भारत का हर एक बालक हो,
देश भक्ति से भरा हुआ,
मां वंदन का मतवाला हो,
सभ्य संस्कृति को संजो कर,
रखने की मेरी बारी है,
कुछ कर्ज चुकाना बाकी है,
कुछ फर्ज निभाना बाकी है।
विश्व गुरु की पदवी पाए,
जग में तेरा मान बढ़े,
दूर गगन में जा लहराए,
'जै भारती' हर लाल कहे,
अपने तिरंगे को वहां तक,
ले जाने की मेरी बारी है,
कुछ कर्ज चुकाना बाकी है,
कुछ फर्ज निभाना बाकी है।

डॉ. मीरा भारद्वाज
ए/१० राजलोक विहार
ज्वालापुर, हरिद्वार
सचलभाष- ८०५७२१३६५०

देशभक्ति गीत

चंदन माटी मेरे देश की दिल ने यही पुकारा है।
अभिलाषा फिर जन्म यहीं लूँ भारत मुझको प्यारा है।।

बलिदानों का रंग बसंती
पुण्य धरा यह वीरों की
अमिट आज भी गाथाएँ
भगत सिंह से शेरों की
सौ-सौ बार नमन वीरों को जिसने तन मन बार है
अभिलाषा फिर जन्म..................

शान्त भाव का श्वेत समर्थक
हर मुश्किल आसान करे
तूफां कितने भी आये
डरे नहीं हम निडर रहे
अडिग आज भी डटे हैं दुश्मन को ललकारा है
अभिलाषा फिर जन्म.................

पोषक अपनी भारत माता
अन्न फूल-फल उपजाये
मिट्टी की मोहक मस्ती
ऋतुएँ बदल-बदल आयें
रंग हरा समृद्धि द्योतक यह विश्वास हमारा है
अभिलाषा फिर जन्म.................

गतिशीलता के सेनानी
अभिनव पथ अपनायेंगे
देश हमें प्राणों से प्यारा
उच्च शिखर ले जायेंगे
लिए हाथ में बढ़े तिरंगा यह संकल्प हमारा है
अभिलाषा फिर जन्म....................।

मंजरी तिवारी
गोदौलिया, वाराणसी (उप्र)
सचलभाष- ७५२३८६१९७८

पन्द्रह अगस्त

एक अगस्त जब सागर को, बिल्कुल सुखवा सकता है।
तो पन्द्रह अगस्त की बात यार, फिर कौन बता सकता है।
सदियों से सत्य अहिंसा हुई, यह पाठ पढ़ाने वाला,
तारे गृह नक्षत्र क्या, सूरज को निगलने वाला,
छोटा भारत सिंह का जब, सब दाँत गिना सकता है।
तो पन्द्रह अगस्त की बात पार, फिर कौन बता सकता है।।

देश प्रेम का प्रथम मशाल, मंगल ने जब सुलगाया,
उस मशाल को तब लेने, कुंभ सिंह आगे आया,
जब विहार का एक बूढ़ा, तूफान उठा सकता है।
तो पन्द्रह अगस्त की बात यार, फिर कौन बता सकता है।

सुलग रही थी चिंगारी, वह गंगे आजादी की,
उलटी गिनती शुरू हुई, गोरों के बर्बादी की,
एक सुभाष दुश्मन को जब, लोहे चबवा सकता है।
पन्द्रह अगस्त की बात यार, फिर कौन बता सकता है।

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण'
'वृत्तायन' ९५७ स्कीम नं. ५१ इन्दौर
पिन - ४५२००६ म.प्र.
मो. ९४२४०४४२८४, ९२६५१९६०७०
ईमेल - prankavi@gmail.com

तू कापुरुषों का पूत नहीं

चलने से पहले तय कर ले, दुर्गम पथ है अँधियारों का।
हे वीर व्रती! तब बढ़ा चरण, होगा रण भीषण वारों का।।
यह भी तय है तू जीतेगा, शासन होगा उजियारों का।
तू कापुरुषों का पूत नहीं, वंशज है अग्निकुमारों का।।
नदियाँ लावे की बहती थीं, जिनकी शुचि रक्त शिराओं में।
जो हर युग में गणनीय रहे, धू-धू करती ज्वालाओं में।।
तू उन अमरों का अमर पुत्र, आर्यों की अमर निशानी है।
तेरी नस-नस में तप्त रक्त, पानीदारों का पानी है।।
हे सूर्य अंश अब दिखा कला, कर सिद्ध शौर्य टंकारों का।
दुनिया बोलेगी जयकारे, सच बेटा था अंगारों का।।
तू कापुरुषों का पूत नहीं, वंशज है अग्निकुमारों का।।
तेरी जननी की हरी कोख, करुणा की तरल पिटारी से।
अवतरण हुआ है हे कृशानु! तेरा बुझती चिनगारी से।।
हे हुताशनी पावक सपूत! बलधर अकूत दमदारी से।
कर दानवता को भस्मभूत, अनलत्व भरी किलकारी से।।
खूँखारों की ललकारों का, सुन अट्टहास गद्दारों का।
अब सहनशक्ति से बाहर है, कर ध्वंस वंश बटमारों का।।
तू कापुरुषों का पूत नहीं, वंशज है अग्निकुमारों का।।
जो सीधे पथ के राही हैं, जिनके जीवन में मोड़ नहीं।
जिनको मरने तक जीना है, उन सबसे तेरी होड़ नहीं।।
मरकर भी नहीं मरे अब तक, जिनके साहस की जोड़ नहीं।
उनसे ही तेरी तुलना है, जिनका दुनिया में तोड़ नहीं।।
हो चुका निवेदन ज्वारों का, अब समय गया मनुहारों का।
हे अग्निपथिक संकोच त्याग, दायित्व निभा अधिकारों का।।
तू कापुरुषों का पूत नहीं, वंशज है अग्निकुमारों का।।
तोपों तीरों तलवारों का, नित नए-नए हथियारों का।
साहस की अग्नि परीक्षा का, आ गया समय जयकारों का।।
वैश्वानर के परिवारों की, प्राणाहुतिओं हुंकारों का।
तू कापुरुषों का पूत नहीं, वंशज है अग्निकुमारों का।।

(कापुरुष=कायर, कृशानु=अग्नि, हुताशनी=अग्निधर्मा, उत्सर्ग प्राण=वीर गति, वैश्वानर=अग्नि,)

दीपिका महेश्वरी सुमन (अहंकारा)
संस्थापिका- सुमन साहित्यिक परी,
नजीबाबाद-२४६७६३, बिजनौर
सचलभाष-७०६०७१४७५०

देश भक्ति गीत

कतरा कतरा बँटा देश क्यों ये मैं सह न पाऊंगी।
होते कौमी इन दंगों को मैं ही मिटा के जाऊंगी।।
मैं हूं पावन पवन सलोनी
जोशेजुनूं भर जाऊंगी,
अपनी माटी की खुशबू से
वतनोचमन महकाऊंगी।
कतरा कतरा बँटा देश क्यों ये मैं सह न पाऊंगी।
होते कौमी इन दंगों को मैं ही मिटा के जाऊंगी।।
मैं तो हूं बरसाती शबनम
प्रेम धार बरसाऊंगी,
लहराती मैं सर्द फ़िज़ा सी
वतन ए इश्क सिखलाऊंगी।
कतरा कतरा बँटा देश क्यों ये मैं सह न पाऊंगी।
होते कौमी इन दंगों को मैं ही मिटा के जाऊंगी।।
जाने कितने खंजर भोके
कितना खून बहाया है,
मैं तो हूँ बस शफा मुहब्बत
दर्दे मरहम बन जाऊंगी।
कतरा कतरा बँटा देश क्यों ये मैं सह न पाऊंगी।
होते कौमी इन दंगों को मैं ही मिटा के जाऊंगी।।

शहीद

साध्वी द्विवेदी
Beli khurd Naikiniya Tulsipur
Balrampur Uttar Pradesh India
Mob- 6386826770

षत नमन है सदा ही उनके लिए,
जो शहीद हुए हैं वतन के लिए।
गोली खाई है सीने पे,जान दे दिया,
कदम पीछे हटे न वतन के लिए।
घर में बूढ़े है बच्चे हैं उनके भी,
सबको त्याग दिया है वतन के लिए।

शत नमन है सदा ही उनके लिए,
जो शहीद हुए हैं वतन के लिए।।

होली खेली नही, दीप जले भी नहीं,
सबको भूल गए हैं, वतन के लिए।
जीरो तापमान पर भी डटे रह गए,
सरहद छोड़ा नहीं है वतन के लिए।
राखी याद नहीं, उन्हें आज भी,
बहना भूल गए है, वतन के लिए।

शत नमन है सदा ही उनके लिए,
जो शहीद हुए हैं वतन के लिए।।

खुले दिमाग़ के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

साक्षात्कार और खबरों के चैनल को सबस्क्राइब करें
Subscribe
सर्च करें : ओपन डोर न्यूज

ओपन डोर न्यूज यूट्यूब चैनल हेतु आवश्यकता है प्रतिनिधि की

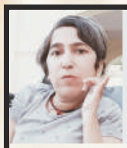

कंचन खन्ना
कोठीवाल नगर, मुरादाबाद, उ.प्र.

जश्न आजादी का

जश्न आजादी का अबके,
कुछ ऐसे मनाना है!
तिरंगा मात्र घरों पर नहीं,
दिलों में फहराना है!
जश्न आजादी का ....!!
मतवाला है देश हमारा,
मस्ताने हैं सब मौसम,
झूम के मस्ती में नाचेंगे,
आज भुला के सारे गम,
वीरों की स्मृति में शीश झुका,
अब श्रद्धा-सुमन चढ़ाना है!
जश्न आजादी का ....!!
सदियों सुनते रहे हैं गाथा,
हम स्वर्णिम इतिहास की,
लिखनी है अब नयी कहानी,
नव निर्माण की, विकास की,
नव स्वप्नों से सजा नव राष्ट्र,
नव हिन्दुस्तान सजाना है!
जश्न आजादी का....!!
गीत अनगिनत गाये पुराने,
नया तराना आओ गायें,
जगा दें ऐसा जोश दिलों में,
मस्ती में मिलके लहरायें,
नये सुरों में फिर झूम-झूम कर,
वन्दे मातरम् दोहराना है!
जश्न आजादी का.....!!
तिरंगा मात्र घरों पर नहीं,
दिलों में फहराना है!
जश्न आजादी का....!!

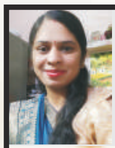

निधि 'मानसिंह'
डॉ. मानसिंह, बिशनगढ़ कॉलोनी,
अंबाला रोड, कैथल-१३६०२७ हरियाणा

ऐ! मेरे प्यारे वतन

व्यर्थ है ये मेरा जीवन,
जो देश के काम ना आए।
काश! लक्ष्यहीन इस जीवन में
देश की सरहद की
कोई शाम आए।
मुझे मृत्यु का भय नही
न स्वर्ग की इच्छा है।
अगरए गिनती हो शहीदों की
तो मेरा भी नाम आए।
ऐ! मेरे प्यारे वतन
तेरी आजादी की कभी
कोई शाम न आए।
लहू दिया जिन शहीदों ने
वो कभी नाकाम न हो।
जब तक रहे धरा पे जीवन
मेरा भारत महान हो।
भारत माँ के आंचल की छैय्या में
भारत का प्यारा संसार।
विश्व शांति का नारा देता
सारा जग इसका परिवार।
भारतवर्ष की शान निराली
गाथाएं इसकी हिम्मतवाली।
विश्वशांति की विजय पताका
दुनिया में सुख का
पैगाम लाए।
काश! लक्ष्यहीन इस जीवन में
देश की सरहद की
कोई शाम आए।
जय हिंद

श्याम विहारी गुप्ता
'कवि बेकल कैमूरी'
सेवानिवृत्त (सिविल सर्जन कार्यालय)
स्टेशन रोड मोहनियाँ, वर्ड नं० ८
पिन-८२११०६, जिला-कैमूर (ममुआ)
बिहार, मो० ८४०६५३६०११

दो राष्ट्रीय ग़ज़ल

१
खिलती कली से तो सब खेलते हैं।
मजा तो है तब कि अंगारों से खेलो।।
कजरारी आँखों से खेले बहुत दिन।
मगर आज खंजर की धारों से खेलो।।
नही वक्त रंगों की पिचकारियों का।
अब बन्दूक गोली की मारो से खेलो।।
भुला दो जवानी के रंगीन सपने।
जवां हो तो रण में जुझारों से खेलो।।
तजो चन्द्रमुख कामिनी के आकर्षण।
लो संकल्प बढ़के खूंखारों से खेलो।।
अगर देश के सच्चे प्रहरी जी बेकल :
अकेले तुम लाखों हजारों से खेलो।।
२
सोया है जब ये और जगाया या किजिये।
बारूढ़ में यूं आग लगाया न किजिये।।
एक बार थाम करके तू दोस्ती का हाथ।
खंजर यू धोखे से फिर चलाया न किजिये।।
जब चाहते है प्रेम की गंगा बहाये हम।
दिवार नफरतों की उठाया न किजिये।।
चरणों में जिनके तन-मन चढ़ाते रहे है हम।
पांवों में उनके कांटा चुभाया न किजिये।।
कारगिल हो चाहे कश्मीर की वादी।
इस ओर अपनी आँखे उठाया न किजिये।।
औकात भूलिये न "बेकल" का मशवरा।
पत्थर ये तीर बेंजा चलाया न किजिये।।
ऐसा है जब में शेर जगाया न किजिये।
बारूढ़ में यूं आग लगाया न किजिये।।

नमामि मातु भारती!

अमर नाथ
४०१-ए, उदयन-१, बंगला बाजार,
लखनऊ (उ,प्र,)
सचलभाष-९४५१७०२१०५

नमामि मातु भारती! नमामि मातु भारती!
मनस, वाचा, कर्मणा, मैं उतारूँ आरती।।

पाँचों- तत्व देह के, देन ही है आपकी।
जन्म से, माँ! मृत्यु तक,मिलती गोद आपकी।
कोख में तेरी ढले, गोद में तेरी पले।
गोद में तेरी बढ़े, गोद में तेरी खड़े।
मातु! मेरी जिन्दगी, यही गोद सँवारती।
नमामि मातु भारती, नमामि मातु भारती!

तन मेरा महामना!, धूल में तेरी, सना।
पय भरता तेरा ही, प्राण में संजीवना।
तेरी खनिज सम्पदा, बनी मेरी सम्पदा।
तेरे नभ के नीचे, दूर हैं सब आपदा।
तेरी हवा साँस में, भरती है बहार सी।
नमामि मातु भारती, नमामि मातु भारती!।

राम-लखन, कृष्ण, बुद्ध, नानक, महावीर सब।
गोद में तेरी पले, दादू ओ कबीर सब।
पाणिनी, चाणक्य की, वाल्मीकि, तुलसी, मात।
शुक्र, कणाद, बृहस्पति, आपकी संतति मात!
बाहुबली, ऋषि, मुनि सब, गोद में पुचकारती।
नमामि मातु भारती, नमामि मातु भारती!

घूँघट नील अम्बरा, घाघरा तेरा हरा।
सुफला, सुजल, अन्नदा, दूध नदियों में भरा।
गंग, यमुन, सरस्वती, त्रिवेणी तेरी बनी।
चमकती है माथ पर, नगाधिराज की मणी।
लहरें हिन्द-सागरी, चरणों को पखारती।
नमामि मातु भारती, नमामि मातु भारती!

उगे रवि जब प्रात में, रचे कंचन गात में।
तेज-प्रखर दोपहरी, रजत लाए साथ में।
शर्वरी की जुल्फ से, खेलता है चाँद जब।
चाँदनी में सोम रस, घोलता है चाँद तब।
सोम भीगी चाँदनी, अमृतमयी प्रभात सी।
नमामि मातु भारती नमामि मातु भारती!

सारिका, हंस, खंजन, अलियों की मृदु गुंजन।
नृत्य मोर तितली के, मन भरते आकर्षण।
चौकड़ी भरते हिरन, बक, चातक, नीलकंठ।
रेंग वीर बहूटियाँ, माँग भरती हैं रग।
मलय सेचलती पवन, मातु तुझे सुवासती।
नमामि मातु भारती, नमामि मातु भारती!

विवेक चतुर्वेदी
महल्ला बाजारकला,
निकट कुदेशिया मंदिर
सहसवान रोड, उझानी (बदायूँ)
उत्तर प्रदेश २४३६३९

एक सैनिक का गीत

यूँ ही नहीं लिया प्रण मैंने भी सीमा पर जाने का
रण में अपने फौलादी सीने पर गोली खाने का
मुझे सरहदों की रक्षा में अपना खून बहाना था
और तिरंगे को सलाम करने का हुनर दिखाना था

लेकिन माँ यदि दूर गया मैं तेरी नजरों की हद से
तो फिर मैं पैगाम लिखूँगा तुझको अपना सरहद से
तेरी इक आवाज पे बेटे की हमदर्दी लौटेगी
या तो मैं लौटूँगा या फिर मेरी अर्थी लौटेगी

लोग भले ही शव मेरा ताबूत में रखकर लायेंगे
फिर भी देश के सैनिक मेरी शान में बैण्ड बजायेंगे
मेरी खातिर आसमान में गोली दागी जायेंगी
मेरे अन्तिम दर्शन को खुद गंगा-जमुना आयेंगी

मेरी जान तुम्हारी चूड़ी जब भी मुझको याद करे
और कभी सपने में मुझसे मिलने की फरियाद करे
तो तुमको आगोश में भरने मेरी वर्दी लौटेगी
या तो मैं लौटूँगा या फिर मेरी अर्थी लौटेगी

भेजे हैं हथियार जिन्होंने बेच के अपने गहनों को
मरते दम तक याद रखेंगे भाई ऐसी बहनों को
है कितना मजबूत ये धागा भाई-बहन के बंधन का
रोली-अक्षत भी साधन है वीरों के अभिनंदन का

ये छोटी सी बात पता है मेरी बहना पाखी को
अगर कलाई पर न बाँधा मैंने उसकी राखी को
न ही फिर सावन लौटेगा न फिर सर्दी लौटेगी
या तो मैं लौटूँगा या फिर मेरी अर्थी लौटेगी

आजादी का अमृत महोत्सव

डॉ अर्चना प्रकाश
००२, रॉयल ब्लॉक,
एल्डकॉग्रीन अपार्टमेंट्स,
गोमती नगर, लखनऊ
सचलभाष- ६४१५६११००१

मना रहा है भारत वर्ष अब,
अमृत महोत्सव आजादी का।
होंगे वर्ष पचहत्तर पूरे आजादी के,
होते उत्सव हर दिन आजादी के।
याद आ रही फिर से आजए
आजादी की वो दुःखद लड़ाई,
बलि ले ली जिसने ना जाने,
कितने वीर जवानों मस्तानो की,
माताओं बहनों नन्हें मासूमें की।
आपसी फूट से बने गुलाम हम,
मुगलों और अंग्रेजी सत्ता के।
वीर शिवाजी तात्याटोपे आजाद,
भगत सिंह रानी लक्ष्मी बाई ने।
अलख जगाई आजादी की,
जड़े उखाड़ी अंग्रेजी सत्ता की।
सत्य अहिंसा की शक्ति से,
जाग्रति जनता में ऐसी आई।
गोरी सत्ता की नींव हिलाई।
याद करो उन रणबाकुरों को,
जिनकी कुर्बानी गुमनाम रही।
देशहित तन मन न्यौछावर किये,
फिर भी काला पानी जेल गए।
नई पीढ़ी अब तुम्हें समझना है,
ये स्वतंत्रता हैअनमोल धरोहर।
इसको तुम्हें सम्भाल के रखना है,
करोड़ो की कुर्बानीदे कर पाई है।
इस पर आंच न आये कभी,
हर कुर्बानी इसके हित देना तुम।
जंगे आजादी के शहीदों की,
यादों को अमर बनाना तुम।
विश्व पर छाए गा अब भारतवर्ष,
मिलेगा विश्व गुरु का सम्मान।
सोने की चिड़िया फिर हो गा,
डाल डाल पर रँगी सपने होंगे।
हर मुट्ठी में हो गा आसमान,
भारत ने थामी विकास की कमान।
ये अमृत महोत्सव है आजए
हर देशवासी के सपनों का ताज ।

हे! माटी के लाल

डॉ. तेजिंद्र
डॉ. तेजिंद्र सुपुत्र श्री जगदीश राम, मकान नम्बर ८५६, सेक्टर १६ भाग २ हुडा कैथल (हरियाणा) पिन- १३६०२७
सचलभाष- ६४१६६५८४५४

हे माटी के लाल,माटी का कर्ज चुकाना।
भारत-भू के लाल, तू अपना फर्ज निभाना।
इस माटी ने जन्म दिया है।
पालन-पोषण खूब किया है।
इस माटी ने लाड़ लड़ाये।
तुझको हाथों-हाथ लिया है।
तू भी अपना नाम, वीरों में दर्ज कराना।
हे! माटी के लाल, माटी का कर्ज चुकाना।
जीवन को आधार दिया है।
हर सपना साकार किया है।
राहों में हैं फूल खिलाये।
कब तेरा उपकार लिया है?
गा माटी के गीत, माटी की तर्ज सुनाना।

आँखों में लेकर चिंगारी,
दुश्मन पर तू पड़ना भारी।
अपना दुश्मन कितना कायर?
छिप-छिप करता गोलीबारी।
सर्जिकल स्ट्राइक कर, दुश्मन का मर्ज मिटाना।
हे माटी के लाल, माटी का कर्ज चुकाना।

डॉ. सुशील कुमार त्यागी
'अमित'
ज्वालापुर, हरिद्वार

आजादी का उपहार मिले

बेड़ी की पायल पैरों, औ तौक गले के हार मिले।
थी फिक्र किस तरह भारत को, आजादी का उपहार मिले।।

वीरों ने ना अपमान सहा, रिपु को मुँह तोड़ जवाब दिया।
श्रीभगत, सुभाषाजाद हुये, जो खूँ का बदला खून लिया।।
थी लाज बचायी झण्डे की, दश-दिशि से जय-जयकार मिले।।

'भारत-माता की जय' नारा, यह गूँज उठा सारे जग में।
स्वातन्त्र्य-प्रेम की धाराएँ, बह रही थी उनकी रग-रग में।।
माताएँ वे धन्य कि जिनकी, कोख से वीर हजार मिले।।

वन-उपवन कलियों-कलियों को, ऐसे वीरों पर नाज हुआ।
जिनके बलिदानों से भारत, स्वाधीन पूर्णतः आज हुआ।।
बस उनके ही उत्सर्गों से, हमको नूतन विस्तार मिले।।

ए प्यारे वतन! अब तू ही बता, कितनों ने प्राणोत्सर्ग किये।
सर्वस्व लुटाया कितनों ने, कितनों ने ही जी-जान दिये।।
तब शान से झण्डा लहराया, कवि 'अमित' नया संसार मिले।।

डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय ''अशोक''
माँ गायत्री नगर, बम्हौर खास,
मोहनियाँ, हैमुर, बिहार-८२११०६
सचलभाष ८८७३६६०६५१

मैं ही हिन्दुस्तान हूँ

मैं विश्व की आवाज हूँ, बड़ा ही रंगबाज हूँ।
मैं गीता वो कुरान हूँ, मैं मजहबों की जान हूँ।
हाँ मैं ही हिन्दुस्तान हूँ, हाँ मैं ही हिन्दुस्तान हूँ।।

मैं युद्ध चाहता नहीं, मगर मैं भागता नहीं,
मुझको यही मलाल है, तू मुझको जानता नहीं,
जो अड़ गया था मृत्यु से, मैं उस भगत की शान हूँ।
हाँ मैं ही हिन्दुस्तान हूँ, हाँ मैं ही हिन्दुस्तान हूँ।।

मैं बाईबिल गुरु ग्रन्थ में, दुनियाँ के सारे पन्थ में,
नजरें उठा के देख ले, मैं मौलवी और सन्त में,
मैं सिख हूँ इसाई हूँ, मैं राम वो रहमान हूँ।
हाँ मैं ही हिन्दुस्तान हूँ, हाँ मैं ही हिन्दुस्तान हूँ।।

मैं दोहे हूँ कबीर के, कलाम हूँ शब्बीर के,
मैं ओज हूँ विवेक का, तो हूँ दुआ फकीर के,
मैं आर्यभट्ट चाणक्य हूँ, मैं बुद्ध का ही ज्ञान हूँ।
हाँ मैं ही हिन्दुस्तान हूँ, हाँ मैं ही हिन्दुस्तान हूँ।।

डॉ.अनिल शर्मा 'अनिल'
धामपुर, उत्तर प्रदेश

भारत-भारती

अग्रणी विश्व में भारत भारती।
कीजिए, कीजिए मात की आरती।।

इसके आंचल को लहराती शीतल पवन,
शीषमणि हिमगिरी छूना चाहता गगन।
है हृदय इसका अतुलित ममता भरा,
नील सागर पखारे है इसके चरण।।
इस पर प्रकृति सकल संपदा वारती।
कीजिए, कीजिए मात की आरती।।

हैं विविध संस्कृति भाषा फूली फली,
शृंखलाएं त्योहारों की लगती भली।
सब बंधे हैं यहां एकता सूत्र में,
ईद क्रिसमस गुरु पर्व दीपावली।।
मिल मनाते हैं इनको सभी भारती।
कीजिए, कीजिए मात की आरती।।

गंगा यमुना सी नदियां यहां पावनी
ऋतुएं ग्रीष्म शरद फागुनी सावनी।
त्याग बलिदान और वीरता से भरी,
गाई जाती हैं गाथाएं मन भावनी।।
जिनको सुनकर जवानी है हुंकारती।
कीजिए कीजिए मात की आरती।।

अग्रणी ज्ञान विज्ञान, कृषि भी उन्नत,
योग अध्यात्म में है ऋषि शोधरत।
सब सुखी और निरोगी रहें सर्वदा,
होवे सुखकारी,उज्जवल सभी का आगत।।
प्रार्थना यह सुबह-शाम गुंजारती।
कीजिए, कीजिए मात की आरती।।

विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'
मु.बोदिया,जिला-बाँसवाड़ा (राज.)
९९२८९९९३४४

वो हिंदुस्तान हमारा

रम्य मनोहर इस धरती पर,
सकल विश्व का प्यारा।
वो हिन्दुस्तान हमारा।

दिव्य धरा जहाँ स्वयं प्रभु ने,
बार-बार अवतारा।
वो हिन्दुस्तान हमारा।

सब धर्मों के लोग जहाँ पर,
रहते हैं हिल-मिल कर।
काशमीर से कान्यकुमारी,
नहीं किसी को है डर।
एक दूसरे का लोग जहाँ,
बनते रहे सहारा।
वो हिंदुस्तान हमारा।

स्वर्ण-मुकुट हिमालय जिसका,
चरण पखारे सागर।
गंगा-यमुना करें आचमन,
निर्मल जल ला-लाकर।।
दिव्य रूप ऐसा जिससे है,
आलोकित जग सारा।
वो हिंदुस्तान हमारा।

मुक्त उड़ानें नर-खगदल की,
सीमाओं नहिं बाँधा।
निर्भय होकर आगे बढ़ते,
स्वयं लक्ष्य जो साधा।।
चूमें खुशियाँ जहाँ रहें वो,
मन में सदा विचारा।
वो हिंदुस्तान हमारा।

अशोक अंजुम
संपादक - अभिनव प्रयास (त्रैमा.),
स्ट्रीट-२, चंद्र विहार कॉलोनी (नगला डालचंद)
क्वारसी बाईपास, अलीगढ़ २०२ ००२(उ.प्र.)
सचलभाष- ९२५८ ७७९७४४

हिन्दुस्तान के होकर रहो!

दीन के ईमान के होकर रहो!
राम के रहमान के होकर रहो!
किंतु पहले ध्यान सबको ये रहे-
आप हिंदुस्तान के हो कर रहो!

क्यों थकें हम इसके गौरव गान से
कैसे बच पाएँगे हम अहसान से
तानकर सीना कहें सब शान से-
आज हम हैं जो हैं हिंदुस्तान से
आप इस अभिमान के होकर रहो!
आप हिंदुस्तान के हो कर रहो!

होश खाओ, अब शरारत मत करो
मजहबों की तुम सियासत मत करो
है नहीं कर्तव्य का एहसास तो-
फिर किसी से तुम शिकायत मत करो
सर्वदा उत्थान के होकर रहो!
आप हिंदुस्तान के होकर रहो!

भिन्नता में एकता परिवेश में
अनगिनत खूबी हैं इस के वेश में
है बड़ा सौभाग्य इतराएँ न क्यों
जन्म पाया हमने भारत देश में
आप इस वरदान के होकर रहो!
आप हिंदुस्तान के होकर रहो!

इसकी संस्कृत श्रेष्ठ जो कहता नहीं
उसने इसको अब तलक समझा नहीं
रक्त बनकर बह रहा यह देह में
देश कोई भूमि का टुकड़ा नहीं
हिंद की पहचान के हो कर रहो!
आप हिंदुस्तान के होकर रहो!

विनोद कुमार विक्की
पिता-स्व.ओम प्रकाश गुप्ता
ग्रा. पो.- महेशखूंट बाजार
जिला-खगड़िया (बिहार) ८५१२१३
सचलभाष- ६११३४७३१६७

हिंद मातरम वंदे...
जय हिंद मातरम वंदे...

ना तुझसे प्यारा महबूब कोई,
हीरा-मोती मंजूर नहीं।
जनम जनम तेरा साथ मिले,
इस माटी से रहूँ मै दूर नहीं।।
जय हिंद मातरम वंदे का,
ये होठ हृदय गुनगान करे।
सीने मे जब तक जान रहे..हो...
मेरे दिल में हिंदुस्तान रहे।।
हिंद मातरम वंदे...
जय हिंद, मातरम वंदे...
हसरत ख्वाहिश बस इतनी सी,
मेरा मुल्क सदा आबाद रहे।
साथ तिरंगा जन गण मन,
इस धरा पर जिंदाबाद रहे।
जय हिंद मातरम वंदे का,
ये होठ हृदय गुनगान करे।
सीने मे जब तक जान रहे...हो...
मेरे दिल में हिंदुस्तान रहे।।
हिंद मातरम वंदे...
जय हिंद, मातरम वंदे...
ये जमीं है वीर शहीदों की,
क्या इसकी मैं गुनगान करूँ।
मिट्टी भाषा ओ माँ मेरी,
तुझ पर मै सदा अभिमान करूँ।
जय हिंद मातरम वंदे का,
ये होठ हृदय गुनगान करे।
सीने मे जब तक जान रहे...हो...
मेरे दिल में हिंदुस्तान रहे।
हिंद मातरम वंदे...
जय हिंद मातरम वंदे...
रब मेरा तीरथ धाम है तू,
हर हर महादेव राम है तू।
लैला, हीर दा इश्कां से बढकर,
नशा प्रेम सुरूर है तू।।
जय हिंद मातरम वंदे का,
ये होठ हृदय गुनगान करे।
सीने मे जब तक जान रहे...हो...
मेरे दिल में... हिंदो...स्तान रहे।।
हिंद मातरम वंदे...
जय हिंद, मातरम वंदे...

विजयानन्द विजय
आनंद निकेत, बाजार समिति रोड,
पो. - गजाधरगंज, बक्सर
(बिहार) - ८०२१०३
सचलभाष - ९९३४२६७१६६
ईमेल - vijayanandsingh62@gmail.com

तो देश होता है

जब दुरभिसंधि में
बुरी तरह घिरा अभिनंदन
अपने प्रबल रण-कौशल से
दुश्मनों का चक्रव्यूह बेधकर
अपनी मातृभूमि को चूमता है
तो देश होता है।

जब परदेश में भी
नस्लभेदी प्रहार पर
खेल के मैदान में डटे
खिलाड़ी का जुनून
और आसमान छूता है
तो देश होता है।

जब जीत की खुशी में
आसमान में तिरंगा लहराता है
राष्ट्रधुन बजती है
और किसी सिराज की आँखों से
गर्व और खुशी के आँसू बरसते हैं
तो देश होता है।

जब हड्डियों तक को
गला देने वाली ठंड में
कंधे पर बंदूक टाँगे
सरहदों पर डटा सैनिक
बर्फीली हवाओं को भी झेल जाता है
तो देश होता है।

जब किसान
शीत-ताप-बारिश झेलकर
कुदाल की कलम से
खेतों में सृजन-गीत रचता है।
और भूख-प्यास त्यागकर
अपने रक्त-स्वेद से सींच
मिट्टी से सोना उपजाता है
तो देश होता है।

जब पथरीली राहों पर
लहूलुहान पंजों से चलते हुए
पहाड़ का सीना चीरकर
श्रम-कौशल और उद्यम भरे हाथ
विकास की सड़क बनाते हैं
तो देश होता है।

जब इंसानियत लगी हो दाँव पर
तब, कोई अब्दुल
दोस्ती का फर्ज अदा करने
पिता बलराम बनकर
बेटी कुसुम की डोली विदा करता है
तो देश होता है।

जब सपनों के पंख लगाए
आसमान फतह करती कोई नीरजा
मुश्किल हालातों में भी
सैकड़ों जानों की हिफाजत को
अपनी जान पर भी खेल जाती है
तो देश होता है।

अपनी उम्मीदो का आसमाँ बनाने
जब कोई जोया
बादलों का सीना चीर
फाईटर प्लेन उड़ाकर
दुश्मनों के दिल दहलाती है
तो देश होता है।

जब प्रचंड जयघोष के साथ
गाँव की गलियों से गुजरती है
तिरंगे में लिपटी शहीद की अर्थी।
और पोते को फौज में भेजने की
फख्र से कसम खाते हैं पिता
तो देश होता है।

कौम और मजहब की दीवारें तोड़कर
जब राष्ट्रीय अस्मिता के रक्षार्थ
एकजुटता की मिसाल बन
करोड़ों हाथ मिल जाते हैं एक साथ
तो देश होता है।

जब शान से आसमान में लहराता है तिरंगा
और कोटि-कोटि कंठों से उच्चरित
'जन-गण-मन' के समवेत स्वर से
कदम जहाँ-के-तहाँ जाते हैं ठहर
तब देश होता है।

जब हवाएँ सुनाएँ
आजादी के तराने
और जर्रे-जर्रे में गूँजे
'मेरा रंग दे बसंती चोला'
तो वतन पर मर-मिटने की चाहत में
रगों में उठती है खून की लहर
तो देश होता है।

चित्रा त्यागी
एम-४/१५, श्रद्धापुरी,
फेस-१, कंकर खेड़ा, मेरठ।
उत्तर प्रदेश।
सचलभाष- ६८३७८११८६४

तमन्ना

तमन्ना है शहादत की, कि जां कुर्बान हो जाए।
मेरी है चाहना, रग-रग वतन के नाम हो जाए।

ये मेरी मातृभूमि मां मैं जिसकी गोद में खेली
मेरी शोहरत, मेरी थाती, मेरा अभिमान हो जाए।
मेरी है चाहना रग-रग.........

मेरी हर सांस का कण-कण तुम्हारे वास्ते जननी
तेरी रक्षा के हित जीवन, मेरा बलिदान हो जाए।
मेरी है चाहना रग-रग...........

तुम्हीं हो आचमन मेरा, तुम्हीं शामिल हो वंदन में
तेरे चरणों में आराधना, सुबह और शाम हो जाए।
मेरी है चाहना रग-रग.............

ये पत्थरबाजों से कह दो, हुनर हर हाथ में होगा
तुम्हारे वास्ते जन्नत, यूँ ही वरदान है जाए
मेरी है चाहना रग-रग.............

ये राम और कृष्ण की धरती, विवेकानंद की माटी
विलग इससे अगर जीवन, तो फिर अवसान हो जाए।
मेरी है चाहना रग-रग.............

नहीं जिद है कोई मुझको, कि मैं संसार सुख भोगूँ
तिरंगा हो कफन मेरा, यही अरमान हो जाए।
मेरी है चाहना रग-रग वतन के नाम हो जाए।

सुधा ठाकुर
प्राध्यापिका
स्टैनली डिग्री कालेज चैपल रोड
आबिड्स हैदराबाद
सचलभाष- ७३८६८८००७८,
६३६८८३२६६१

ओ देश मेरे

ओ देश मेरे
ओ देश मेरे ओ देश मेरे
तुझमें बसती मेरी जान।
तेरी मिट्टी के कण कण पर
हो जाऊं मैं कुर्बान

ओ देश मेरे -
तुझसे ही तो है जग में हम
सबकी पहचान
तुझसे ही तो हम सब की
जग मे ये शान
तू ही तो है हम
सबका अभिमान

ओ देश मेरे ओ देश मेरे
तू ही तो है विश्व गुरु
तू ही संस्कृति का गान
कभी न कम होने देंगे हम
तेरा ये सम्मान

ओ देश मेरे -
तुझसे ही सीखा हमने रखना
अपना स्वाभिमान
गाते ही रहेंगे हम सदा
तेरा गौरव गान
ओ देश मेरे ओ देश मेरे
तुझमें बसती हम सब जान
तेरी मिट्टी के कण कण पर
हो जायें बलिदान

डॉ. योगेन्द्र प्रसाद
गोविन्पुरी, चन्दक बिजनौर, उ.प्र.
मोबा. ६५५७५२८७८०

हे मातृभूमि तुमको मेरा

हे मातृभूमि तुमको मेरा शत् शत् नमन
धोता सदा सागर तेरे पावन चरण।

प्रहरी तेरा हिमराज सा है वीरवर,
झुकता ना जिसका झंझावातों में भी सरा।
मानों तेरी रक्षा का उसका दृढ़ सुप्रण।।

आर्यों का आदि देश तू मेरे वतन,
भाषा विविध से है सुसज्जित तू चमन।
तेरी कला से हो रहा सुरभित गगन।।

नदियों का तेरी पूजते पानी हैं लोग,,
है विश्व में विख्यात दर्शन और योग।
पावन तेरी भूमि का रज रज और कण।।
धोता सदा सागर तेरे पावन चरण।

₹ 200 RNI UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288
शोधादर्श
संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की त्रैमासिक पत्रिका
दिसंबर 2022–फरवरी 2023
प्रो. ऋषभ देव शर्मा विशेषांक

लेख भेजें-
shodhadarsh2018@gmail.com

साक्षात्कार और खबरों के चैनल को सबस्क्राइब करें
सर्च करें : ओपन डोर न्यूज
Subscribe
खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र
ओपन डोर न्यूज
यूट्यूब चैनल हेतु आवश्यकता है प्रतिनिधियों की

कारगिल युद्ध का 'शेरशाह'

> "स्कूल खत्म करने के बाद विक्रम बत्रा ने डीएवी कॉलेज (चंडीगढ़) में एडमिशन लिया और फिर ग्रेजुएशन के लिए पंजाब विश्वविद्यालय चले गये। ग्रेजुएशन के साथ वह भारतीय सेना में जाने की तैयारी कर रहे थे। उन्हें बचपन से ही इंडियन आर्मी में जाना था।"

भारत और पाकिस्तान के बीच मई से जुलाई १९९९ के बीच कश्मीर के करगिल जिले में हुए सशस्त्र संघर्ष का नाम 'कारगिल युद्ध' है। जिसे ऑपरेशन विजय के नाम से भी जाना जाता है। इस युद्ध में भारत की जीत हुई थी। हजारों सैनिकों ने युद्ध में अपने प्राणों को देश के नाम न्योछावर कर दिया था। हम कैप्टन विक्रम बत्रा की कहानी और कारगिल संघर्ष में भारत की जीत में उनके योगदान की दास्तां आपको बताने जा रहे हैं। कैप्टन विक्रम बत्रा को उनकी वीरता के लिए मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च वीरता सम्मान परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

कैप्टन बत्रा ने युद्ध में निडर होकर भारत के लिए लड़ते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी। वह उस समय केवल २४ वर्ष के थे और उन्हें मरणोपरांत सर्वोच्च वीरता पुरस्कार परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया था। कैप्टन विक्रम बत्रा का जन्म शिक्षक के परिवार में हुआ था, उनके पिता एक सरकारी स्कूल के प्रिंसिपल और उनकी माँ एक स्कूल टीचर थीं। बत्रा अपने स्कूल के समय में विशेष रूप से टेबल टेनिस खेलते थे। उन्हें कराटे का भी शौक था। विक्रम का बचपन से ही सपना था कि वह बड़े होकर इंडियन आर्मी ज्वाइन करेंगे। हिमाचल प्रदेश के पालमपुर में जन्मे कैप्टन बत्रा का एक जुड़वां भाई और दो बहनें थीं।

स्कूल खत्म करने के बाद विक्रम बत्रा ने डीएवी कॉलेज (चंडीगढ़) में एडमिशन लिया और फिर ग्रेजुएशन के लिए पंजाब विश्वविद्यालय चले गये। ग्रेजुएशन के साथ वह भारतीय सेना में जाने की तैयारी कर रहे थे। उन्हें बचपन से ही इंडियन आर्मी में जाना था। कहते है कि बत्रा को मर्चेंट नेवी में शामिल होने के लिए हांगकांग में मुख्यालय वाली एक शिपिंग कंपनी से भी एक प्रस्ताव मिला था लेकिन बत्रा ने प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और इसके बजाय पंजाब विश्वविद्यालय में एमए अंग्रेजी पाठ्यक्रम में दाखिला लिया, ताकि वे संयुक्त रक्षा सेवा (सीडीएस) परीक्षा की तैयारी कर सकें।

लाखों की नौकरी को छोड़कर सेना में भर्ती हुए थे विक्रम बत्रा ने सीडीएस परीक्षा दी और १९९६ में इलाहाबाद में सेवा चयन बोर्ड (एसएसबी) द्वारा उनका चयन किया गया। मेरिट के क्रम में बत्रा शीर्ष ३५ भर्तियों में शामिल थे। अपने एमए पाठ्यक्रम में एक वर्ष पूरा करने के बाद, बत्रा देहरादून में भारतीय सैन्य अकादमी (आईएमए) में शामिल हो गए और मानेकशा बटालियन का हिस्सा थे। उन्होंने १९ महीने का कठोर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पूरा किया और १३वीं बटालियन, जम्मू और कश्मीर राइफल्स में लेफ्टिनेंट के रूप में भारतीय सेना में शामिल हुए। जबलपुर, मध्य प्रदेश में अतिरिक्त प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद, उन्होंने अपनी पहली पोस्टिंग सोपोर, बारामूला में प्राप्त की। उनकी पहली पोस्टिंग जम्मू-कश्मीर राइफल्स की १३वीं बटालियन में थी। उसी रेजिमेंट ने बाद में पाकिस्तानी सैनिकों से मुकाबला किया, जिन्होंने नियंत्रण रेखा (एलओसी) के साथ कारगिल में भारतीय चौकियों में घुसपैठ की थी।

कारगिल के युद्ध के दौरान कैप्टन बत्रा के लिए सबसे कठिन मिशन पॉइंट ४८७५ पर कब्जा करना बताया गया था। कैप्टन बत्रा को 'शेरशाह' कोडनेम दिया गया था, जिसे उन्होंने भारतीय सशस्त्र बलों की जीत सुनिश्चित करके सही भी साबित किया। 'शेरशाह' के अलावा उन्हें 'टाइगर ऑफ द्रास', 'लायन ऑफ कारगिल' और 'कारगिल हीरो' के रूप में भी याद किया जाता है।

करगिल युद्ध के दौरान जो सैनिक बत्रा की टीम में थे वह बताते हैं कि कैप्टन बत्रा ने माइनस शून्य तापमान और थकान के बावजूद दल का नेतृत्व किया था वह बहुत ही बहादुरी और सूझबूझ के साथ अपनी टीम को निर्देश दे रहे थे। उनके सहयोगी उनकी बहादुरी और साहस की कहानियों को याद करते हैं। कहा जाता है कि उन्होंने युद्ध के दौरान कम से कम चार पाकिस्तानी सैनिकों को मार गिराया था। ७ जुलाई को मिशन लगभग पूरा हो गया था। लेकिन कैप्टन बत्रा एक अन्य अधिकारी लेफ्टिनेंट नवीन अनाबेरू को बचाने के लिए अपने बंकर से बाहर निकल आए, जिन्हें एक विस्फोट के दौरान उनके पैरों में गंभीर चोटें आई थीं। अपने सहयोगी को बचाने के क्रम में कैप्टन बत्रा ने खुद दुश्मन की गोली खा ली। कहते हैं कि जब विक्रम बत्रा अपनी टीम के साथ मिशन पर निकले थे तब उन्होंने जीतकर आने की कसम खाई थी। साभार

देश के राज्यों में आयोजित होने जा रही है जी-२० की बैठक

विदेश मंत्रालय अगले वर्ष भारत में होने वाली जी-२० की बैठक की तैयारियों को लेकर सक्रिय हो गया है। अभी मोटे तौर पर यह फैसला किया गया है कि समूह की शीर्षस्तरीय बैठक नहीं दिल्ली में होगी लेकिन दूसरी तमाम बैठकें देश के अलग-अलग राज्यों में आयोजित की जाएगी। इस संदर्भ में विदेश मंत्रालय की तरफ से लगभग एक दर्जन राज्यों को पत्र लिख कर यह पूछा गया है कि उनके यहां विश्वस्तरीय सम्मेलन करवाने की क्या व्यवस्थाऐं है।

केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर और लद्दाख को भी पत्र लिखा गया है और उनसे राज्य की व्यवस्था के बारें में पूछताछ की गई है। जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में आयोजन होता है तो इसका खास महत्व होगा। विदेश मंत्रालय के सूत्रों के मुताबिक जी-२० के तहत कई उच्चस्तरीय बैठकें होती हैं। कोशिश है कि इनका आयोजन देश के अलग-अलग हिस्सों में हो।

इस बारे में राज्यों से उनके आयोजन सीलों के बारे में पूछा गया है। जहां तक शीर्षस्तरीय बैठक का सवाल है तो उसका आयोजन नई दिल्ली में ही होने की संभावना है। जी-२० के तहत शिखर सम्मेलन के अलावा विदेश मंत्रियों, सदस्य देशों के केंद्रीय बैंकों के गवर्नरों, श्रम व रोजगार मंत्रियों और व्यापार मंत्रियों की मुख्य तौर पर बैठकें होती हैं। इसके अलावा बैठक की तैयारियों को लेकर अलग से भी कई बैठकें होती हैं।

भारत दिसंबर में ग्रहण करेगा G20 की अध्यक्षता

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने बताया कि भारत इस साल दिसंबर में ळ२० की अध्यक्षता ग्रहण करेगा और अगले साल शिखर सम्मेलन के अलावा हमारी अध्यक्षता के दौरान देशभर में विभिन्न स्तरों पर बड़ी संख्या में जी२० कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने बताया कि पीएम मोदी ने पिछले साल भी दलाई लामा के साथ बात की थी, यह हमारी सरकार की सतत नीति रही है कि उन्हें भारत में अतिथि के रूप में माना जाए। देश में उनके बड़े फॉलोअर्स हैं। उनका जन्मदिन भारत और दुनिया भर में मनाया जाता है। यूके के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन के इस्तीफा देने पर विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने कहा कि ये इंटरनल डेवलपमेंट हैं। पीएम मोदी और पीएम जॉनसन की गहरी दोस्ती रही और यूके के साथ हमारी बहुआयामी साझेदारी है और हमें उम्मीद है कि यह जारी रहेगा।

पलभर की भी स्वतंत्रता सौ स्वर्गों से उत्तम है

एक घड़ी की भी परवशता कोटि नरक के सम है।
पलभर की भी स्वतंत्रता सौ स्वर्गों से उत्तम है।
जब तक जग में मान तुम्हारा तब तक जीवन धारो।
जब तक जीवन है शरीर में तब तक धर्म न हारो।
जब तक धर्म तभी तक सुख है, सुख में कर्म न भूलो।
कर्म-भूमि में न्याय-मार्ग पर छाया बनकर फूलो।
जहाँ स्वतंत्र विचार न बदलें मन से आकर मुख में।
बने न बाधक शक्तिमान जन जहाँ निबल के सुख में।
निज उन्नति का जहाँ सभी जन को समान अवसर हो।
शांतिदायिनी निशा और आनंद-भरा वासर हो।
उसी सुखी स्वाधीन देश में मित्रो! जीवन धारो।
अपने चारु चरित से जग में प्राप्त करो फल चारो।

स्रोत - पुस्तक - स्वतंत्रता पुकारती (पृष्ठ ६४) संपादक - नंद किशोर नवल रचनाकार - रामनरेश त्रिपाठी प्रकाशन - साहित्य अकादेमी संस्करण

खुले दिमाग़ के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

आजादी के मशहूर तराने

'ये देश है वीर जवानों का' जोश और उन्माद से भरा गीत हुआ ये गीत है १९५७ में रिलीज हुई बी आर चोपड़ा की फिल्म 'नया दौर' का। युवा शक्ति और ऊर्जा को प्रकट करता ये गीत मोहम्मद रफी ने गाया था। ओपी नैय्यर ने जिस जोश से गीत के बोलों को संगीत में पिरोया। ये राष्ट्रीय पर्वों का हिस्सा बन चुका है। 'जन गण मन अधिनायक जय हे' १९१०-११ के आसपास गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने रचा था। इसे १९५० में भारत के संविधान में राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार किया गया। ये गीत हर भारतीय का अभिन्न हिस्सा बन चुका है।
फिल्म 'शहीद' का गीत 'ऐ वतन ऐ वतन' लोकप्रिय देशभक्ति गीत है। १९१२ की विश्व भारती बोर्ड की इस गीत की रिकॉर्डिंग को दोबारा रिलीज किया गया।'एक और गीत 'जो समर में हो गए अमर' खूबसूरत गीत है जिसे लता मंगेशकर ने जयदेव के संगीत में गाया था। इसे 'स्वरांजलि' एलबम में लिया गया है। पंडित नरेन शर्मा के लिखे इस गीत को लता मंगेशकर गाया। फिल्म उपकार का गीत 'मेरे देश की धरती' राष्ट्रभक्ति गीत है। बंकिम चंद्र चटर्जी की 'वंदे मातरम' रचना को फिल्म 'आनंद मठ' में लिया गया है। हेमंत कुमार ने इस गीत को संगीतबद्ध किया है जिसे लता मंगेशकर ने गाया है। 'मेरे देश की धरती सोना उगले' गीत में स्वतंत्र भारत की छवि पेश की गयी है। महेंद्र कपूर ने इसे गाया है और कल्याण जी-आनंद जी ने संगीत दिया है। 'ऐ वतन ऐ वतन' गीत भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव की शहादत से जुड़ा गीत है। लता मंगेशकर के गाए गीत 'ऐ मेरे वतन के लोगो' सुनकर तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की आंखों में भी आंसू आ गए थे। 'दूर हटो ऐ दुनिया वालो' गीत १९४३ में आई फिल्म 'किस्मत' का है। 'ऐ मेरे प्यारे वतन' गीत फिल्म 'काबुलीवाला' का है और इसे मन्ना डे ने गाया है। गीत के बोल प्रेम धवन के हैं।
राष्ट्रभक्ति गीतों में कुछ प्रसिद्ध गीत देखें-

मेरे देश की धरती

उपकार फिल्म का ययह गीत लिखा है गुलशन बावरा ने-

मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे मोती
मेरे देश की धरती....
बैलों के गले में जब घुँघरू जीवन का राग सुनाते हैं
गम कोस दूर हो जाता है खुशियों के कंवल मुसकाते हैं
सुन के रहट की आवाजें यों लगे कहीं शहनाई बजे
आते ही मस्त बहारों के दुल्हन की तरह हर खेत सजे
मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे मोती
मेरे देश की धरती....
जब चलते हैं इस धरती पे हल ममता अँगड़ाइयाँ लेती है
क्यों ना पूजे इस माटी को जो जीवन का सुख देती है
इस धरती पे जिसने जनम लिया उसने ही पाया प्यार तेरा
यहाँ अपना पराया कोई नही हैं सब पे माँ उपकार तेरा
मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे मोती
मेरे देश की धरती....
ये बाग हैं गौतम नानक का खिलते हैं अमन के फूल यहाँ
गांधी, सुभाष, टैगोर, तिलक ऐसे हैं चमन के फूल यहाँ
रंग हरा हरिसिंह नलवे से रंग लाल है लाल बहादुर से
रंग बना बसंती भगतसिंह रंग अमन का वीर जवाहर से
मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे मोती
मेरे देश की धरती....

अब तुम्हारे हवाले है वतन साथियों

हकीकत फिल्म के इस गीत के रचनाकार कैफी आजमी हैं-

कर चले हम फिदा, जान-ओ-तन साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथीयों २
सांस थमती गई, नब्ज जमती गई,
फिर भी बढ़ते कदम को ना रुकने दिया
कट गये सर हमारे तो कुछ गम नहीं
सर हिमालय का हमने न झुकने दिया
मरते मरते रहा बाँकपन साथीयों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथीयों २
जिन्दा रहने के मौसम बहुत हैं मगर
जान देने की रुत रोज आती नहीं
हुस्न और इश्क दोनो को रुसवा करे
वो जवानी जो खूँ में नहाती नहीं
बाँध लो अपने सर पर कफन साथीयों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथीयों २
राह कुर्बानियों की ना वीरान हो
तुम सजाते ही रहना नये काफिले
फतह का जश्न इस जश्न के बाद है
जिन्दगी मौत से मिल रही है गले
आज धरती बनी है दुल्हन साथीयों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथीयों २
खेंच दो अपने खूँ से जमीं पर लकीर
इस तरफ आने पाये ना रावण कोई
तोड़ दो हाथ अगर हाथ उठने लगे
छूने पाये ना सीता का दामन कोई
राम भी तुम तुम्हीं लक्ष्मण साथीयों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथीयों २

है प्रीत जहाँ की रीत सदा

फिल्म 'पूरब और पश्चिम' में इस गीत को रचा था इंदीवर ने-

जब जीरो दिया मेरे भारत ने, दुनिया को तब गिनती आई
तारों की भाषा भारत ने, दुनिया को पहले सिखलाई
देता ना दशमलव भारत तो, यूँ चाँद पे जाना मुश्किल था
धरती और चाँद की दूरी का, अंदाज लगाना मुश्किल था
सभ्यता जहाँ पहले आई, पहले जनमी है जहाँ पे कला
अपना भारत वो भारत है, जिसके पीछे संसार चला
संसार चला और आगे बढ़ा, ज्यूँ आगे बढ़ा, बढ़ता ही गया भगवान करे ये और बढ़े, बढ़ता ही रहे और फूले-फले है प्रीत जहाँ की रीत सदा, मैं गीत वहाँ के गाता हूँ
भारत का रहने वाला हूँ, भारत की बात सुनाता हूँ
काले-गोरे का भेद नहीं, हर दिल से हमारा नाता है
कुछ और न आता हो हमको, हमें प्यार निभाना आता है
जिसे मान चुकी सारी दुनिया, मैं बात वही दोहराता हूँ
भारत का रहने वाला हूँ, भारत की बात सुनाता हूँ
जीते हो किसीने देश तो क्या, हमने तो दिलों को जीता है
जहाँ राम अभी तक है नर में, नारी में अभी तक सीता है
इतने पावन हैं लोग जहाँ, मैं नित-नित शीश झुकाता हूँ
भारत का रहने वाला हूँ, भारत की बात सुनाता हूँ
इतनी ममता नदियों को भी, जहाँ माता कहके बुलाते है
इतना आदर इन्सान तो क्या, पत्थर भी पूजे जातें है
उस धरती पे मैंने जन्म लिया, ये सोच के मैं इतराता हूँ
भारत का रहने वाला हूँ, भारत की बात सुनाता हूँ

ऐ वतन ऐ वतन

प्रेम धवन का यह गीत फिल्म 'शहीद' में है-

तू ना रोना, कि तू है भगत सिंह की माँ
मर के भी लाल तेरा मरेगा नहीं
डोली चढ़के तो लाते है दुल्हन सभी
हँसके हर कोई फाँसी चढ़ेगा नहीं
ज्लते भी गये कहते भी गये
आजादी के परवाने
जीना तो उसी का जीना है
जो मरना देश पर जाने
जब शहीदों की डोली उठे धूम से
देशवालों तुम आँसू बहाना नहीं
पर मनाओ जब आजाद भारत का दिन
उस घड़ी तुम हमें भूल जाना नहीं
ऐ वतन ऐ वतन हमको तेरी कसम
तेरी राहों में जां तक लुटा जायेंगे
फूल क्या चीज है तेरे कदमों पे हम
भेंट अपने सरों की चढ़ा जायेंगे
ऐ वतन ऐ वतन
कोई पंजाब से, कोई महाराष्ट्र से
कोई यूपी से है, कोई बंगाल से
तेरी पूजा की थाली में लाये हैं हम
फूल हर रंग के, आज हर डाल से
नाम कुछ भी सही पर लगन एक है
जोत से जोत दिल की जगा जायेंगे
ऐ वतन ऐ वतन २
तेरी जानिब उठी जो कहर की नजर
उस नजर को झुका के ही दम लेंगे हम
तेरी धरती पे है जो कदम गैर का
उस कदम का निशां तक मिटा देंगे हम
जो भी दीवार आयेगी अब सामने
ठोकरों से उसे हम गिरा जायेंगे

यह देश है वीर जवानों का

यह फिल्म 'नया दौर' का गीत है जिसके रचनाकार हैं साहिर लुधियानवी-

ये देश है वीर जवानों का, अलबेलों का मस्तानों का
इस देश का यारों क्या कहना, ये देश है दुनिया का गहना
यहाँ चौड़ी छाती वीरों की, यहाँ भोली शक्लें हीरों की
यहाँ गाते हैं राँझे मस्ती में, मचती में धूमें बस्ती में
पेड़ों में बहारें झूलों की, राहों में कतारें फूलों की
यहाँ हँसता है सावन बालों में, खिलती हैं कलियाँ गालों में
कहीं दंगल शोख जवानों के, कहीं करतब तीर कमानों के
यहाँ नित नित मेले सजते हैं,नित ढोल और ताशे बजते हैं
दिलबर के लिये दिलदार हैं हम, दुश्मन के लिये तलवार हैं हम
मैदां में अगर हम डट जाएं, मुश्किल है कि पीछे हट जाएं

यह जो देश है मेरा

जावेद अख्तर द्वारा रचित यह गीत फिल्म 'स्वदेस' में फिल्माया गया है-

यह जो देस है तेरा, स्वदेस है तेरा,
तुझे है पुकारा, यह वो बंधन है जो,
कभी टूट नहीं सकता २.
मिट्टी की है जो खुश्बू, तू कैसे भुलाएगा,
तू चाहे कही जाए, लौट के आएगा,
नयी नयी राहों में, दबी दबी आहों में,
खोये खोये दिल से तेरे, कोई यह कहेगा,
यह जो देस है तेरा, स्वदेस है तेरा,
तुझे है पुकारा, यह वो बंधन है जो,
कभी टूट नहीं सकता २.
तुझसे जिंदगी यह कह रही,
सब तो पा लिया अब है क्या कमी,
यूंह तो सारे सुख है बरसे,
पर दूर तू है अपने घर से,
आ लौट चल अब तू दीवाने,
जहाँ कोई तो तुझे अपना माने,
आवाज दे तुझे बुलाये वही देस,
यह जो देस है तेरा, स्वदेस है तेरा
तुझे है पुकारा, यह वो बंधन है जो
कभी टूट नहीं सकता २२२२.
यह पल है वही, जिसमें है छुपी,
कोई एक शादी, सारी जिंदगी,
तू न पूछ रास्ते में काहे,
आयें हैं इस तरह दो राहे,
तू ही तो है अब तो जो यह बताये,
चाहे तो किस दिशा में जाए वो देस,
यह जो देस है तेरा, स्वदेस है तेरा
तुझे है पुकारा, यह वो बंधन है जो
कभी टूट नहीं सकता २२२२

हर करम अपना करेंगे

आनंद बक्षी द्वारा रचित यह गीत फिल्म 'करमा' का मुख्य गीत है-

ऐ मुहब्बत
ऐ मुहब्बत तेरी दास्तां के लिए
मैं हूँ तैयार हर इम्तिहां के लिए
जान बुलबुल की है गुलिस्तां के लिए
ऐ मुहब्बत तेरी दास्तां के...
इक शोला हूँ मैं इक बिजली हूँ मैं
आग रखकर हथेली पे निकली हूँ मैं
दुश्मनों के हर एक आशियाँ के लिए
जान बुलबुल की है ...
ये जमाना अभी मुझको जाना नहीं
सिर कटाना है पर सिर झुकाना नहीं
मुझको मरना है अपने हिन्दुस्तां के लिए
जान बुलबुल की है ...
हर करम अपना करेंगे, ऐ वतन तेरे लिए
दिल दिया है जां भी देंगे ऐ वतन तेरे लिए

सरफरोशी की तमन्ना

बिस्मिल अजीमाबादी की यह रचना फिल्म 'शहीद भगत सिंह' में है-

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजू-ए-कातिल में है।
करता नहीं क्यों दूसरा कुछ बातचीत,
देखता हूँ मैं जिसे वो चुप तेरी महफिल में है।
यों खड़ा मक़तल में कातिल कह रहा है बार-बार
क्या तमन्ना-ए-शहादत भी किसी के दिल में है।
ऐ शहीदे-मुल्को-मिल्लत मैं तेरे ऊपर निसार
अब तेरी हिम्मत का चर्चा गैर की महफिल में है।
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमां,
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है।
खींच कर लाई है सब को कत्ल होने की उम्मीद,
आशिकों का आज जमघट कूचा-ऐ-क़ातिल में है।
सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजू-ए-क़ातिल में है।

जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़िया

फिल्म 'सिकंदर ए आजम' के इस मुख्य गीत की रचना की थी राजेंद्र किशन ने-

जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़िया, करती है बसेरा,
वो भारत देश है मेरा।
जहाँ सत्य, अहिंसा और धर्म का, पग-पग लगता डेरा,
वो भारत देश है मेरा।
ये धरती वो जहाँ ऋषि मुनि जपते प्रभु नाम की माला
जहाँ हर बालक एक मोहन है और राधा हर एक बाला
जहाँ सूरज सबसे पहले आ कर डाले अपना फेरा,
वो भारत देश है मेरा।
अलबेलों की इस धरती के त्योहार भी हैं अलबेले
कहीं दीवाली की जगमग है कहीं हैं होली के मेले
जहाँ राग रंग और हँसी खुशी का चारों ओर है घेरा
वो भारत देश है मेरा।
जब आसमान से बातें करते मंदिर और शिवाले
जहाँ किसी नगर में किसी द्वार पर कोई न ताला डाले
प्रेम की बंसी जहाँ बजाता है ये शाम सवेरा
वो भारत देश है मेरा।

इन गीतों के अलावा कुछ नजर उन रचनाओं पर भी डालें जिनकी रचना हिंदी के यशस्वी कवियों द्वारा की गई है-

हरिवंश राय बच्चन

हम ऐसे आजाद हमारा झंडा है बादल।
चाँदी सोने हीरे मोती से सजती गुड़ियाँ।
इनसे आतंकित करने की बीत गई घड़ियाँ
इनसे सज धज बैठा करते जो हैं कठपुतले
हमने तोड़ अभी फेंकी हैं बेड़ी हथकड़ियाँ
परंपरा गत पुरखों की हमने जाग्रत की फिर से
उठा शीश पर रक्खा हमने हिम किरीट उज्ज्वल
हम ऐसे आजाद हमारा झंडा है बादल।
चाँदी सोने हीरे मोती से सजवा छाते
जो अपने सिर धरवाते थे वे अब शरमाते
फूलकली बरसाने वाली टूट गई दुनिया
वज्रों के वाहन अंबर में निर्भय घहराते
इंद्रायुध भी एक बार जो हिम्मत से ओटे
छत्र हमारा निर्मित करते साठ कोटि करतल
हम ऐसे आजाद हमारा झंडा है बादल।

आह्वान

(अशफाकउल्ला खां)

कस ली है कमर अब तो, कुछ करके दिखाएंगे,
आजाद ही हो लेंगे, या सर ही कटा देंगे
हटने के नहीं पीछे, डरकर कभी जुल्मों से
तुम हाथ उठाओगे, हम पैर बढ़ा देंगे
बेशस्त्र नहीं हैं हम, बल है हमें चरखे का,
चरखे से जमीं को हम, ता चर्ख़ गुंजा देंगे
परवाह नहीं कुछ दम की, गम की नहीं, मातम की।
है जान हथेली पर, एक दम में गंवा देंगे
उफ तक भी जुबां से हम हरगिज न निकालेंगे
तलवार उठाओ तुम, हम सर को झुका देंगे
सीखा है नया हमने लड़ने का यह तरीका
चलवाओ गन मशीनें, हम सीना अड़ा देंगे
दिलवाओ हमें फांसी, ऐलान से कहते हैं
खूं से ही हम शहीदों के, फौज बना देंगे
मुसाफिर जो अंडमान के, तूने बनाए, जालिम
आजाद ही होने पर, हम उनको बुला लेंगे।

आजादी

राम प्रसाद बिस्मिल

इलाही ख़ैर! वो हरदम नई बेदाद करते हैं,
हमें तोहमत लगाते हैं, जो हम फरियाद करते हैं
कभी आजाद करते हैं, कभी बेदाद करते हैं
मगर इस पर भी हम सौ जी से उनको याद करते हैं
असीराने-कफस से काश, यह सैयाद कह देता
रहो आजाद होकर, हम तुम्हें आजाद करते हैं
रहा करता है अहले-गम को क्या-क्या इंतजार इसका
कि देखें वो दिले-नाशाद को कब शाद करते हैं
यह कह-कहकर बसर की, उम्र हमने कैद्ऐ-उल्फत में
वो अब आजाद करते हैं, वो अब आजाद करते हैं।
सितम ऐसा नहीं देखा, जफ़ा ऐसी नहीं देखी,
वो चुप रहने को कहते हैं, जो हम फरियाद करते हैं
यह बात अच्छी नहीं होती, यह बात अच्छी नहीं करते
हमें बेकस समझकर आप क्यों बरबाद करते हैं?
कोई बिस्मिल बनाता है, जो मकष्तल में हमें 'बिस्मिल'
तो हम डरकर दबी आवाज से फरियाद करते हैं।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा

श्यामलाल गुप्त पार्षद

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊँचा रहे हमारा।।
सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला
वीरों को हर्षाने वाला, मातृभूमि का तन-मन सारा
झंडा ऊँचा रहे हमारा।।
स्वतंत्रता के भीषण रण में,लखकर जोश बढ़े क्षण-क्षण में
काँपे शत्रु देखकर मन में, मिट जाये भय संकट सारा
झंडा ऊँचा रहे हमारा।।
इस झंडे के नीचे निर्भय, हो स्वराज जनता का निश्चय
बोलो भारत माता की जय, स्वतंत्रता ही ध्येय हमारा
झंडा ऊँचा रहे हमारा।।
आओ प्यारे वीरों आओ, देश-जाति पर बलि-बलि जाओ
एक साथ सब मिलकर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा
झंडा ऊँचा रहे हमारा।।
इसकी शान न जाने पावे, चाहे जान भले ही जावे
विश्व-विजय करके दिखलावे, तब होवे प्रण-पूर्ण हमारा
झंडा ऊँचा रहे हमारा।।

अरुण यह मधुमय देश हमारा

जयशंकर प्रसाद

अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।।
सरल तामरस गर्भ विभा पर,नाच रही तरुशिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर, मंगल कुंकुम सारा।।
लघु सुरधनु से पंख पसारे, शीतल मलय समीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किए, समझ नीड़ निज प्यारा।।
बरसाती आँखों के बादल, बनते जहाँ भरे करुणा जल।

लहरें टकरातीं अनन्त की, पाकर जहाँ किनारा।।
हेम कुम्भ ले उषा सवेरे, भरती ढुलकाती सुख मेरे।
मंदिर ऊँघते रहते जब, जगकर रजनी भर तारा।।

सारे जहाँ से अच्छा

मुहम्मद इक़बाल

सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्ताँ हमारा,
हम बुलबुलें हैं इसकी, यह गुलिस्ताँ हमारा।।
गुरबत में हों अगर हम, रहता है दिल वतन में,
समझो वहीं हमें भी, दिल हो जहाँ हमारा।।
परबत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का,
वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।।
गोदी में खेलती हैं, जिसकी हजारों नदियाँ,
गुलशन है जिसके दम से, रश्क-ए-जिनाँ हमारा।।
ऐ आब-ए-रूद-ए-गंगा, वो दिन है याद तुझको,
उतरा तेरे किनारे, जब कारवाँ हमारा।।
मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना,
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा।।
सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्ताँ हमारा,
हम बुलबुलें हैं इसकी, यह गुलिस्ताँ हमारा।।

ध्वजा वंदना

रामधारी सिंह 'दिनकर'

नमो, नमो, नमो।
नमो स्वतंत्र भारत की ध्वजा, नमो, नमो!

नमो नगाधिराज - शृंग की विहारिणी!
नमो अनंत सौख्य - शक्ति - शील - धारिणी!
प्रणय - प्रसारिणी, नमो अरिष्ट - वारिणी!
नमो मनुष्य की शुभेषणा - प्रचारिणी!
नवीन सूर्य की नई प्रभा, नमो, नमो!
हम न किसी का चाहते तनिक अहित, अपकार।
प्रेमी सकल जहान का भारतवर्ष उदार।
सत्य न्याय के हेतु, फहर-फहर ओ केतु
हम विचरेंगे देश-देश के बीच मिलन का सेतु
पवित्र सौम्य, शांति की शिखा, नमो, नमो!
तार-तार में हैं गुँथा ध्वजे, तुम्हारा त्याग!
दहक रही है आज भी, तुम में बलि की आग।
सेवक सैन्य कठोर, हम चालीस करोड़
कौन देख सकता कुभाव से ध्वजे, तुम्हारी ओर
करते तव जय गान, वीर हुए बलिदान,
अंगारों पर चला तुम्हें ले सारा हिंदुस्तान!
प्रताप की विभा, कृषानुजा, नमो, नमो!

नौजवान आओ रे

बालकवि वैरागी

नौजवान आओ रे, नौजवान गाओ रे।।
लो कदम बढ़ाओ रे, लो कदम मिलाओ रे।
ऐ वतन के नौजवान, इक चमन के बागवान।
एक साथ बढ़ चलो, मुश्किलों से लड़ चलो।
इस महान देश को नया बनाओ रे।।
नौजवान...
धर्म की दुहाइयाँ, प्रांत की जुदाइयाँ।
भाषा की लड़ाइयाँ, पाट दो ये खाइयाँ।
एक माँ के लाल, एक निशां उठाओ रे।।
नौजवान...
एक बनो नेक बनो, खुद की भाग्य रेखा बनो।
सर्वोदय के तुम हो लाल, तुमसे यह जग निहाल।
शांति के लिए जहाँ को तुम जगाओ रे।।
नौजवान...
माँ निहारती तुम्हें, माँ पुकारती तुम्हें।
श्रम के गीत गाते जाओ, हँसते मुस्कराते जाओ।
कोटि कण्ठ एकता के गान गाओ रे।।
नौजवान...

जिस देश में गंगा बहती है

(शैलेन्द्र)

होठों पे सच्चाई रहती है, जहां दिल में सफाई रहती है
हम उस देश के वासी हैं, हम उस देश के वासी हैं
जिस देश में गंगा बहती है।।
मेहमां जो हमारा होता है, वो जान से प्यारा होता है
ज़्यादा की नहीं लालच हमको, थोड़े मे गुजारा होता है
बच्चों के लिये जो धरती माँ,सदियों से सभी कुछ सहती है
हम उस देश के वासी हैं, हम उस देश के वासी हैं
जिस देश में गंगा बहती है।।
कुछ लोग जो ज़्यादा जानते हैं, इन्सान को कम पहचानते हैं
ये पूरब है पूरबवाले, हर जान की कीमत जानते हैं
मिल जुल के रहो और प्यार करो, एक चीज यही जो रहती है
हम उस देश के वासी हैं, हम उस देश के वासी हैं
जिस देश में गंगा बहती है।।
जो जिससे मिला सिखा हमने, गैरों को भी अपनाया हमने
मतलब के लिये अन्धे होकर, रोटी को नही पूजा हमने
अब हम तो क्या सारी दुनिया, सारी दुनिया से कहती है
हम उस देश के वासी हैं, हम उस देश के वासी हैं
जिस देश में गंगा बहती है..।।

प्यारे भारत देश

(माखनलाल चतुर्वेदी)

प्यारेभारत देश
गगन-गगन तेरा यश फहरा
पवन-पवन तेरा बल गहरा
क्षिति-जल-नभ पर डाल हिंडोले
चरण-चरण संचरण सुनहरा
ओ ऋषियों के त्वेष
प्यारे भारत देश।।
वेदों से बलिदानों तक जो होड़ लगी
प्रथम प्रभात किरण से हिम में जोत जागी
उतर पड़ी गंगा खेतों खलिहानों तक
मानो आँसू आये बलि-महमानों तक
सुख कर जग के क्लेश
प्यारे भारत देश।।
तेरे पर्वत शिखर कि नभ को भू के मौन इशारे
तेरे वन जग उठे पवन से हरित इरादे प्यारे!
राम-कृष्ण के लीलालय में उठे बुद्ध की वाणी
काबा से कैलाश तलक उमड़ी कविता कल्याणी
बातें करे दिनेश
प्यारे भारत देश।।
जपी-तपी, संन्यासी, कर्षक कृष्ण रंग में डूबे
हम सब एक, अनेक रूप में, क्या उभरे क्या ऊबे
सजग एशिया की सीमा में रहता केद नहीं
काले गोरे रंग-बिरंगे हममें भेद नहीं
श्रम के भाग्य निवेश
प्यारे भारत देश।।
वह बज उठी बासुँरी यमुना तट से धीरे-धीरे
उठ आई यह भरत-मेदिनी, शीतल मन्द समीरे
बोल रहा इतिहास, देश सोये रहस्य है खोल रहा
जय प्रयत्न, जिन पर आन्दोलित-जग हँस-हँस जय
बोल रहा,
जय-जय अमित अशेष
प्यारे भारत देश।।

इस प्रकार देखा जाए तो भारतीय लोगों के दिलों में राष्ट्रवाद की भावना कवियों और फिल्मों ने जमकर की है। आज ये गीत लगभग हर भारतीय घरों में सुने और पढ़े जाते हैं। यह सच्चाई है कि एक भरतीय दुनिया के किसी भी कोने में रहे वह अपनी संस्कृति और सभ्यता से कटकर नहीं रह सकता है।उपरोक्त गीतों और कविताओं से भारतीयों का प्रेम इस बात को भी सिद्ध कर देता है कि भारत हमारे दिलों में बसता है और हम भारत में।

साक्षात्कार और खबरों के चैनल को सबस्क्राइब करें

सर्च करें : ओपन डोर न्यूज

Subscribe

खुले दिमाग़ के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

ओपन डोर न्यूज यूट्यूब चैनल हेतु आवश्यकता है प्रतिनिधियों की

एक महान योद्धा : महाराजा रणजीत सिंह

साल १८०७ में इतिहास के सबसे शक्तिशाली एवं पराक्रमी शासक माने जाने वाले रणजीत सिंह

१८१२ ईसवीं में महाराजा रणजीत सिंह जी ने अपना अधिकार जमा लिया था, उन्होंने कटक के गवर्नर जहांदाद को १ लाख रुपए की राशि देकर १८१३ में कटक पर अपना अधिकार कर लिया था।
सिक्खों के सबसे बड़े महाराजा रणजीत सिंह जी की सेना का १८१९ ईसवीं में कश्मीर के अफ़गान शासक जब्बार खां से मुकाबला हुआ, जिसमें रणजीत सिंह जी को जीत मिली और वे कश्मीर पर अपना अधिकार जमाने में सफल रहे।
इसके बाद अपने विजय अभियान को आगे बढ़ाते हुए १८२०-१८२१ ईसवीं में महाराजा रणजीत सिंह जी ने डेराजाता पर जीत हासिल की, फिर १८२३ ईसवीं में पेशावर को पराजित कर अपना अधिकार जमा लिया।
फिर १८३४ ईसवीं में पेशावर को पूर्व सिक्ख सम्राज्य में शामिल कर लिया गया, इसके बाद १८३६ ईसवीं में रणजीत सिंह जी ने अपनी सेना को भेजकर लद्धाख पर भी विजय हासिल कर ली।

महाराजा रणजीत सिंह जी १३ नवंबर, १७८० को बदरुखां आधुनिक गुजराती पाकिस्तान में गुजरांवाला में भारत में जन्में थे। वे मिस्ल के सरदार महासिंह और माई राज कौर की संतान थे। १० साल की उम्र में उन्होंने अपने पिता के साथ पहली लड़ाई लड़ी थी, दरअसल, वे शुरु से ही युद्ध-सैन्य कौशल से निपुण थे एवं उनके अंदर एक शासक वाले सभी गुण विद्यमान थे।
बचपन में ही वे चेचक बीमारी से ग्रसित हो गए थे, जिसकी वजह से उनकी बायीं आंख की रोश्नी भी कम हो गई थी। महाराजा रणजीत सिंह ने अपने जीवन के शुरुआती दिनों में काफी संघर्षों को झेला था। जब वे १२ साल के थे, उस दौरान उनके पिता की मृत्यु हो गई थी, जिसके कुछ दिनों बाद वे सुकरचकिया मिशेल के मिसलदार बने।
इसके अलावा उन पर हशमत खां नामक शख्स ने जानलेवा हमला भी किया था, हालांकि उसकी रणजीत सिंह जी को मारने की यह कोशिश नाकाम साबित हुई थी।
वहीं जब रणजीत सिंह जी १६ साल के थे, तब उनकी शादी मेहतबा कौर नाम की कन्या से कर दी गई।
अपनी सांस सदाकौर के कहने पर सिखों के सबसे महान शासक महाराजा रणजीत सिंह जी ने रामगदिया पर जोरदार हमला बोल दिया, हालांकि इस लड़ाई में उन्हें हार का सामना करना पड़ा था।

फिर इसके बाद करीब १७६७ में जब वे १७ साल के थे, तब उन्होंने स्वतंत्रतापूर्वक शासन करना शुरु किया था।

पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह १२ अप्रैल, साल १८०१ ईसवीं में बैसाखी के दिन रणजीत सिंह को पंजाब के महाराजा का ताज पहनाया गया। बाद में यही रणजीत सिंह पंजाब के शेर कहलाए थे।

अपने शासनकाल के दौरान उन्होंने छोटी-छोटी रियासतों अपने साथ मिला लिया एवं अपने राज्य को इतना अधिक समृद्ध एवं शक्तिशाली बना लिया कि उस दौरान शक्तशाली होने के बाबजूद भी ब्रिटिश ईस्ट इंडिया पंजाब पर अधिकार नहीं कर सकी।

महाराजा रणजीत सिंह जी अपनी दयालुता के लिए प्रसिद्ध थे, उनके शासनकाल में कभी किसी को मृत्यु दंड की सजा नहीं सुनाई गई। उन्हें अपनी दयालुता के कारण लाखबख़्श भी कहा जाता था।

रणजीत सिंह जब अपनी किशोर अवस्था में थे, तब उन्होंने अन्य मिस्लों के सरदारों को हराकर अपने सैन्य अभियान की शुरुआत की थी।

७ जुलाई, १७९९ को भांगी मिस्ल को हराकर लाहौर पर कब्जा कर अपनी पहली जीत हासिल की थी और फिर उन्होंने अपने सूर्य, प्रताप, साहब एवं पराक्रम के बल पर जल्द ही रणजीत सिंह जी ने पंजाब के कई मिसलों पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया एवं विशाल सिख सम्राज्य की स्थापना की थी।

साल १८०३ में खालसा नामक संगठन के नेतृत्वकर्ता एवं महान शासक रणजीत सिंह जी ने अकालगढ़ एवं साल १८०४ में पंजाब राज्य के डांग और कसूर पर जीत हासिल की थी।

१८०५ में रणजीत सिंह जी ने अमृतसर पर अधिकार कर लिया था। रणजीत सिंह द्वारा अमृतसर पर अपना कब्जा स्थापित कर लेने के बाद पंजाब राज्य की धार्मिक एवं राजनैतिक राजधानी अमृतसर एवं लाहौर पर उनका नियंत्रण हो गया था।

इसके बाद १८०६ ईसवीं में मिसल के रूप में अपना लोहा मनवाने वाले महाराजा रणजीत सिंह जी ने अपनी कूटनीति और अद्भुत राजनैतिक कौशल के बल परे गुजरात पर विजय हासिल कर ली थी।

दो गुटों में बंटे सिखों को एकत्र करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले महान शासक रणजीत सिंह जी ने साल १८०६ में सतलज पार के प्रदेशों को भी अपनी राजनैतिक क्षमता एवं कूटनीति से दोलाधी गांव एवं लुधियाना पर जीत हासिल की थी।

अपने विजय अभियान के दौरान साल १८०७ में इतिहास के सबसे शक्तिशाली एवं पराक्रमी शासक माने जाने वाले रणजीत सिंह जी ने जीरा बदनी और नारायणगढ़ पर जीत हासिल की। इसके बाद १८०७ में फिरोजपुर पर विजय प्राप्त की।

रणजीत सिंह और अमृतसर की संधि सिखों के महान शासक रणजीत सिंह जी के सैन्य अभियानों से खौफ खाकर सतलुज नदी के पार स्थित सिक्ख रियासतों ने अंग्रेजों से संरक्षण देने की गुजारिश की थी, ताकि वे सभी सुरक्षित रह सकें।

वहीं पहले तो गर्वनर जनरल लॉर्ड मिंटो ने सर चार्लुस मेटकॉफ को रणजीत सिंह जी से संधि करने के लिए भेजा था।

शुरुआत में तो रणजीत सिंह जी संधि के लिए तैयार नहीं हुए थे, लेकिन जब लॉर्ड मिण्टों ने चार्लुस मेटकॉफ के साथ अपनी विशाल सेना भेजी और अंग्रेजों की सैन्य शक्ति की धमकी दी थी, जिसके बाद रणजीत सिंह जी ने समय की नजाकत को समझते हुए २५ अप्रैल, १८०९ ईसवीं में अंग्रेजों से संधि कर ली थी, जो कि बाद में अमृतसर की संधि के नाम से प्रसिद्ध हुई।

कांगड़ा के शासक संसारचन्द्र जब कांगड़ा के शासक थे, उस दौरान अमरसिंह थापा ने करीब १८०९ ईसवीं में कांगड़ा पर हमला बोल दिया था।

जिसके बाद कांगड़ा की मदद के लिए रणजीत सिंह ने अपनी सेना भेज दी थी, इसके बाद अमरसिंह थापा वहां से रफूचक्कर हो गया और इस तरह कांगड़ा के दुर्ग पर महाराजा रणजीत सिंह का कब्जा हो गया।

साल १८१८ ईसवीं में रणजीत सिंह जी ने अपनी सेना के प्रमुख वीर जवान खड़ग सिंह और दीवानचंद को मुल्तान की विजय के लिए भेजा था, जिसके बाद १८१८ में मुल्तान पर महाराजा रणजीत सिंह जी का अधिकार हो गया था।

१८१३ ईसवीं में महाराजा रणजीत सिंह जी ने अपना अधिकार जमा लिया था, उन्होंने कटक के गवर्नर जहांदाद को १ लाख रुपए की राशि देकर १८१३ में कटक पर अपना अधिकार कर लिया था।

सिक्खों के सबसे बड़े महाराजा रणजीत सिंह जी की सेना का १८१९ ईसवीं में कश्मीर के अफ़गान शासक जब्बार खां से मुकाबला हुआ, जिसमें रणजीत सिंह जी को जीत मिली और वे कश्मीर पर अपना अधिकार जमाने में सफल रहे।

इसके बाद अपने विजय अभियान को आगे बढ़ाते हुए १८२०-१८२१ ईसवीं में महाराजा रणजीत सिंह जी ने डेराजाता पर जीत हासिल की, फिर १८२३ ईसवीं में पेशावर को पराजित कर अपना अधिकार जमा लिया।

फिर १८३४ ईसवीं में पेशावर को पूर्व सिक्ख सम्राज्य में शामिल कर लिया गया, इसके बाद १८३६ ईसवीं में रणजीत सिंह जी ने अपनी सेना को भेजकर लद्दाख पर भी विजय हासिल कर ली।

सिख सम्राज्य के संस्थापक एवं महान प्रतापी शासक महाराजा रणजीत सिंह जी ने २७ जून, १८३९ को अपनी अंतिम सांस ली। उनकी मौत के बाद उनके पुत्र दलित सिंह राज्य के उत्तराधिकारी बने। हालांकि बाद में उनके राज्य का विनाश हो गया।

सिख सम्राज्य की स्थापना करने वाले महाराजा रणजीत सिंह जी की मौत के बाद १८३९ ईसवीं में अंग्रेजों ने सिखों पर हमला बोल दिया था।

दरअसल फिरोजपुर की लड़ाई में सिख सेना के सेनापति लालसिंह ने अपनी सेना के साथ ही धोखेबाजी कर कोहिनूर हीरा को लूट लिया था एवं कश्मीर और हजारा राज्य छीन लिया था।

इसके बाद कोहिनूर लंदन ले जाया गया और ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया के ताज में जड़वा दिया था।

सिखों के सबसे बड़े नेता महाराजा रणजीत सिंह ने कोई भी औपचारिक शिक्षा नहीं ली थी, वो शुरु से ही अनपढ़ थे एवं महज १० साल की उम्र में ही एक वीर योद्धा की तरह तलवारबाजी, घुड़सवारी समेत अन्य युद्ध कौशल में निपुण हो गए थे।

महाराजा रणजीत सिंह जी ने बचपन से ही अपने जीवन में तमाम संघर्ष झेले थे, शुरुआती जीवन में चेचक की वजह से उनकी एक आंख चली गई थी। इसके साथ ही जब वे बेहद छोटे थे, तब उनके सिर से पिता का साया उठ गया था, जिसकी वजह से कम उम्र में ही उन पर पूरी जिम्मेदारी आ गई थी। जिससे वे बचपन से ही काफी कठोर बन गए थे।

सिक्खों के सबसे बड़े शासक महाराजा रणजीत सिंह जी न तो गौ मांस खाते थे और ना ही अपने दरबारियों को इसे खाने की कभी इजाजत देते थे।

सिख धर्म के महान शासक रणजीत सिंह जी एक धर्मनिरपेक्ष शासक थे, जिनकी सेना में हिन्दू, मुस्लिम समेत यूरोपीय योद्धा समेत जनरल शामिल थे।

महान शासक रणजीत सिंह जी के बारे में सबसे खास बात यह है कि वे सभी को एक समान समझते थे, शायद यही वजह है कि वे जब गद्दी पर बैठे तो कभी भी ताज नहीं पहना।

सिखों के सबसे बड़े शासक रणजीत सिंह जी को ऐतिहासिक गुरुद्वारा तख्त सिंह पटना साहिब और तख्त सिंह हजूर सिहाब बनवाने का भी श्रेय जाता है। आपको बता दें कि जहां पर १०वें सिख गुरु ने जन्म लिया वहां पर प्रसिद्ध पटना साहिब गुरुद्वारे का निर्माण हुआ और तख्त सिंह हजूर साहिब का निर्माण उस स्थान पर हुआ, जहां पर उनकी मृत्यु हुई थी।

महाराज रणजीत सिंह जी ने अमृतसर में स्थित सिखों के प्रमुख धार्मिक स्थल हरमिंदर साहिब यानि गोल्डन टेंपल का जीर्णोद्धार करवाया था।

शेर-ए-पंजाब के नाम से प्रसिद्ध महान सिख शासक रणजीत सिंह जी जब १३ साल के थे तब उन पर हशमत खां ने जानलेवा हमला किया था, लेकिन उस उम्र में ही वे इतने पराक्रमी थे कि हमलावर को मौत के घाट उतार दिया।

महाराजा रणजीत सिंह जी के शासनकाल के सबसे अच्छी बात यह थी कि उनके राज में कभी किसी को मृत्युदंड नहीं दिया गया था। वे बेहद उदारवादी एवं दयालु शासक थे, किसी राज्य को जीत कर वह अपने दुश्मनों को भी बदले में कुछ ना कुछ जमीन-जागीर दिया करते थे, ताकि उसे अपने जीवन निर्वाह के लिए दर-दर की ठोंकरे न खानी पड़ी।

स्रोत-विकिपीडिया

साक्षात्कार और खबरों के चैनल को सबस्क्राइब करें

Subscribe

सर्च करें : ओपन डोर न्यूज

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

ओपन डोर न्यूज यूट्यूब चैनल हेतु आवश्यकता है प्रतिनिधि की

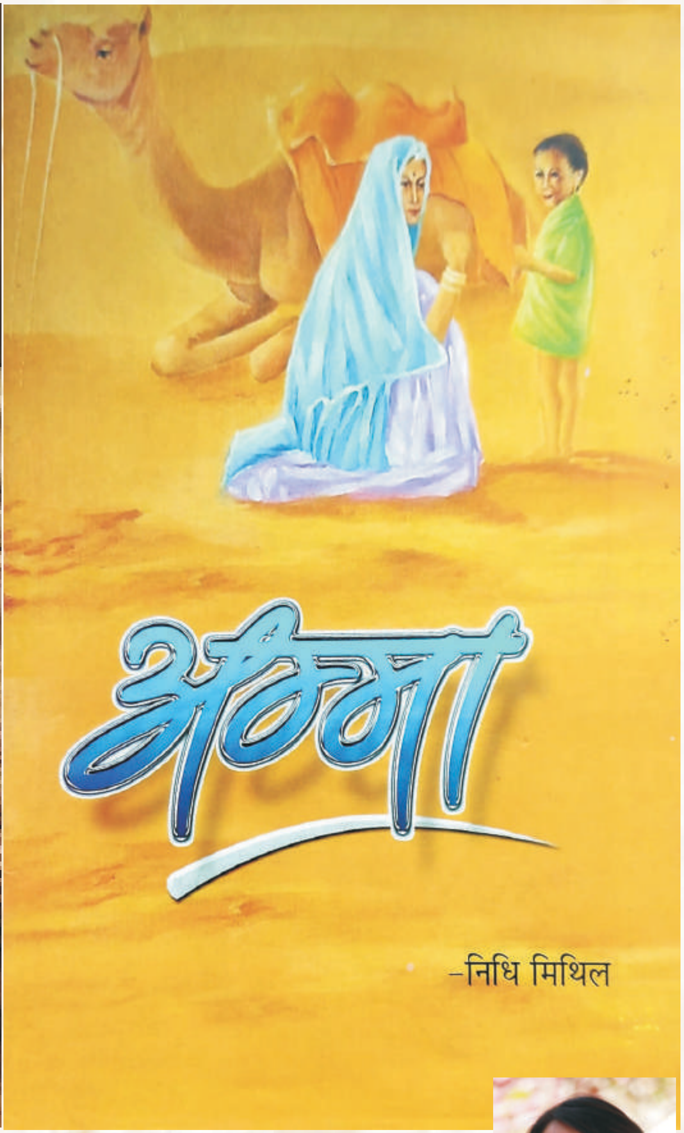

निधि मिथिल

'अम्मा'

लेखिका 'निधि मिथिल' मिथिल का यह उपन्यास 'अम्मा' बेहद मार्मिक और सामाजिक ताने-बाने से भरपूर है। जिसे हम आम पाठकों के लिए धारावाहिक रूप में प्रस्तुत है- पहला भाग

पाठ-१

अम्मा आज फिर चौंककर उठी। लगा दरवाजे की कुंडी बजी। जल्दी से उठकर दरवाजा खोलने गई, लगा समीर आ गया। जैसे ही उसने दरवाजा खोला, देखा सामने गोपाल खड़ा था।

समीर एक ही तो बेटा था अम्मा का। अपने पिता का बेहद लाडला। गाँव में एक दुकान थी और थोड़ी जमीन। उसी से गुजारा चलता था। अम्मा केवल समीर की ही नहीं, गाँव भर की अम्मा थी। नारी की परिभाषा का एक जीता-जागता सबूत, प्रेम बरसाने वाली, सभी के दुःख दर्द बाँटने वाली थी अम्मा। लेकिन आज अपने ही बेटे से दूर होने का गम अकेले उठाए जा रही थी।

'अरे मैय्या, जब भी दरवाजा खोलोगी, मुझे ही पाओगी।'- गोपाल मुस्कुराते हुए बोला।

'नहीं बेटा, मुझे लगा।' अम्मा बोली।

यही न कि समीर आ गया?' - बीच में ही गोपाल बोला।

'हाँ, पर इस बार पूरे दो महीने हो गए। अपनी बूढ़ी माँ की खबर लेने पता नहीं क्यों नहीं आया?' -अम्मा चिंतित स्वर में बोली। गोपाल ने देखा अम्मा के चेहरे पर उदासी छायी है। उसे यह देखकर अच्छा नहीं लगा।

'ऐ मेरी मैय्या।'- गोपाल ने अम्मा के गालों पर हाथ रखते हुए पूछा- क्या चाहिए तुझे? मुझसे बोल, मैं भी तो तेरा ही बेटा हूँ?'

'कुछ नहीं बेटा, बस समीर को देखने की बहुत इच्छा हो रही थी। क्या करूँ, कलेजे का टुकड़ा जो है।'- अम्मा बोली। मैय्या की बात सुनकर गोपाल का चेहरा उतर गया।

'न जाने मैय्या मुझे कब अपने कलेजे का टुकड़ा बोलेगी।'- गोपाल यह सोचते हुए वहाँ से चला गया।

अम्मा बाहर आकर आँगन में बैठ गई। चार कमरों का कच्चा घर था। सामने ही आँगन के कोने में बड़ा-सा आम का पेड़ था। थोड़ी-बहुत कलियाँ दिख रही थीं। दूसरे कोने में एक कुआँ था। उसके ऊपर एक बड़ी सी जाली लगी थी। अम्मा को अभी भी याद है, मानों कल की बात हो, जब समीर के बाबूजी ने कुएँ के ऊपर जाली डलवाई थी। तब समीर दो साल का था। उन्हें डर था कि कहीं समीर खेलते-खेलते कुएं में न गिर जाए। ऐसा लगा मानों अम्मा चुपचाप वहाँ बैठे-बैठे अतीत में चली गई हो।

'शारदा, तुम्हे तो समाजसेवा से वक्त ही नहीं मिलता। समीर कहीं घर पर अकेला हो और कुएँ में गिर जाए तो क्या करोगा?- बाबूजी ने अम्मा पर नाराज होते हुए उनसे पूछा था।
'हे भगवान, शुभ-शुभ बोलिए। मैं इतनी भी बावली नहीं कि छोटी-सी जान को घर में अकेला छोड़कर बाहर चली जाऊँ।' अम्मा बोली।
'नहीं, पर संभल कर चलने में ही समझदारी है।'- बाबूजी बोले। अम्मा की आँखों में नमी सी थी, मानों गुजरा वक्त आँखों के सामने आकर थम गया हो।
कितना सताता था समीर, जब वह ६ साल का था, अम्मा को अभी भी याद है।- अरे समीर, रुक जा, मत सता अपनी अम्मा को, चल खाना खा ले।' अम्मा समीर के पीछे भागते-भागते बोली-'अरे, तेरे बाबूजी को रात के दस बजेगें और फिर तूने दोपहर से कुछ खाया भी नहीं है।'- अम्मा बोली।
'नहीं बोला, तो नहीं।'- समीर ने चिल्लाते हुए जवाब दिया था।
'आ जा बेटा, तंग नहीं करते अपनी अम्मा को।'-अम्मा बोली।
पूरे आँगन में समीर ने अम्मा को नाच रखा था। तभी बगल वाले घर से बच्चे की जोर-जोर से रोने की आवाज आई। बगल वाले घर में सरोज अपने पांच साल के बेटे के साथ रहती थी। उसका पति शहर में ट्रक ड्राईवर था।
'समीर इधर आ, चल देखकर आते हैं, गोपाल क्यों रो रहा है?' - अम्मा ने समीर को बुलाते हुए कहा।
अम्मा की बात सुनकर, समीर झट से अम्मा के पास दौड़कर आया और अम्मा की अंगुली पकड़ ली। अम्मा ने दरवाजे की कुंडी लगाई और समीर को लेकर बाहर आ गई। बगल वाले घर के बाहर पहुँचते ही अम्मा ने आवाज लगाई, 'सरोज? ओ सरोज?' पर घर के भीतर से किसी की आवाज नहीं आई। गोपाल के भी रोने की आवाज बंद हो गई थी। अम्मा सीढ़ी चढ़कर दरवाजे के पास आई तो गोपाल रोते-रोते दौड़ते हुए अम्मा के पास आ गया।
अम्मा बोली- 'बेटा, माँ कहा है?'
रोते हुए गोपाल बोला- 'सो रही है, कुछ बोलती नहीं।' -अम्मा झट से अंदर गई। देखा तो सरोज बुखार से तप रही थी।
हे भगवान! कितना तेज बुखार है। अम्मा बोली। 'कब से चढ़ा है बुखार सरोज?' -अम्मा ने सरोज के सिर पर हाथ फेरते हुए धीरे से पूछा।
पर सरोज कुछ नहीं बोली, बस आँखों से आँसू बहते रहे। तभी अम्मा समीर से बोली- 'जा बेटा, सामने से डॉक्टर काका को जल्दी से बुला ला।'
'नहीं अम्मा, बाहर अंधेरा है, मुझे डर लगता है।' -समीर सहम कर बोला।
'ठीक है, तू इधर आ, गोपाल के पास रुक, मैं ही बुलाकर लाती हूँ।'- अम्मा बोली।
सरोज के पास जाकर अम्मा धीरे से बोली- 'सरोज, तू चिंता मत कर, मैं अभी डॉक्टर काका को बुला कर लाती हूँ।'
अम्मा झट से घर के बाहर निकल गई। बाहर चारों तफर अंधेरा था। सन्नाटा देखकर एक बार तो अम्मा भी डर गई, पर जैसे ही सरोज का ख्याल आया, वह आगे बढ़ गई। कुछ ही देर में वह डॉक्टर के घर के सामने थी। मन में ख्याल आया कि इतनी रात में डॉक्टर को उठाना ठीक रहेगा क्या?
हिम्मत कर दरवाजे की कुंडी बजाई। आवाज सुनकर डॉक्टर बाहर आये।
'अरे शारदा बहन? आप इस समय। सब ठीक तो है?' -डॉक्टर ने पूछा।
'नहीं, आप मेरे साथ सरोज को देखने चल सकते हैं?' -अम्मा ने पूछा।
'वही न, जिसका पति शहर में ट्रक ड्राइवर है?' - डॉक्टर ने पूछा।
'जी, वही। उसका पति शहर गया है, घर पर उसका बेटा गोपाल ही है, और वह बुखार से तप रही है बेचारी। आप ही बताइए, वो कैसे आ पायेगी?' - अम्मा बोली।
'दो मिनट रुको, मैं आया।'- कहकर डॉक्टर अंदर चले गए।
दस मिनट में ही डॉक्टर को लेकर अम्मा सरोज के घर पहुँच गई।
सरोज को दखकर डॉक्टर बोले-'इसको तो तेज ज्वर है! इंजेक्शन दे देता हूँ, फिर बाद में गोलियाँ दे देना। रात को कुछ तकलीप हुई तो फिर से बुला लेना।'
इंजेक्शन देकर डॉक्टर चले गए। अम्मा वहीं सरोज के पास बैठ गई। नीचे दरी पर गोपाल और समीर, सहमे-सहमे से बैठे थे।
'अब डॉक्र काका ने इंजेक्शन दिया है, माँ ठीक हो जाएगी।'- अम्मा गोपाल को तसल्ली देते हुए बोली।
तभी सरोज धीरे से बोली- 'भाभी, ओ भाभी?'
सरोज की आवाज सुनकर अम्मा झट से सरोज के करीब गई- 'हाँ सरोज, बोलो।' अम्मा ने कहा।
'शाम को एक आदमी शहर से आया था, उसने बताया कि गोपाल के पिता का एक्सीडेंट हुआ है, उन्हें अस्पताल में दाखिल करा दिया है।'- सरोज रोते-रोते बोली।
'हे भगवान! पर तुमने तब ही क्यों नहीं आवाज लगाई?' - अम्मा बोली।
'मैं तो खुद ही सुनकर अपनी सुध-बुध खो बैठी थी।'- सरोज बोली।
तभी समीर के बाबूजी की आवाज आई- 'शारदा, ओ शारदा।'
आवाज सुनकर अम्मा बाहर आई। बाबूजी की आवाज सुनकर समीर भी दौड़कर बाहर आया और उनकी गोद में चढ़ गया। अम्मा ने पति को सारी बात बताई। पूरी बात सुनकर उनके चेहरे के भाव बदल गए।
'सुनो शारदा, मैं अभी शहर जाकर पता लगाता हूँ, तुम यहीं सरोज बहन और बच्चों के पास रहो।'- कहकर समीर के पिता वहाँ से चले गए। थोड़ी ही देर में वे शहर की ओर रवाना हो गए। अम्मा वापस सरोज के पास लौटी तो देखा उसे नींद लगी थी।
'शायद इंजेक्शन का असर है।' अम्मा ने सोचा।
तभी अम्मा को ध्यान आया कि बच्चे भूखे होंगे। अम्मा घर जाकर खाना परोस कर थाली ले आई। बड़े प्यार से दोनों को अपने हाथों से खाना खिलाया। दोनों बच्चे भूखे थे। अच्छे से खाना खाया।
'अम्मा, मुझे नहीं आ रही है।'- समीर बोला।
'और मुझे भी।' - गोपाल ने कहा।
'चलो अब दोनो पानी पीकर मुँह हाथ धोकर सो जाओ।'- अम्मा ने बच्चों से कहा।
दोनों बच्चे अम्मा की बात सुनकर उठ गए। अम्मा सरोज के लिए खाना लेने चली गई।
कुछ देर बाद जब लौटी तो देखा, दोनो बच्चें वहीं दरी पर गहरी नींद में सो रहे थे। जैसे ही सरोज के पास खाना लेकर गई तो देखा सरोज का शरीर फिर से बुखार से तप रहा है।
'तुम क्यों चिंता कर रही हो, सरोज, समीर के बाबू जी गए हैं शहर।'- अम्मा सरोज से बोली।
अंदर ही अंदर अम्मा को एक डर सा खाए जा रहा था। सरोज का बुखार तेजी से बढ़ रहा था। मन में ख्याल आया कि डॉक्टर को बुलाने जाये, पर सरोज को किसके भरोसे छोड़कर जाती। समीर के बाबू जी का भी कोई पता नहीं था। दोनो बच्चे भी गहरी नींद में सो रहे थे।
सुबह के नौ बजे गए। सरोज की तबियत और बिगड़ गई। दोनों बच्चे अब भी गहरी नींद में सो रहे थे। अम्मा की आँखों से नींद मानो कोसो दूर थी। तभी अम्मा ने देखा कि सरोज की सांस तेजी से चलने लगी। अम्मा घबड़ा गई और दौड़कर डॉक्टर को बुलाने चली गई।
जैसे ही डॉक्टर व अम्मा वापिस आए, देखा तो सरोज दूसरी दुनिया में जा चुकी थी। अम्मा जोर से रो पड़ी। सामने ही मासूम गोपाल, इन अब बातों से अंजान गहरी नींद में सो रहा था। उस मासूम को क्या पता कि उनकी जननी अब उसे कभी लोरियाँ नहीं सुना पाएगी।

पाठ-२

तभी बाहर से समीर के बाबूजी ने धीरे से आवाज लगाई- 'शारदा, ओ शारदा।'
आवाज सुनकर अम्मा बाहर आई।
'बहुत बुरी खबर है शारदा, गोपाल के पिता का देहांत हो गया है।'- बुझे स्वर से समीर के बाबूजी बोले। अम्मा बुत-सी खड़ी रही।
'शारदा तुमने सुना नहीं, मैं क्या बोल रहा हूँ।'- समीर के बाबूजी ने अम्मा को हिलाते हुए पूछा।
'हाँ सुना।' आँखों से आसुँओं की झड़ी बहाते हुए अम्मा बोली- 'सरोज भी अपने पति के साथ ही गोपा को इस दुनिया में अकेला छोड़कर चली गई।'- अम्मा बोली।
समीर के पिता की भी आँखों से आसुँओं की धार बहने लगी। थोड़ी ही देर में पूरा गांव इकट्ठा हो गया। पूरे गाँव को मानों जैसे सांप सूंघ गया हो।
अम्मा के लिए सरोज छोटी बहन के समान थी। अपने सारे सुख-दुख अम्मा से ही तो बताती थी। सरोज के दूर का एक चचेरा भाई था जो कभी साल-दो-साल में नजर आता था। सुसराल में केवल बूढ़ी सास थी जो चार साल पहले ही चल बसी थी।
'अम्मा ओ अम्मा, मेरी माँ ऐसे क्यों सो रही है कब से?उठाओं न उसे।'- नन्हा गोपाल अम्मा की साड़ी खींचते हुए बोला।
अम्मा ने गोपाल को जोर से खींचकर गले से लगा लिया। उसके इस सवाल का शायद उसके पास कोई जवाब नहीं था।
'अम्मा बोलो ना।' गोपाल चुप नहीं हुआ।
'बेटा, उसे गहरी नींद आई है उसे सोने दे- वह सपने में भगवान से मिलने गई है। मैं हूँ न तेरे पास'- अम्मा खुद को संभालते हुए गोपाल से बोली।
'और पिताजी?' गोपाल से पूछा।
'बेटा वे इतनी दूर माँ को अकेले कैसे जाने देते, इसलिए वे भी माँ के साथ गए हैं।' अम्मा बोली।
'हे भगवान, यह कैसा न्याय है तेरा जो सीधे सच्चे इंसानों की बलि लेता है।'- अम्मा मन ही मन में बोली।
कुछ ही देर में पूरा गाँव सरोज घर के सामने इकट्ठा हो गया था। सभी लोग सब गोपाल की ही बात कर रहे थे।
'इस अभागे का अब क्या होगा?' - एक बोला।
'गोपाल तो अब अनाथ हो गया।'- दूसरा बोला।
'जाने कैसी किस्मत लेकर जन्मा है?' - तीसरा बोला।
'बेचारे के सिर पर अब किसी का साया नहीं रहा'- चौथे आदमी ने कहा। दस लोग दस तरह की बातें।
दोपहर तक गोपाल के पिता का शव गाँव लाया गया। सभी के आँखो से आसूँ बरस रहे थे।

समीर के बाबूजी ने अम्मा को धीरे से आवाज लगाई' शारदा ओ शारदा'- आवाज सुनकर अम्मा बाहर आई।
'जाकर गोपाल के कपड़े बदल दो।'- वे बोले।
सुनकर अम्मा का दिल सहम गया। गोपाल का चेहरा उनकी आंखों के सामने आ गया।
'हे भगवान, यह कैसी परीक्षा ले रहा है हमारी?' - अम्मा बोली।
खुद को संभालते हुए अम्मा अंदर गई। देखा तो गोपाल गहरी नींद में सोया था, अपने नसीब से अंजान। अम्मा ने गोपाल के सिर पर हाथ फेरते हुए उसे बड़े प्यार से आवाज लगाई।
'गोपाल बेटा, उठ देख सूरज सिर पर आ गया है'- अम्मा बोली।
गोपाल एकदम से उठ गया। 'अम्मा, माँ कहा है? मुझे माँ के पास जाना है।'- गोपाल बोला।
'माँ के पास ही ले चल रही हूँ, पहले तू तैयार हो जा'- अम्मा बोली।
गोपाल उठकर चला गया। अम्मा वहीं चुपचाप बैठी न जाने कहाँ खो गई। कुछ ही देर में गोपाल अम्मा के पास आकर बोला-'अम्मा, उठ चल माँ के पास, मैं तैयार हो गया हूँ।'
अम्मा ने गोपाल के मायूस चेहरे की ओर देखा और जोर से रो पड़ी।
'अरे अम्मा, रो क्यो रही हो? चलो ना जल्दी।'- गोपाल ने मासूमियत से कहा।
अम्मा कुछ नहीं बोली और रोते-रोते बाहर आ गई। समीर के बाबूजी के पास आकर बोली- 'मुझसे यह सब नहीं होगा, उस मायूस को क्या पता कि कुछ ही देर में अपने ही हाथों उसे अपने माता-पिता को अग्नि देनी है।'
'शारदा हिम्मत से काम ले, अब हमें ही उस मायूस को संभालना है। तू फिकर मत कर, मैं जाकर गोपाल को लेकर आता हूँ।'- समीर के बाबूजी बोले।
कुछ ही देर में समीर के बाबूजी गोपाल को लेकर बाहर आ गए। साथ में समीर भी था। सरोज के पति के शब को श्मशान ले जाया गया। नन्हा सा गोपाल सभी बातों से अंजान अपने सारे कर्तव्य निभाता गया। उसे क्या पता अग्नि देने के बाद उसके माता-पिता का शरीर मिट्टी में मिल जाएगा। पूरा गाँव शोकाकुल था।
शाम तक गोपाल के माता-पिता की अंतिम क्रिया संपन्न हो गई। अम्मा, समीर के बाबूजी, गोपाल, समीर व गाँव के चार-पाँच लोग आँगन में चुपचाप बैठे थे। सभी के मन में इस अनहोनी घटना से उथल-पुथल मची हुई थी।
रात को समीर के बाबूजी अम्मा से बोले-'शारदा अब तुम ही गोपाल की माँ हो। आज से हम दोनों की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। अब हमारे एक नहीं दो-दो बेटे हैं।'
अम्मा चुपचाप अपने पति का चेहरा देखती रही। 'तुमने सुना नहीं, मैंने क्या बोला'- वे फिर बोले।
'आपका दिल कितना बड़ा है जी, मैं धन्य हो गई जो आप जैसा जीवनसाथी मिला।'- अम्मा बोली।
तभी गोपाल दौड़ता हुआ अम्मा के पास आया- अम्मा, अम्मा, माँ और पिताजी कहां गए हैं?' गोपाल ने पूछा।
'बेटा वे दोनो भगवान से मिलने गए हैं।'- अम्मा बोली।
'अम्मा, पिताजी किसमें बैठकर भगवान से मिलने गए हैं?' - गोपाल ने अम्मा से पूछा।
'अरे पागल, तुझे इतना भी नहीं पता, तेरे पिताजी के ट्रक में'- समीर बीच में बोल पड़ा।
'नहीं, माँ ट्रक में नहीं जाएंगी क्योंकि माँ को ट्रक बिल्कुल पंसद नहीं है, उन्हें ट्रक में बैठने से भी बहुत डर लगता है'- गोपाल बोला। 'बताओं न अम्मा दोनों किसमें गए हैं?' -गोपाल ने फिर से अम्मा से पूछा।
'उनके लिए भगवान ने बहुत सुंदर फूलों से सजा रथ भेजा था, दोनों उसमें बैठकर गए हैं'- अम्मा अपने आसूँ पोंछते हुए गोपाल को समझाते हुए बोली।
'मैं दोनों से कभी बात नहीं करूगाँ मुझे क्यों नहीं ले गए?' - रुठे स्वर गोपाल बोला।
गोपाल की बात सुन अम्मा ने झट से गोपाल को सीने से लगा लिया। वह बोली- नहीं मेरे बच्चे ऐसा नहीं कहते तेरी अम्मा तुझे कहीं नहीं जाने दूंगी।
'अच्छा चलो मैं अब दोनों के लिए खाना बनाती हूँ'- अम्मा बात बदलते हुए बोली।
अम्मा उठकर रसोईघर में चली गई। थोड़ी ही देर में दोनों बच्चे खाना खाकर सो गए।
'चलिए, समीर के बाबूजी आप भी कुछ खा लीजिए।'- अम्मा बोली।
'नहीं शारदा, गले के नीचे निवाला भी नहीं उतरेगा।'- बाबूजी बोले।
'जीने के लिए तो खाना पड़ेगा जी।'- अम्मा समझाते हुए बोली।
'अब तुझे ही गोपाल को माँ को प्यार देना है।'- बाबूजी बोले।
'और है ही कौन इस नन्हीं सी जान का हमारे सिवा।'- अम्मा बोली। न जाने कितनी रात तक दोनों आंगन में चुपचाप बैठे रहे मानो आसमाँ के तारों में सरोज और उसके पति को निहार रहे हों।

पाठ-३

अगले दिन गोपाल उठते ही जोर-जोर से रोने लगा। 'मां, मां, मुझे माँ के पास जाना है।' गोपाल रोते हुए बोला
'गोपाल अच्छे बच्चे ऐसे जिद नहीं करते।'- अम्मा समझाते हुए बोली।
'नहीं, मुझे माँ चाहिए इसी वक्त।'- गोपाल जोर जोर से रोते हुए बोला।
'अच्छा-अच्छा चल, पहले मुँह धोकर कुछ खा ले फिर माँ के पास चलेंगे'- अम्मा बोली।
दिन-भर तो गोपाल को किसी तरह से समझा-बुझाकर अम्मा ने संभाल लिया पर रात को फिर गोपाल जिद करने लगा। तभी अम्मा बोली, 'चल गोपाल, तुझे एक कहानी सुनाती हूँ।
'हां-हां, अम्मा मैं भी सुनूंगा'- समीर बोला
'किसकी कहानी सुनाओगी?' - गोपाल ने पूछा।
'कन्हैया की'- अम्मा बोली।
यह कन्हैया कौन है?' - बीच में ही समीर ने पूछा।
'अरे बेटा कृष्ण भगवान को ही कन्हैया कहते हैं।'- अम्मा ने बताया।
अम्मा बोली-'कृष्ण भगवान को जन्म तो दिया था देवकी ने पर उनको पाला यशोदा माँ ने। जानता है गोपाल, कृष्ण को सभी गोपाल ही कहकर पुकारते थे और यशोदा को मैय्या?' '
'मैय्या का क्या मतलब?' - गोपाल ने पूछा।
'मैय्या मतलब माँ, अम्मा' - अम्मा बोली।
अरे इसका मतलब, तू भी तो मेरी मैय्या है।'- गोपाल धीरे से बोला।
इतने छोटे से बच्चे के मुँह से मैय्या शब्द सुनकर अम्मा की ममता जाग उठी। उसने गोपाल को सीने से लगा लिया। हाँ मेरे गोपाल, मैय्या तेरी मैय्या ही हूँ।'- अम्मा बोली और उनकी आँखों से आंसुओं की धार बहने लगी।
अचानक अम्मा की आँखे भर आई। वे समझ गई कि उसकी बात से गोपाल के दिल को ठेस पहुँची है। वह तुरन्त उठकर बाहर आ गई। देखा तो सामने ही चबूतरे पर गोपाल बैठा था। अरे गोपाल, इधर आ अपनी मैय्या के पास।'- अम्मा उसे मनाते हुई बोली।
'तुझे मालूम है न मैय्या कि मैं और कहीं नहीं जा सकता इसलिए मेरा दिल दुखाती है।'- गोपाल रुंआसे स्वर में बोला।
अरे बेटा एक बेटे ने तो मुझे कब का भुला दिया और छोड़कर चला गया, इस बूढ़ी का बस तू ही तो एक सहारा है, जो दो वक्त की रोटी खिला देता है।'- अम्मा बोली।
ऐसे मत बोल मैय्या, अब और दिल मत दुखा चल घर चलते हैं।'- गोपाल अम्मा का हाथ पकड़कर उठ गया।
घर में आकर गोपाल ने अम्मा को बिस्तर पर लिटा दिया और उसके पैर दबाने लगा।
'अब आराम कर मैय्या, तू बहुत थक गई है।'-गोपाल बोला। इधर गोपाल अपनी मैय्या की सेवा में लगा था और उधर समीर जिससे अम्मा का खून का रिश्ता था शहर में चालीस हजार की नौकरी कर अच्छे से जिंदगी बसर कर रहा था। वही समीर जिसके लिए अम्मा ने अपनी कौड़ी-कौड़ी खर्च कर दी थी।
'अरे समीर, कल जरा मार्किट के लिए जाना है शॉपिंग के लिए मुझे २० हजार रुपये चाहिए दे देना'- समीर की पत्नी शोभा बोली।
'अरे तुम २० हजार क्या २० लाखा माँगों डियर, तुम पर तो जान न्यौछावर है।'- समीर ने हंसते हुए कहा।
'शोभा, विक्की कहाँ गया?' - समीर ने पूछा।
'अगले ही महीने कॉलेज की परीक्षा है तो पढ़ाई में लगा है'- शोभा बोली।
अरे भाई, इकलौता बेटा है हमारा, हमें उसकी हर जरूरत का ख्याल रखना चाहिए '- समीर गर्व से बोला।
'अच्छा समीर, अगले महीने की १८ तारीख को मेरी सहेली के घर पार्टी है तो मेरे लिए अपनी पसंद की साड़ी ले आना।'- शोभा समीर से बोली।
अरे क्या, १८ तारीख आने वाली है?' -समीर चिंतित स्वर से बोला।
'क्यो, ये अचानक तुम्हें क्या हो गया?१८ तारीख को क्या कोई भूचाल आने वाला है?' - शोभा हँसते हुए बोली।
'अरे अम्मा से मिलने नहीं गया दो महीने से' - समीर बोला
ओफ्फो, तुम तो ऐसे बोल रहे हो जैसे कोई तूफान आ गया हो, चले जाना।'- शोभा बोली।
'नहीं शोभा, उसकी जिंदगी में अब है ही क्या, सोच रहा हूँ कुछ दिन उसे यहाँ'-समीर बोला।
बीच में ही शोभा बोल पड़ी- 'देखो समीर, तुम्हारी माँ को गाँव में रहने की आदत है। उन्हें यहाँ का रहन-सहन शायद पसंद नहीं आए।'- शोभा व्यंग्य में बोली।
'देखो शोभा, बाबूजी को गए बहुत साल हो गए सोचता हूँ कि एक बार तो ले ही आऊं लोग क्या कहेंगे और फिर गांव में जो दुकान है उसको भी बेचकर थोड़ा-बहुत पैसा मिल जाएगा।' - समीर बोला।
'तो फिर ठीक है पर देखो मुझे कोई सिरदर्दी नहीं चाहिए. ..।' शोभा बोली
अगले ही दिन समीर गांव के लिए रवाना हो गया। उसे याद आया कि १०वीं के बाद जो उसने गाँव छोड़ा था फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा था। जब भी पैसें की जरूरत होती बाबूजी को इत्तला कर देता और ४-५ दिन में ही उसे पैसे मिल जाते। पढ़ाई पूरी होते ही उसने बैंक की परीक्षा दी और तुरंत उसे नौकरी मिल गई। उसे अभी भी याद है वह दिन जब उसे तरक्की का पत्र मिला था और अगले ही दिन उसे खबर मिली की उसके बाबूजी नहीं रहे। तो तब वह तुरन्त गांव के लिए रवाना हो गया था।

घर पहुँचा तो देखा अम्मा का रो-रोकर बुरा हाल है। गोपाल अम्मा को दिलासा दे रहा था। अम्मा समीर को देखती ही उससे लिपट गई।
'समीर बेटा, तेरे बाबूजी हमें छोड़कर चले गए।'- रोते-रोते अम्मा बोली।
'मत रो अम्मा'- समीर अम्मा को चुप कराते हुए बोला।
बाबूजी की अंतिम क्रिया होने के बाद समीर अम्मा के पास आया। अम्मा के आसूँ मानो थमने का नाम ही नहीं ले रहे थे। गोपाल और समीर वहीं अम्मा के पास बैठकर उन्हें तसल्ली देते रहे।
कुछ देर बाद समीर ने गोपाल को इशारा किया। दोनो उठकर बाहर आ गए।
'गोपाल तू ही बता मैं क्या करूँ?'- समीर ने गोपाल से पूछा।
'हुआ क्या?' - गोपाल ने पूछा।
'किसी भी हालत में मुझे कल शहर वापस जाना है।' - समीर बोला।
'तू पहले मुझे सारी बात साफ-साफ बता।' - गोपाल ने कहा।
अब तुझे क्या बोलूँ, बाबूजी के देहांत के एक दिन पहले ही मुझे मेरी तरक्की का पत्र मिला। अब तू ही बता मैं क्या करूँ?'- समीर चिंतित स्वर में बोला।
'मामला गम्भीर है।'- गोपाल बोला।
'तू ही बता मैं अम्मा से क्या और कैसे कहूँ?' - समीर ने गोपाल से पूछा।
एक काम करते हैं, तू अम्मा से बोल तो सही कल जाने की बात, फिर आगे की बात में संभालता हूँ।' गोपाल ने समीर को तसल्ली देते हुए कहा।
'शुक्रिया तेरा, हर बात तू मेरी बात संभाल लेता है, तू नहीं होता तो मेरा क्या होता?' - समीर बोला।
'छोटा भाई हूँ जो तेरा, अब चल अंदर चलते हैं?' - गोपाल बोला।
दोनो अंदर आ गए। अम्मा वहीं दरी पर नीचे बैठी थी।
अम्मा, तुझे कुछ बात करनी थी।'- समीर अम्मा के पास आकर धीरे से बोला।
अम्मा कुछ नहीं बोली, केवल सिंर उठाकर समीर की तरफ देखा।
अम्मा, मुझे कल सुबह ही वापस जाना है।'- समीर बोला।
अम्मा, मेरा कल जाना बेहद जरूरी है।' - समीर फिर से बोला।
'बेटा, अभी तो तेरे बाबूजी की चिता की राख भी ठंडी नहीं हुई है और तू..।'- अम्मा खुद को संभालते हुए बोली।
अम्मा मुझे नौकरी में तरक्की मिली है और कल ही ऑफिस जाना बहुत जरूरी है नहीं तो..' - समीर बोला।
तभी गोपाल बात को संभालते हुए बीच में बोला- 'समीर, तू जा बाबूजी की यही इच्छा थी कि तू बहुत बड़ा अफसर बने, अब जब उनकी इच्छा पूरी हो रही है तो तू पीछे मत हट। मैं हूँ ना मैय्या के पास।'
'गोपाल, मैं तो रुक जाता पर नहीं गया तो प्रमोशन अगले साल के लिए टल जाएगा।' - समीर धीमे स्वर में बोला।
'तू जा समीर, अपने बाबूजी की इच्छा पूरी कर।' - अम्मा बोली।
अम्मा, मैं तुझे जल्द ही शहर ले जाऊँगा'- समीर बोला।
अम्मा कुछ न बोल सकी, सब आँखों से टप्प-टप्प आँसू बह रहे थे।
'अम्मा थोड़े पैसे चाहिए थे, अभी तनख्वाह बहुत कम है शायद प्रमोशन के बाद बढ़े।'- समीर बोला।
'बेटा, मेरे पास क्या बचा है, दुकान भी बंद है - हाँ मेरे हाथ में दो सोने की चूड़ियाँ है, इन्हें ले जा, अब मुझे इनकी जरूरत नहीं' - अम्मा चूड़ियाँ उतारते हुए बोली।
समीर ने चूड़ियाँ लीं और बोला- अम्मा, पैसे मिलते ही मैं तेरे लिए दो नहीं चार सोने की चूड़ियाँ बनवा दूगाँ।'
तभी खनखनाहट की आवाज से समीर चौंक गया।
'अरे समीर भैय्या, घर आ गया, कहाँ खो गए थे?' - तांगे वाला बोला 'वो खनखनाहट चूड़ियों की नहीं घोड़े के पैरों के घुंघरुओं की थी।'

शेष अगले अंक में.....

हिंदी साहित्य की आत्मा गीतों में बसती है

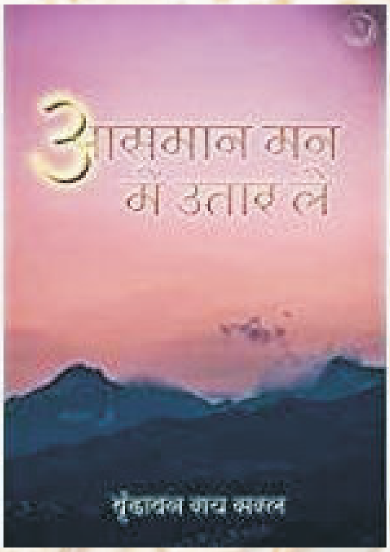

प्रगतिशील लेखक संघ सागर के तत्वावधान में प्रगति शील लेखक संघ सागर के कार्यालय में वरिष्ठ कवि एवं शायर बृंदावन राय सरल की प्रकाशित पुस्तक 'आसमान मन में उतार ले' का विमोचन किया गया। जिसकी अध्यक्षता प्रलेस सागर के अध्यक्ष श्री टीकाराम त्रिपाठी ने की श्री पीआर मलैया जी वरिष्ट कवि ने संचालन किया एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. गजाधर सागर के सानिध्य में हुआ। जिसकी भूमिका में देश की प्रसिद्ध कथाकार डॉ. शरद सिंह ने बृंदावन राय सरल जी को श्रेष्ठ गीतकार और श्रेष्ठ ग़ज़लकार लिखा है। सरल जी ने विमोचन के दौरान गीत पढ़ा, 'अपना जीवन पथ सुधार ले। आसमान मन में उतार ले।' दूसरा गीत, 'घर भर की खुशहाली बिटिया। खुश्बू वाली डाली बिटिया।'
यह सच है कि हिन्दी साहित्य की आत्मा गीतों में बसती है। आज दुख होता है यह देखकर कि हर कवि ग़ज़ल की ओर भाग रहा है। इस संकट के निदान हेतु मैंने गीत लिखे हैं। जबलपुर के कवि संगम त्रिपाठी जी ने अपनी भूमिका में सरल जी को हरफन मौला मर्मज्ञ लिखा है। अध्यक्षता कर रहे श्री टीकाराम त्रिपाठी ने भी सरल जी बधाई प्रेषित करते उनके गीतों की प्रशंसा की। इसके बाद कवि गोष्ठी में श्री सतीश पांडेय, क्रांति जबलपुरी, श्रीमती सुमन झुडेले और ज्योति झुडेले, मुकेश तिवारी, एम के खरे, नलिन जैन, वीरेन्द्र प्रधान, नम्रता फुसकेले, कैलाश तिवारी ने रचना पाठ किया। तथा सभी ने बृंदावन राय सरल को उनकी विमोचित किताब के लिए बधाई प्रेषित की। प्रेदेश सागर की तरफ से बृंदावन राय सरल का शाल श्रीफल से सम्मान किया गया। कार्यक्रम के अंत में प्रेट्रिस फुसकेले ने आभार व्यक्त किया।

बृंदावन राय सरल सागर एमपी
सचलभाष ७८६८२१८५२५

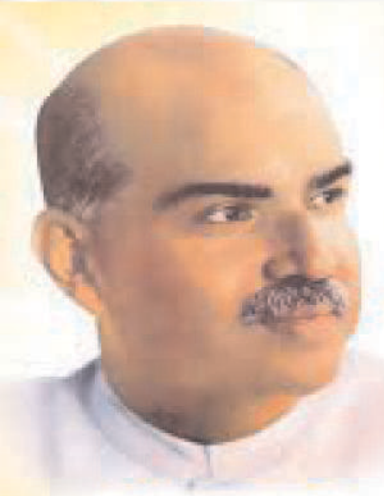

राष्ट्रवाद के सच्चे महानायक
डॉ. मुखर्जी

भारत का जब पहला मंत्रिमंडल पंडित जवाहरलाल नेहरू के प्रधानमंत्री के नेतृत्व गठित हुआ तब महात्मा गाँधी और सरदार पटेल के अनुरोध पर डॉ मुखर्जी पहले मन्त्रिमण्डल में शामिल हुए और उन्हें उद्योग से जुड़े महत्वपूर्ण विभाग का जिम्मेदार पद सौंपा गया। संविधान सभा तथा प्रान्तीय संसद के सदस्य और केन्द्रीय मन्त्री होने के नाते राजनीति जीवन में उन्होंने अपना विशिष्ट स्थान बना लिया। लेकिन उनके राष्ट्रवादी चिन्तन के कारण अन्य नेताओं के साथ हमेशा मतभेद रहा। वे हमेशा राष्ट्रीय हितों की प्रतिबद्धता को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता देते रहे।

भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी भारतीय इतिहास में ऐसे अनेक चैतन्य महापुरुषों ने देश की माटी को प्रणम्य बनाने एवं कालखंड को अमरता प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन्हीं कीर्तिवान महान पुरुषों में भारत केसरी डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का नाम सश्रद्धा एवं गर्व से लिया जाता है। भारतीय जनसंघ के संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म ६ जुलाई १९०१ में कलकत्ता में हुआ था। वे बैरिस्टर और शिक्षाविद थे तो कुशल समाज-राष्ट्र निर्माता भी थे। उन्होंने पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के मंत्रिमंडल में उद्योग और आपूर्ति मंत्री के रूप में कार्य किया। हालांकि नेहरू-लियाकत समझौते के विरोध में मुखर्जी ने नेहरू मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की मदद से उन्होंने १९५१ में भारतीय जनसंघ की स्थापना की। १९८० में यही भारतीय जनता पार्टी बन गई। वे भारत को एक हिन्दू राष्ट्र एवं स्व-संस्कृति के अनुरूप विकसित होते हुए देखना चाहते थे। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिये उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया। सचमुच! वह कर्मयोद्धा कर्म करते-करते कृतकाम हो गया।

अपने पिता सर आशुतोष मुखर्जी का अनुसरण करते हुए डॉ. मुखर्जी ने भी अल्पायु में ही विद्याध्ययन के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलताएँ अर्जित कर ली थीं। ३३ वर्ष की अल्पायु में वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति बने। इस पद पर नियुक्ति पाने वाले वे सबसे कम आयु के कुलपति थे। एक विचारक, चिन्तक तथा प्रखर शिक्षाविद् के रूप में उनकी उपलब्धि तथा ख्याति निरन्तर आगे बढ़ती गयी। डॉ. मुखर्जी ने स्वेच्छा से अलख जगाने के उद्देश्य से राजनीति में प्रवेश किया। डॉ. मुखर्जी सच्चे अर्थों में मानवता के उपासक, सच्चे राष्ट्रभक्त और सिद्धान्तवादी थे। उन्होंने बहुत से गैर कांग्रेसी हिन्दुओं की मदद से कृषक प्रजा पार्टी से मिलकर प्रगतिशील गठबन्धन का निर्माण किया। इस सरकार में वे वित्तमन्त्री बने। इसी समय वे सावरकर के राष्ट्रवाद के प्रति आकर्षित हुए और हिन्दू महासभा में सम्मिलित हुए। उनका मानना था कि जो राष्ट्र अपनी संस्कृति को भुला देता हैए वह राष्ट्र वास्तव में जीवित एवं जागृत राष्ट्र नहीं हो सकता। मुस्लिम लीग की राजनीति से न केवल बंगाल बल्कि समूचे देश का वातावरण दूषित हो रहा था। वहाँ साम्प्रदायिक विभाजन की नौबत आ रही थी। साम्प्रदायिक लोगों को ब्रिटिश सरकार प्रोत्साहित कर रही थी। ऐसी विषम परिस्थितियों में उन्होंने यह सुनिश्चित करने का बीड़ा उठाया कि बंगाल के हिन्दुओं की उपेक्षा न हो। अपनी विशिष्ट रणनीति से उन्होंने बंगाल के विभाजन के मुस्लिम लीग के प्रयासों को पूरी तरह से नाकाम कर दिया। १९४२ में ब्रिटिश सरकार ने विभिन्न राजनैतिक दलों के छोटे-बड़े सभी नेताओं को जेलों में डाल दिया।

डॉ. मुखर्जी इस धारणा के प्रबल समर्थक थे कि सांस्कृतिक दृष्टि से हम सब एक हैं। इसलिए धर्म के आधार पर वे विभाजन के कट्टर विरोधी थे। वे मानते थे कि विभाजन सम्बन्धी उत्पन्न हुई परिस्थिति ऐतिहासिक और सामाजिक कारणों से थी। वे मानते थे कि आधारभूत सत्य यह है कि हम सब एक हैं। हममें कोई अन्तर नहीं है। हम सब एक ही रक्त के हैं। एक ही भाषाएं एक ही संस्कृति और एक ही हमारी विरासत है। परन्तु उनके इन विचारों को अन्य राजनैतिक दल के तत्कालीन नेताओं ने अन्यथा रूप से प्रचारित-प्रसारित किया। बावजूद इसके लोगों के दिलों में उनके प्रति अथाह प्यार और समर्थन बढ़ता गया। अगस्त, १९४६ में मुस्लिम लीग ने जंग की राह पकड़ ली और कलकत्ता में भयंकर बर्बरतापूर्वक अमानवीय मारकाट हुई। उस समय कांग्रेस का नेतृत्व सामूहिक रूप से आतंकित था।

भारत का जब पहला मंत्रिमंडल पंडित जवाहरलाल नेहरू के प्रधानमंत्री के नेतृत्व गठित हुआ तब महात्मा गाँधी और सरदार पटेल के अनुरोध पर डॉ मुखर्जी पहले मन्त्रिमण्डल में शामिल हुए और उन्हें उद्योग से जुड़े महत्वपूर्ण विभाग का जिम्मेदार पद सौंपा गया। संविधान सभा तथा प्रान्तीय संसद के सदस्य और केन्द्रीय मन्त्री होने के नाते राजनीति जीवन में उन्होंने अपना विशिष्ट स्थान बना लिया। लेकिन उनके राष्ट्रवादी चिन्तन के कारण अन्य नेताओं के साथ हमेशा मतभेद रहा। वे हमेशा राष्ट्रीय हितों की प्रतिबद्धता को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता देते रहे। इन्हीं मतभेदों के कारण उन्होंने अपना त्याग पत्र मन्त्रिमण्डल को दे दिया और उन्होंने एक नयी पार्टी का गठन किया और वह विरोधी पक्ष के रूप में सबसे बडा दल था। २१ अक्तूबर १९५१ को एक सम्मेलन में जनसंघ की स्थापना हुई और इसी दिन भारतीय जनसंघ का उद्भव हुआ, जिसके संस्थापक अध्यक्ष, डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी बने। डा. मुखर्जी भले स्वल्प समय के लिये उद्योग मंत्री रहे। लेकिन भारत के प्रथम उद्योग मंत्री के रूप में उन्होंने कई महत्वपूर्ण पहल की एवं सूझबूझ भरे कदम उठाये। इनमें रेल इंजन बनाने के मामले में विदेशी निर्भरता खत्म करने की दृष्टि से चितरंजन लोकोमोटिव कारखाने का निर्माण सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। उनके प्रयत्नों से भारतीय रेलवे में एक नया अध्याय जोड़ा गया था। भारतीय रेलवे रेल इंजन निर्माण और रखरखाव में आत्मनिर्भर हो गया। डॉ. मुखर्जी के 'सपनों की परियोजना' न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी इंजन बनाने में सिद्धहस्त और नामदार साबित हुई। भारत कई सदियों से मुगलों व ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अधीन था। सदियों की परतंत्रता के कारण चतुर्दिक 'विकास की अवहेलना' हुई थी। भारतीय उद्योग-धंधों के शिथिल पड़ चुके आधारभूत ढांचे को उन्होंने नवऊर्जा दी। डॉ. मुखर्जी जम्मू-कश्मीर को भारत का पूर्ण और अभिन्न अंग बनाना चाहते थे। उस समय जम्मू कश्मीर का अलग झण्डा और अलग संविधान था। वहाँ का मुख्यमन्त्री (वजीरे-आजम) अर्थात प्रधानमन्त्री कहलाता था। संसद में अपने भाषण में डॉ. मुखर्जी ने धारा-३७० को समाप्त करने की भी जोरदार वकालत की। अगस्त १९५२ में जम्मू की विशाल रैली में उन्होंने अपना संकल्प व्यक्त किया था कि या तो मैं आपको भारतीय संविधान प्राप्त कराऊँगा या फिर इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये अपना जीवन बलिदान कर दूँगा। उन्होंने तात्कालिन नेहरू सरकार को चुनौती दी तथा अपने दृढ़ निश्चय पर अटल रहे। डॉ. मुखर्जी ने यह नारा बुलंद किया कि 'एक देश में दो विधान, दो निशान, दो प्रधान नहीं चलेंगे।' पं. प्रेमनाथ डोगरा की अगुवाई में प्रजा परिषद् के रूप में एक राष्ट्रवादी आंदोलन जम्मू-कश्मीर में आंधी की तरह छा गया। शेखशाही ने प्रदर्शनकारियों को खूब यातनाएं दीं। इस पर मुखर्जी ने जम्मू जाने का निर्णय लिया। उनके परमिट के आवेदन को रद्द कर दिया गया। जिसके बाद परमिट का नियम तोड़ते हुए उन्होंने हजारों प्रदर्शनकारियों के साथ ११ मई १९५३ को जम्मू-कश्मीर में प्रवेश करने का निर्णय किया। उन्हें जम्मू में घुसते ही गिरफ्तार कर लिया गया। उनका स्वास्थ्य खराब होने के बावजूद उनके निजी डॉक्टर को उनके साथ नहीं आने दिया गया। २३ जून १९५३ को कानूनी हिरासत में ही रहस्यात्मक ढंग से कश्मीर में उनकी मृत्यु हो गई। उनके महाबलिदान ने हर भारतीय में प्रेरणा का ऐसा बीज बोया जो ५ अगस्त २०१९ को अनुच्छेद ३७० के निष्क्रिय होने तथा अनुच्छेद ३५.अ के हटने के साथ फलीभूत हुआ। उन्हीं के अथक परिश्रम व अतुलनीय बलिदान के कारण अंततः भारत देश में एक विधान, एक निशान एवं एक प्रधान का शासन लागू हुआ। भारत की एकता और अखण्डता को मजबूती देने एवं अखण्ड भारत के सपने को आकार देने वाले राष्ट्रवाद के सच्चे महानायक के रूप में डॉ मुखर्जी का योगदान एवं बलिदान अविस्मरणीय रहेगा।

प्रो. ऋषभदेव शर्मा
की तपस्या का फल है 'धूप के अक्षर' : रमेश पौखरियाल निशंक

हैदराबाद

भारत के पूर्व शिक्षा मंत्री और प्रसिद्ध लेखक डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक ने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, खैरताबाद, हैदराबाद के सभागार में आयोजित एक भव्य समारोह में 'धूप के अक्षर' का लोकार्पण करते हुए कहा कि यह ग्रंथ प्रो. ऋषभदेव शर्मा की जीवन भर की तपस्या का फल है। उनकी इस तपस्या को दक्षिण भारत ने हृदय से स्वीकार किया है जिसके दर्शन उनके अभिनंदन समारोह में हो रहे हैं। वे डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा के प्रधान संपादकत्व में दो खंडों में प्रकाशित प्रो. ऋषभदेव शर्मा के अभिनंदन ग्रंथ के लोकार्पण के अवसर पर आयोजित समारोह में बोल रहे थे।

डॉ. निशंक ने इस बात पर विशेष बल दिया कि भारतवर्ष को विश्वगुरु के पथ पर पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए तेलुगु, तमिल, कन्नड, मलयालम, बंगला, मराठी, पंजाबी, असमी आदि सभी भाषाओं को सम्मिलित भूमिका निभानी होगी। उन्होंने यह भी कहा कि प्रो. ऋषभदेव शर्मा हिंदी के माध्यम से सारी भारतीय भाषाओं के लिए कार्य कर रहे हैं। यह कार्य हैदराबाद में हो रहा है जिस पर हम गर्व कर सकते हैं।

अभिनंदन समारोह का उद्घाटन शीर्षस्थ भारतीय लेखक प्रो. एन. गोपि ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि प्रो. शर्मा एक आदर्श अध्यापक और प्रख्यात लेखक ही नहीं हैं, बल्कि वे एक उत्तम मनुष्य भी हैं। दक्षिण में उनका आना भाषा और साहित्य के लिए एक वरदान जैसा है। अभिनंदन ग्रंथ की प्रथम प्रतियाँ डॉ. पूर्णिमा शर्मा और लिपि भारद्वाज ने धन्यवाद सहित स्वीकार कीं। प्रो. ऋषभदेव शर्मा के अभिनंदन समारोह में अध्यक्ष के रूप में प्रो. देवराज (दिल्ली) और अतिविशिष्ट अतिथि रूप में डॉ. पुष्पा खंडूरी (देहरादून) के साथ विशिष्ट अतिथियों के रूप में प्रो. गोपाल शर्मा, जसवीर राणा, डॉ. अहिल्या मिश्र, डॉ. वर्षा सोलंकी, डॉ. राकेश कुमार शर्मा, पी. ओबय्या, जी. सेल्वराजन, एस. श्रीधर, प्रो. संजय एल. मादार आदि मंचासीन थे।

सभी वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त करते हुए इस बात को विशेष रूप से रेखांकित किया कि प्रो. ऋषभदेव शर्मा ने हैदराबाद, चेन्नै और एरणाकुलम आदि में रहते हुए जो कार्य किया, उसका भाषायी और साहित्यिक महत्व ही नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक महत्व भी है। उनका कार्य दक्षिणापथ और उत्तरापथ के मध्य संस्कृति-सेतु का कार्य है। आयोजन का संचालन 'धूप के अक्षर' ग्रंथ की प्रधान संपादक डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा ने किया। वैदिक स्वस्तिवाचन के साथ आरंभ हुए लोकार्पण एवं अभिनंदन समारोह में कलापूर्ण सस्वर सरस्वती वंदना शुभ्रा मोहंता ने प्रस्तुत की। 'धूप के अक्षर' ग्रंथ के सहयोगी लेखकों को यह ग्रंथ भेंट भी किया गया।

इस समारोह में हैदराबाद के साहित्य प्रेमी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। विनीता शर्मा, वेणुगोपाल भट्टड, अजित गुप्ता, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, पवित्रा अग्रवाल, रामदास कृष्ण कामत, सुरेश गुगलिया, जी.परमेश्वर, डॉ. श्रीपूनम जोधपुरी, डॉ. जयप्रकाश नागला, डॉ. रियाजुल अंसारी, डॉ. बी.एल. मीणा, मुकुल जोशी, डॉ. शिवकुमार राजौरिया, रवि वैद, डॉ. एस. राधा, सरिता सुराणा, वर्षा कुमारी, हुडगे नीरज, रूपा प्रभु, उत्तम प्रसाद, नीलम सिंह, नेक परवीन, संदीप कुमार, मुकुल जोशी, डॉ. कोकिला, एफ.एम. सलीम, डॉ. के.श्रीवल्ली, डॉ. बी. बालाजी, डॉ. करन सिंह ऊटवाल, वुल्ली कृष्णा राव, शीला बालाजी, समीक्षा शर्मा, डॉ. सुषमा देवी, सुनीता लुल्ला, प्रवीण प्रणव, डॉ. गंगाधर वानोडे, डॉ. सी.एन. मुगुटकर, डॉ. रमा द्विवेदी, डॉ. संगीता शर्मा, प्रो. दुर्गेशनंदिनी, डॉ. रेखा शर्मा, चवाकुल रामकृष्णा राव, एम. सूर्यनारायन, प्रवीण, केशव, जे. रामकृष्ण, मुरली, एम. शिवकुमार, नूपुतंगा सी.के., डॉ. के. चारुलता, जी. एकांबरेश्वरुडु, शैलेषा नंदूरकर, जाकिया परवीन, शेक जुबेर अहमद, डॉ. गौसिया सुलताना, विकास कुमार आजाद, पल्लवी कुमारी, निशा देवी, डॉ. पठान रहीम खान, के. राजन्ना, डॉ. एस. तुलसी देवी, डॉ. रजनी धारी, गीतिटिका कुम्मूरी, डॉ. गोरखनाथ तिवारी, डॉ. साहिरा बानू बी.बोरगल, डॉ. बिष्णु कुमार राय, डॉ. शक्ति कुमार द्विवेदी, डॉ. ए.जी. श्रीराम, हरदा राजेश कुमार, डॉ. संतोष विजय मुनेश्वर, काजिम अहमद, और अनेक लोग अंडमान, दिल्ली, वर्धा, खतौली, नांदेड, कर्नाटक, चेन्नै, अहमदाबाद, बनारस से भी पधारे थे।

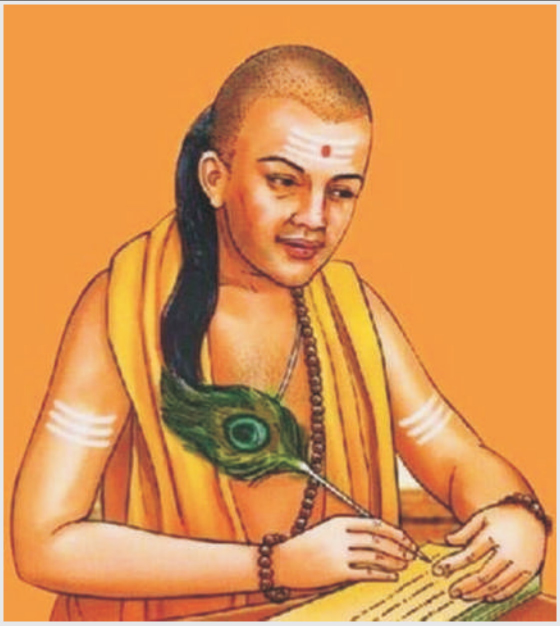

चाणक्य नीति

आचार्य चाणक्य को भारतीय राजनीति, कूटनीति और अर्थशास्त्र का पितामह कहा जाता है। उन्होंने अपनी नीतियों में ना केवल सफलता के मूलमंत्र का उल्लेख किया है बल्कि जीवन के हर पहलू पर बात की है। उन्होंने मनुष्य को जीवन की कई ऐसी गूढ़ बातें बताई है जिसे मानकर व्यक्ति जीवन में कभी भी मात नहीं खा सकता। वैसे तो चाणक्य ने अर्थशास्त्र के संबंध पर काफी कुछ लिखा है, लेकिन उन्होंने खुशहाल जीवन और उन्नति के बारें में भी कई बातें बताई हैं, जिनका पालन कर आप भी अपने जीवन को खुशहाल बना सकते हैं। उन्हें बातों में एक है वो बात जिसमें उन्होंने कुत्ते से जुड़ी कुछ रोचक चीजें कही हैं। कुत्ते से काफी कुछ सीखा जा सकता है जो आपको लक्ष्य पाने के साथ-साथ समाज में मान-सम्मान दिला सकता है।

श्लोक

बह्वाशी स्वल्प सन्तुष्टः सुनिद्रा लघुचेतसः।
स्वामिभक्तश्च शूरश्च षडेते श्वानों गुणाः।।

आचार्य चाणक्य ने अपने इस स्लोक में कहा है 'अधिक भूखा होने पर भी थोड़े में ही संतोष कर लेना, गहरी नींद में होने पर भी सतर्क रहना, स्वामिभक्त होना और वीरता एक कुत्ते से ये चार गुण हर किसी को सीखने चाहिए'

खाने-पीने संतोषी होना

आचार्य चाणक्य कहते हैं कि कुत्ते की तरह हमें खाने-पीने के मामले में संतोषी होना चाहिए। वो आगे कहते हैं कि स्वाद के पीछे भागता है और उसे तरह-तरह के कष्टों का सामना करना पड़ता है। वहीं कुत्ता उसे दिन भर में जितना भोजन मिल जाए उसी से संतुष्ट रहता है। वह इसके लिए न तो अपने मालिक से विरोध करता है और न ही अपने मालिक को काटता है या कार्य में लापरवाही करता है। अर्थात् आपके पास जो चीज है उसी पर संतोष करना चाहिए। कभी भी ज्यादा की अपेक्षा नहीं करना चाहिए। क्योंकि इससे आपको दुख ही मिलेगा।

गहरी नींद में भी सतर्क रहना

चाणक्य के मुताबिक जिस व्यक्ति को जीवन में कुछ करना है तो उसे कठिन परिश्रम करना होता है। इसके लिए सबसे अधिक आवश्यक है कि वह कम से कम सोए। हमेशा कुत्ते की तरह नींद लेना चाहिए। जरा सी आहट होने पर जिस तरह कुत्ते की नींद खुल जाती है। उसी तरह व्यक्ति की नींद होनी चाहिए। इससे वह जरूरत पड़ने पर तुरंत सतर्क हो सकता है।

स्वामिभक्त होना

आचार्य चाणक्य के अनुसार, मनुष्य को कुत्ते की तरह स्वामिभक्त होना चाहिए यानी जिस तरह एक कुत्ता अपने मालिक के प्रति वफादार होता हैं मालिक का दिया हुआ जितना भी मिलता है उसी को खाकर कुत्ता संतुष्ट रहता है और अपने मालिक के प्रति कभी भी वफादारी करना नहीं छोड़ता। इसी तरह व्यक्ति का स्वभाव होना चाहिए। इस स्वभाव को आत्मसात करने वाले व्यक्ति अवश्य ही सफल होते हैं। नौकरी करने पर अपनी संस्था के प्रति वफादार होना चाहिए। क्योंकि इसी तरह आप अपने लक्ष्य को प्राप्त कर खुशहाल जीवन जी सकते हैं।

विषम हालात में भी निडर रहना व्यक्ति को कुत्ते से वीरता का गुण तो जरूर सीखना चाहिए। वह एक बहादुर जानवर होता है जो अपने मालिक को नुकसान पहुंचाने वाले के आगे खुद खड़ा हो जाता है और अपनी जान तक गंवा देता है। इसी तरह व्यक्ति को हमेशा निडर होना चाहिए। किसी भी परिस्थिति में घबराना नहीं चाहिए।

चाणक्य शास्त्र के मुताबिक अगर कुत्ते की इन बातों पर अमल किया जाए तो व्यक्ति का जीवन अवश्य ही सुखमय और सम्मानजनक व्यतीत होता है। कहने के लिए तो कुत्ता एक जानवर है लेकिन वह भी अपने क्रियाकलापों से अपने आप को विशेष बनाता है। अगर कुत्ते के विशेष गुणों पर अमल किया जाए तो अवश्य ही व्यक्ति अपनी पहचान बनाने में सफल होगा।

RNI UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288
शोधादर्श
संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की त्रैमासिक पत्रिका

बिजनौर जनपदवासियों के लिए होगा यह विशेषांक

बिजनौर विशेषांक

क्या आप बिजनौर विशेषांक में अपने संस्थान का विज्ञापन देना चाहते हैं अथवा बिजनौर से संबंधित कोई ऐतिहासिक जानकारी आपके पास है? तब आप संपर्क करें

Email- shodhadarsh2018@gmail.com

Mob- 9897742814

महान है शमी वृक्ष

शमी वृक्ष की लकड़ी यज्ञ की समिधा के लिए पवित्र मानी जाती है। शनिवार को शमी की समिधा का विशेष महत्त्व है। शनि देव को शान्त रखने के लिये भी शमी की पूजा की जाती है। शमी को गणेश जी का भी प्रिय वृक्ष माना जाता है और इसकी पत्तियाँ गणेश जी की पूजा में भी चढ़ाई जाती हैं। बिहार, झारखण्ड और आसपास के कई राज्यों में भी इस वृक्ष को पूजा जाता है। यह लगभग हर घर के दरवाजे के दाहिनी ओर लगा देखा जा सकता है। किसी भी काम पर जाने से पहले इसके दर्शन को शुभ मना जाता है।

शमी वृक्ष को हिन्दू धर्म में बड़ा ही पवित्र माना गया है। भारतीय परंपरा में 'विजयादशमी' पर शमी पूजन का पौराणिक महत्व रहा है। राजस्थान में शमी वृक्ष को 'खेजड़ी' के नाम से जाना जाता है। यह मूलतः रेगिस्तान में पाया जाने वाला वृक्ष है, जो थार मरुस्थल एवं अन्य स्थानों पर भी पाया जाता है। अंग्रेजी में शमी वृक्ष प्रोसोपिस सिनेरेरिया के नाम से जाना जाता है। शमी वृक्ष के संदर्भ में कई पौराणिक कथाओं का आधार विद्यमान है। यज्ञ परंपरा में भी शमी के पत्तों का हवन गुणकारी माना गया है। शमी का वृक्ष आठ से दस मीटर तक ऊंचा होता है। शाखाओं पर कांटे होते हैं। इसकी पत्तियां द्विपक्षवत होती हैं। शमी के फूल छोटे पीताभ रंग के होते हैं। प्रौढ पत्तियों का रंग राख जैसा होता है, इसीलिए इसकी प्रजाति का नाम 'सिनरेरिया' रखा गया है अर्थात् 'राख जैसा'।

हिन्दू धर्म में शमी वृक्ष से जुड़ी कई मान्यताएँ है, जैसे- विजयादशमी या दशहरे के दिन शमी के वृक्ष की पूजा करने की प्रथा है। मान्यता है कि यह भगवान श्री राम का प्रिय वृक्ष था और लंका पर आक्रमण से पहले उन्होंने शमी वृक्ष की पूजा करके उससे विजयी होने का आशीर्वाद प्राप्त किया था। आज भी कई स्थानों पर 'रावण दहन' के बाद घर लौटते समय शमी के पत्ते स्वर्ण के प्रतीक के रूप में एक दूसरे को बाँटने की प्रथा हैं, इसके साथ ही कार्यों में सफलता मिलने कि कामना की जाती है।

शमी वृक्ष का वर्णन महाभारत काल में भी मिलता है। अपने १२ वर्ष के वनवास के बाद एक साल के अज्ञातवास में पांडवों ने अपने सारे अस्त्र शस्त्र इसी पेड़ पर छुपाये थे, जिसमें अर्जुन का गांडीव धनुष भी था। कुरुक्षेत्र में कौरवों के साथ युद्ध के लिये जाने से पहले भी पांडवों ने शमी के वृक्ष की पूजा की थी और उससे शक्ति और विजय प्राप्ति की कामना की थी। तभी से यह माना जाने लगा है कि जो भी इस वृक्ष कि पूजा करता है उसे शक्ति और विजय प्राप्त होती है।

> शमी शमयते पापम् शमी शत्रुविनाशिनी।
> अर्जुनस्य धनुर्धारी रामस्य प्रियदर्शिनी।
> करिष्यमाणयात्राया यथाकालम् सुखम् मया।
> तत्रनिर्विघ्नकर्त्रीत्वं भव श्रीरामपूजिता।

अर्थात 'हे शमी, आप पापों का क्षय करने वाले और दुश्मनों को पराजित करने वाले हैं। आप अर्जुन का धनुष धारण करने वाले हैं और श्री राम को प्रिय हैं। जिस तरह श्री राम ने आपकी पूजा की मैं भी करता हूँ। मेरी विजय के रास्ते में आने वाली सभी बाधाओं से दूर कर के उसे सुखमय बना दीजिये।'

अन्य कथा के अनुसार कवि कालिदास ने शमी के वृक्ष के नीचे बैठ कर तपस्या करके ही ज्ञान की प्राप्ति की थी।

शमी वृक्ष की लकड़ी यज्ञ की समिधा के लिए पवित्र मानी जाती है। शनिवार को शमी की समिधा का विशेष महत्त्व है। शनि देव को शान्त रखने के लिये भी शमी की पूजा की जाती है। शमी को गणेश जी का भी प्रिय वृक्ष माना जाता है और इसकी पत्तियाँ गणेश जी की पूजा में भी चढ़ाई जाती हैं। बिहार, झारखण्ड और आसपास के कई राज्यों में भी इस वृक्ष को पूजा जाता है। यह लगभग हर घर के दरवाजे के दाहिनी ओर लगा देखा जा सकता है। किसी भी काम पर जाने से पहले इसके दर्शन को शुभ मना जाता है।

ऋग्वेद के अनुसार शमी के पेड़ में आग पैदा करने कि क्षमता होती है और ऋग्वेद की ही एक कथा के अनुसार आदिम काल में सबसे पहली बार पुरुओं ने शमी और पीपल की टहनियों को रगड़ कर ही आग पैदा की थी। कवियों और लेखकों के लिये शमी बड़ा महत्व रखता है। हिन्दू धर्म में भगवान चित्रगुप्त को शब्दों और लेखनी का देवता माना जाता है और शब्द-साधक यम-द्वितीया को यथा-संभव शमी के पेड़ के नीचे उसकी पत्तियों से उनकी पूजा करते हैं।

हमारी संस्कृति में परंपरा में पेड़ पौधों का विशेष महत्व है। हिंदू धर्म में तो प्रकृति पूजा का विशेष स्थान है और इसी कारण कुछ पेड़ पौधों का औषधीय महत्व होने के साथ साथ धार्मिक महत्व बहुत अधिक है ऐसा ही एक पेड़ है 'शमी' का। हिंदू धर्म-ग्रंथों में मनुष्य का शरीर प्रकृति के पांच आधारों जल, वायु, अग्नि, आकाश और धरती से बना माना गया है और स्वस्थ रहने के लिए इन पंच तत्वों का संतुलन में रहना ही अनिवार्य माना गया है।

धरती पर पाए जाने वाले पेड़-पौधे मानव जीवन के लिए बहुत लाभप्रद हैं। शमी भी ऐसे पेडों में शामिल है जिसका ज्योतिषशास्त्र में बड़ा महत्व है क्योंकि यह ग्रहों को प्रभावित करने वाला पेड़ माना गया है। हिंदू धर्म ग्रंथों में प्रकृति को देवता कहा गया है। पंचभूतों में से एक धरती पर उगने वाले पेड पौधों में से कुछ औषधीय महत्व के तो होते ही है साथ ही हमारे ग्रह-नक्षत्रों के बुरे प्रभाव को कम करने के काम भी आते हैं। हमारे धर्म शास्त्रों में नवग्रहों से संबंधित पेड़-पौधों का जिक्र मिलता है, इन्हीं में से एक है शमी का पौधा या वृक्ष। शमी का संबंध शनि देव से है। नवग्रहों में 'शनि महाराज' को दंडाधिकारी का स्थान प्राप्त है, इसलिए जब शनि की दशा या साढ़ेसाती आती है,तब जातक के अच्छे-बुरे कर्मों का पूरा हिसाब होता है इसलिए शनि के कोप से लोग भयभीत रहते हैं। पीपल और शमी दो ऐसे वृक्ष हैं, जिन पर शनि का प्रभाव होता है। पीपल का वृक्ष बहुत बड़ा होता है, इसलिए इसे घर में लगाना संभव नहीं होता। शनिवार की शाम को शमी वृक्ष की पूजा की जाए और इसके नीचे सरसों तेल का दीपक जलाया जाए, तो शनि दोष से कुप्रभाव से बचाव होता है। शमी एक चमत्कारिक पौधा भी माना जाता है, क्योंकि जो व्यक्ति इसे घर में रखकर इसकी पूजा करता है उसे कभी धन की कमी नहीं होती। शनि के दोषों को कम करना चाहते हैं तो हर शनिवार शनि को शमी के पत्ते चढ़ाना चाहिए। इस उपाय शनि बहुत जल्दी प्रसन्न होते हैं और कार्यों की बाधाएं दूर हो सकती हैं। शमी का पौधा, तेजस्विता एवं दृढ़ता का प्रतीक है। इसमें प्राकृतिक तौर पर अग्नितत्व की प्रचुरता होती है इसलिए इसे यज्ञ में अग्नि को प्रज्ज्वलित करने के लिए उपयोग में लाया जाता है। शनि के बुरे प्रभाव को समाप्त करता है शमी

जन्मकुंडली में यदि शनि से संबंधित कोई भी दोष है तो शमी के पौधे को घर में लगाना और प्रतिदिन उसकी सेवा-पूजा करने से शनि की पीड़ा समाप्त होती है। सोमवार को शमी के पौधे में एक लाल मौली बांधे, इसे रातभर बंधे रहने दें। अगले दिन सुबह वह मौली खोलकर एक चांदी की डिबिया या ताबीज में भरकर तिजोरी में रखें, कभी धन की तंगी नहीं होगी। शनिवार को पेड़ के सबसे निचले भाग में उड़द की काली दाल और काले तिल चढ़ाएं। ज्योतिषाचार्य के अनुसार शमी के वृक्ष पर कई देवताओं का वास होता है। सभी यज्ञों में शमी वृक्ष की समिधाओं का प्रयोग शुभ माना गया है। शमी के कांटों का प्रयोग तंत्र-मंत्र बाधा और नकारात्मक शक्तियों के नाश के लिए होता है। शमी के पंचांग (फूल, पत्ते, जड़ें, टहनियां और रस) का इस्तेमाल कर शनि संबंधी दोषों से जल्द मुक्ति पाई जा सकती है। इसे वह्निवृक्ष भी कहा जाता है। आयुर्वेद की दृष्टि में तो शमी अत्यंत गुणकारी औषधी मानी गई है। कई रोगों में इस वृक्ष के अंग काम आते हैं। परिवार को रोग व्याधियों से बचाने में शमी का महत्व बहुत अधिक है।

शनिवार को शाम के समय शमी के पौधे के गमले में पत्थर या किसी भी धातु का एक छोटा सा शिवलिंग रखें और उस पर दूध चढ़ाने और विधि-विधान से पूजन करने के बाद महामृत्युंजय मंत्र की एक माला का जाप करने से स्वयं या परिवार में यदि किसी को भी कोई रोग होगा तो वह जल्दी ही दूर हो जाता है। यदि आप बार-बार दुर्घटनाग्रस्त हो रहे हों तो शमी के पौधे के नियमित दर्शन से दुर्घटनाएं रुकती हैं। घर-परिवार, नौकरी या कारोबार की परेशानियां दूर करने के लिए गणपति की पूजा शुभ मानी जाती है। गणेशजी को भी दूर्वा के समान शमी पत्र भी प्रिय है गणेशजी को हर बुधवार शमी के पत्ते भी चढ़ा सकते हैं मान्यता है कि शमी में शिव का वास होता है, इसी वजह से ये पत्ते गणेशजी को चढ़ाते हैं। शमी पत्र चढ़ाने से बुद्धि तेज होती है, घर की अशांति दूर होती है। साभार

जन्मकुंडली में यदि शनि से संबंधित कोई भी दोष है तो शमी के पौधे को घर में लगाना और प्रतिदिन उसकी सेवा-पूजा करने से शनि की पीड़ा समाप्त होती है। सोमवार को शमी के पौधे में एक लाल मौली बांधे, इसे रातभर बंधे रहने दें। अगले दिन सुबह वह मौली खोलकर एक चांदी की डिबिया या ताबीज में भरकर तिजोरी में रखें, कभी धन की तंगी नहीं होगी। शनिवार को पेड़ के सबसे निचले भाग में उड़द की काली दाल और काले तिल चढ़ाएं। ज्योतिषाचार्य के अनुसार शमी के वृक्ष पर कई देवताओं का वास होता है। सभी यज्ञों में शमी वृक्ष की समिधाओं का प्रयोग शुभ माना गया है। शमी के कांटों का प्रयोग तंत्र-मंत्र बाधा और नकारात्मक शक्तियों के नाश के लिए होता है। शमी के पंचांग (फूल, पत्ते, जड़ें, टहनियां और रस) का इस्तेमाल कर शनि संबंधी दोषों से जल्द मुक्ति पाई जा सकती है। इसे वह्निवृक्ष भी कहा जाता है। आयुर्वेद की दृष्टि में तो शमी अत्यंत गुणकारी औषधी मानी गई है। कई रोगों में इस वृक्ष के अंग काम आते हैं। परिवार को रोग व्याधियों से बचाने में शमी का महत्व बहुत अधिक है।

सावन के शनिवार को करें शमी की पूजा

हिन्दू ग्रंथों में पेड़-पौधे भी पूज्य माने गए हैं क्योंकि इन पेड़ों में देवताओं का वास माना जाता है। पीपल में भगवान विष्णु, शिव समेत सभी देवता, केला, आंवला और तुलसी में भगवान विष्णु, बेल, बरगद और शमी में भगवान शिव का वास माना जाता है। वहीं, कमल में साक्षात् माता लक्ष्मी का वास होता है। यदि आप शमी के पेड़ की पूजा करते हैं तो भगवान शिव प्रसन्न होते हैं, वहीं शनिदेव और श्री गणेश की भी कृपा प्राप्त होती है। पौराणिक मान्यताओं में शमी का वृक्ष बड़ा ही मंगलकारी माना गया है। लंका पर विजयी पाने के बाद श्रीराम ने शमी पूजन किया था। नवरात्र में भी मां दुर्गा का पूजन शमी वृक्ष के पत्तों से करने का विधान है। विजयदशमी को शमी की विशेष पूजा की जाती है। धार्मिक, आध्यात्मिक और वास्तु के नजरिये से भी शमी वृक्ष की पूजा करने के कई लाभ हैं। ऐसी मान्यता है कि घर में शमी का पेड़ लगाने से देवी-देवताओं की कृपा प्राप्त होती है और घर में सुख-समृद्धि आती है। साथ ही शनि के कोप से भी बचा जा सकता है। शमी का वृक्ष घर के ईशान कोण (पूर्वोत्तर) में लगाना लाभकारी माना गया है। इसमें प्राकृतिक तौर पर अग्नि तत्व पाया जाता है। न्याय के देवता शनि को खुश करने के लिए शास्त्रों में कई उपाय बताए गए हैं, जिनमें से एक है शमी के पेड़ की पूजा। शनिदेव की टेढ़ी नजर से बचने के लिए शमी की पूजा करना चाहिए। यह एक रक्षा कवच के रूप में देखा जाता है। शमी के छोटे पौधे को आप घर में गमले में भी लगाकर पूजा करके भगवान शनि का आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं।

शमी के वृक्ष पर कई देवताओं का वास होता है। सभी यज्ञों में शमी वृक्ष की लकड़ियों का प्रयोग शुभ माना गया है। शमी के कांटों का प्रयोग तंत्र-मंत्र एवं बाधा एवं नकारात्मक शक्तियों को रोकने के लिए किया जाता है।

जहां पीपल उपलब्ध नहीं वहां शमी की पूजा कीजिए

पीपल और शमी दो ऐसे वृक्ष हैं, जिन पर शनि का प्रभाव होता है। पीपल का वृक्ष बहुत बड़ा होता है, इसलिए इसे घर में लगाना संभव नहीं होता। वास्तु शास्त्र के मुताबिक नियमित रूप से शमी वृक्ष की पूजा की करने एवं इस वृक्ष के नीचे सरसो या तिल के तेल का दीपक जलाने से शनि का दोष भी खत्म हो जाता है। शमी को वह्निवृक्ष भी कहा जाता है। आयुर्वेद की दृष्टि में तो शमी अत्यंत गुणकारी औषधि मानी गई है। कई रोगों में इस वृक्ष के अंग काम आते हैं। इसके पत्ते, जड़ें टहनियां आयुर्वेद में कई औषधि के रूप में की जाती है।

ओपन डोर (लघुकथा विशेषांक) के विजेताओं की घोषणा

आदरणीय/महोदय,
कहानीकारों के निर्णय के आधार पर 'ओपन डोर' (लघुकथा विशेषांक) ०७ जून, २०२२ के परिणाम इस प्रकार घोषित किए जाते है।
प्रथम स्थान पर रही डॉ. रंजना जायसवाल जिनकी 'बुलडोजर' कहानी सर्वाधिक पसंद किया गया। द्वितीय स्थान पर रहे डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा तथा तृतीय स्थान पर डॉ. जया आनंद एवं विनोद कुमार 'विक्की' रहे। 'ओपन डोर' (साप्ताहिक समाचार पत्र) सभी विजेताओं एवं प्रतिभागियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ आशा करता है कि आगामी आयोजन में भी सहयोग करेंगे।
नोटः सभी विजेताओं को नियमानुसार धनराशि का चैक, सम्मान पत्र तथा सभी प्रतिभागियों को प्रतिभाग सम्मान पत्र प्रेषित कर दिया जाएगा।

संपादक
अमन कुमार
९८९७७४२८१४

प्रथम स्थान
डा. रंजना जायसवाल

द्वितीय स्थान
डा. प्रदीप कुमार शर्मा

तृतीय स्थान
डॉ. जया आनंद

तृतीय स्थान
विनोद कुमार 'विक्की'

प्रथम पुरस्कृत लघुकथा

बुलडोजर

'भैया नक्शा पास करवाया है, आप पेपर देख सकते हैं।'
अजित ने बुलडोजर वाले के हाथ जोड़ते हुए कहा।
'साहब हमसे कोई मतलब नहीं, हमें तो तोड़ने का आदेश दिया गया है। हम तो ड्यूटी कर रहे हैं।'
ड्राइवर ने बुलडोजर में चाभी लगाते हुए कहा, गाड़ी घुर्र-घुर्र की आवाज के साथ चालू हो गई। अजित के माथे पर पसीना छलछला आया। जीवन भर की पूँजी इस घर में लगा दी। अगर इस घर को तोड़ दिया तो वो और उनका परिवार कहाँ जाएगा? विकास प्राधिकरण के अधिकारी पेड़ के नीचे खड़े यथास्थिति का जायजा ले रहे थे।
'भैया! एक मिनट बस आपके साहब से बात कर लूँ।'
अजित ने लगभग गिड़गिड़ाते हुए कहा, तभी सामने से अधिकारियों को आता देखकर अजित उनकी तरफ लपका।
'साहब! ऐसा मत करिए, हम सड़क पर आ जाएँगे। आप कागज देख लीजिए।'
'कागज! कितना खिलाया था बाबू को..'
'जीऽऽ...वो!'
'सबको शॉर्टकट चाहिए तो भुगतो।'
अजित सोच रहा था बसे हुए घोसले को तोड़ने का आदेश देते समय कभी इस बात पर चर्चा क्यो नहीं की जाती कि किस की मिली भगत, किस की शह पर अवैध निर्माण, अवैध कॉलोनियाँ बन जाती हैं। एक मेज से दूसरे मेज तक फाइल को पहुँचने में एक आम इंसान किस-किस दौर और समझौते से गुजरता है। पैसे लेकर नाजायज काम होने देने वाले को कोई पहले क्यों नहीं रोकता। एक बुलडोजर तो सरकारी बाबुओं की संपत्ति पर भी चलना ही चाहिए। अजित असहाय अपने आशियाने को उजड़ता देखता रहा।

डॉ. रंजना जायसवाल
लाल बाग कॉलोनी, छोटी बसही, मिर्जापुर, उप्र पिन- २३१००१
सचलभाष- ९४१५४७९७९६
Email- ranjana1mzp@gmail.com

ओपन डोर राष्ट्रभक्ति गीत पढ़ें और निर्णय करें

कविगण अपनी रचनाओं को शामिल न करें, जबकि पाठक को जो भी रचनाएं अच्छी लगें उनके बारे में तीन रचनाएं एवं उनके लेखक का नाम प्राथमिकता के क्रम में नीचे लिखें-

७ जुलाई, २०२२ अंक में प्रकाशित

१. प्रतियोगिता में शामिल राष्ट्रभक्ति गीत में से कौन-सा गीत आपको अच्छा लगा? किन्हीं तीन राष्ट्रभक्ति गीत के शीर्षक एवं कवि का नाम लिखें-

	राष्ट्रभक्ति गीत का शीर्षक	कवि का नाम
१.	....	....
२.	....	....
३.	....	....

हस्ताक्षर निर्णयकर्ता

नोट- सभी कवियों को यह क्रम बनाकर भेजना अनिवार्य है। यदि कोई कवि अपना निर्णय नहीं देता है तो उसे 'ओपन डोर' साप्ताहिक की 'राष्ट्रभक्ति गीत प्रतियोगिता' से बाहर मान लिया जाएगा। बराबरी की स्थिति में संपादक मंडल का निर्णय सभी को मानना होगा। आप अपने निर्णय प्रारूप का फोटो खींचकर मोबा. 9897742814 पर वाट्स एप करें।

निर्णयकर्ता का नाम व पता

प्रथम विजेता को ११००/-, प्रमाण-पत्र द्वितीय विजेता को ५०१/-, प्रमाण-पत्र तृतीय विजेता को २५१/-, प्रमाण-पत्र
सभी प्रतिभागियों को प्रतिभाग प्रमाण-पत्र

'ओपन डोर' साप्ताहिक के नियमित ग्राहक बनें

Title-Code-UPHIN49431/RNI-UPHIN/2021/79954/MSME-UDYAM-UP-17-0002703

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

समयावधि	रुपए डाक खर्च सहित	पीडीएफ/प्रिंट अंक	सभी विशेषांक
वार्षिक	- १०००	४८/३८	४
द्विवार्षिक	- १६००	९६/७६	८
पंचवार्षिक	- ४८००	२४०/१९०	२०

रजि. पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD AC- 368602000000245/ IFSC- IOBA0003686 PAN- AABAO7251R
Email- opendoornbd@gmail.com / Mob.- 9897742814

RNI UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288
₹ 200 वर्ष : 4 अंक : 3 जून-अगस्त, 2022
शोधादर्श
संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की त्रैमासिक पत्रिका

आगामी आयोजन

संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की पत्रिका **'शोधादर्श'** **(त्रैमासिक)** में **साहित्य, मानविकी आदि विषयों** पर शोधपरक लेखों का प्रकाशन होता है, जिससे शोध प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है और उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों के साथ ज्ञानपिपासु पाठकों के ज्ञान में भी वृद्धि होती है। पत्रिका का आगामी अंक 'आजादी का अमृत महोत्सव' को ध्यान में रखते हुए **'जनपद बिजनौर' विशेषांक** के रूप में प्रकाशित किया जाना है। जिसमें जनपद बिजनौर का इतिहास, साहित्य, भूगोल, प्रतिभा, स्वास्थ्य, शिक्षा, पत्रकारिता, उद्योग, राजनीति, संस्कृति एवं समाजसेवा आदि विषय समाहित रहेंगे। जिसमें आप अपने विभाग, निकाय, संस्थान, मंत्रालय, प्रतिष्ठान, उत्पाद, उत्कृष्ट सेवाओं आदि की विशिष्टताओं तथा उनकी प्रगति से संबंधित विज्ञापन देकर उनका प्रचार प्रसार जन–जन तक

जून–अगस्त 2022 (बिजनौर विशेषांक) में संभावित सामग्री

- जनपद बिजनौर का भौगोलिक परिचय
- स्वतंत्रता आंदोलन एवं जनपद के स्वतंत्रता सेनानी
- जनपद बिजनौर की राजनीति एवं राजनेता
- जनपद बिजनौर में समाजसेवी एवं सामाजिक संस्थाएं
- जनपद बिजनौर में स्वास्थ्य सेवाएं
- जनपद बिजनौर में महिला सशक्तीकरण
- जनपद बिजनौर और सिने जगत
- जनपद बिजनौर में कृषि
- जनपद बिजनौर की संस्कृति
- जनपद बिजनौर के ऐतिहासिक एवं पौराणिक स्थल
- जनपद बिजनौर का ग्रामीण विकास
- जनपद बिजनौर में वन एवं पर्यावरण आदि
- जनपद बिजनौर का इतिहास
- जनपद बिजनौर का साहित्य एवं साहित्यकार
- जनपद बिजनौर की पत्रकारिता एवं पत्रकार
- जनपद बिजनौर में शिक्षा एवं विद्यालय
- जनपद बिजनौर में सहकारिता
- जनपद बिजनौर के लोकगीत
- जनपद बिजनौर और खेल जगत
- जनपद बिजनौर के उद्योग धंधे
- जनपद बिजनौर के प्रसिद्ध मेले
- जनपद बिजनौर का नगरीय विकास
- जनपद बिजनौर की नदियाँ
- अन्य ऐसे विषय जो आवश्यक समझे जाएंगे

जून–अगस्त 2022
बिजनौर विशेषांक

सितम्बर–नवम्बर 2022
दुष्यंत कुमार त्यागी विशेषांक

दिसंबर 2022–फरवरी 2023
प्रो. ऋषभ देव शर्मा विशेषांक

अपने शोध लेख समयानुसार

shodhadarsh2018@gmail.com
पर भेजने का कष्ट करें।
अधिक जानकारी के लिए
9897742814 पर सम्पर्क करे

शोध लेखों की त्रैमासिक पत्रिका 'शोधादर्श' की सदस्यता लेकर प्रकाशन और पढ़ने का लाभ उठाएं। प्रकाशनोपरांत पत्रिका आपके पंजीकृत पते पर रजिस्टर्ड पार्सल से पहुंच जाएगी।

वार्षिक सदस्य – 1000 रुपए
पांच वर्ष – 4500 रुपए

Name - Shodhadarsh
Bank - Indian oversees bank
Branch - Najibabad
Account no - 368602000000186
IFSC - IOBA0003686

ऑनलाइन सदस्यता के लिए फार्म भरें
https://forms.gle/B4T6AKwXxRePSNsz9

शोधादर्श में प्रकाशित विज्ञापन रेट

क्रम	विज्ञापन स्थान संपूर्ण पृष्ठ	मूल्य रुपए में	विज्ञापन स्थान आधा पृष्ठ	मूल्य रुपए	विज्ञापन स्थान चौथाई पृष्ठ	मूल्य रुपए
1	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	26,000.00	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	13,000.00	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	7,000.00
2	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	22,000.00	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	11,000.00	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	6,000.00
3	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	20,000.00	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	10,000.00	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	5,000.00
4	श्वेत श्याम पृष्ठ	10,000.00	श्वेत श्याम पृष्ठ	5,000.00	श्वेत श्याम पृष्ठ	2,500.00

मकैनिकल डाटा– 10.75x8.5 inch, कवर–आर्ट पेपर कलर प्रिंटिंग, अंदर पेपर–मैफलिथो श्वेत–श्याम प्रिंटिंग, आवश्यक होने पर अंदर के कुछ पृष्ठ रंगीन भी प्रकाशित होते हैं। प्रिंटिंग एरिया–9.75x7 inch (नोट- पत्रिका के आकार, छपाई और उपयोगी काग़ज़ में बदलाव आवश्यकतानुसार संभव है)

प्रकाशनाधीन

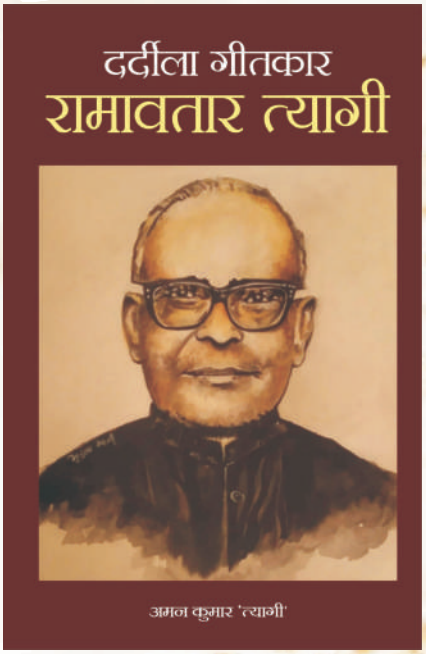

ओपन डोर प्रकाशन से शीघ्र प्रकाशित होने वाली पुस्तकें

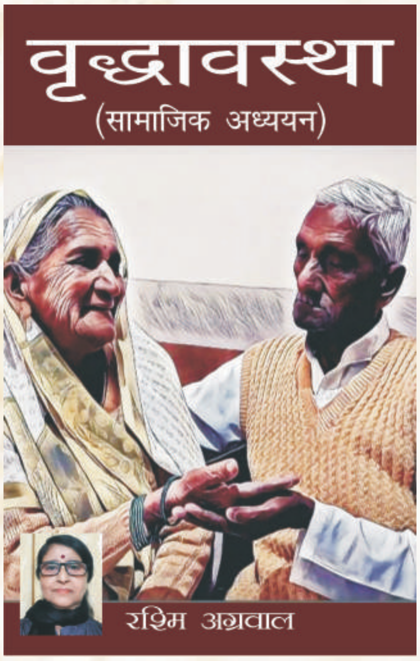

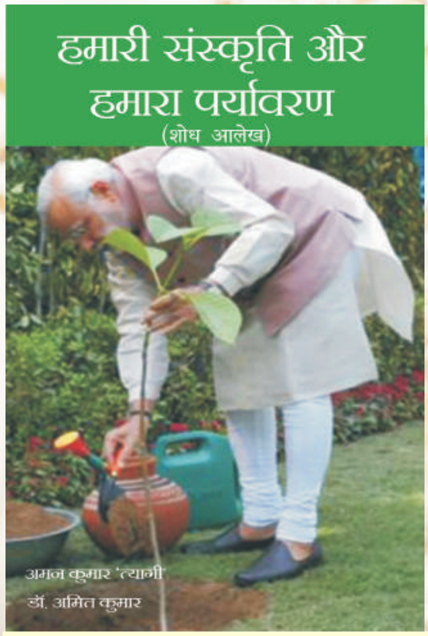

स्थापना 14 फरवरी, 2021 Title-Code-UPHIN49431/RNI-UPHIN/2021/79954/MSME-UDYAM-UP-17-0002703
रजिस्टर्ड 08 जुलाई, 2021

YouTube OPEN DOOR NEWS ओपन डोर Blog-opendoorweekly.blogspot.com

आपकी किताब आपके द्वार...

प्रकाशन **ओपन डोर** नजीबाबाद

समाचारपत्र भी पुस्तकें भी

खुले दिमाग़ के खुले विचार **ओपन डोर** राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

रजि. पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD AC- 368602000000245/ IFSC- IOBA0003686 PAN- AABAO7251R
Email- opendoornbd@gmail.com / Mob.- 9897742814